—: सम्पादक :—
डा० हारून रशीद सिद्दीक़ी
— सहायक —
मु० गुफ़रान नदवी
मु० सरवर फारूक़ी नदवी
मु० हसन अन्सारी
हबीबुल्लाह आज़मी

कार्यालय
मासिक सच्चा राही !
मजलिसे सहाफत व नशरियात
पो० बॉ० नं० 93
टैगोर मार्ग, नदवतुल उलमा, लखनऊ
फोन : 2741235
फैक्स : 2787310
e-mail :
nadwa@sancharnet.in

सहयोग राशि

एक प्रति	रु० 9/—
वार्षिक	रु० 100/—
विशेष वार्षिक	रु० 500/—
विदेशों में (वार्षिक)	25 यूएसं डालर

चेक/ड्राफ्ट पर यह लिखें :
"सच्चा राही"
पता : सेक्रेटरी मजलिसे सहाफ़त
व नशरियात नदवतुल उलमा,
लखनऊ–226007

मुद्रक एवं प्रकाशक अतहर हुसैन द्वारा काकोरी आफसेट प्रेस से मुद्रित एवं दफ़्तर मजलिसे सहाफ़त व नशरियात, टैगोर मार्ग नदवतुल उलमा, लखनऊ से प्रकाशित।

H.I.Computer Institute - 9335214913

हिन्दी मासिक
सच्चा राही
सामाजिक एवं साहित्यिक
लखनऊ

नवम्बर, 2005 वर्ष 4 अंक 9

ग़ैर मुस्लिमों से उपकार

ऐ ईमान वालो! अल्लाह तआ़ला तुम को उन ग़ैर मुस्लिमों के साथ उपकार और न्याय करने से नहीं रोकता जो तुम से दीन के बारे में नहीं लड़े न तुम को तुम्हारे घरों से निकाला। अल्लाह न्यायी को प्रिये रखते हैं।

(पवित्र क़ुर्आन : ६०:८)

अगर इस गोले में लाल निशान है तो आपका वार्षिक चन्दा समाप्त हो चुका है। कृपया अपना वार्षिक चन्दा जल्द भेजिए।

विषय एक नज़र में

• ईद की खुशी	सम्पादकीय	3
• कुर्आन की शिक्षा	मौलाना मु० उवैस नदवी (रह०)	5
• प्यारे नबी की प्यारी बातें	अमतुल्लाह तस्नीम	6
• सीरतुन्नबी (सल्लल्लाहुअलैहि वसल्लम)	अल्लामा शिबली नोमानी	9
• दीने इस्लाम का मिज़ाज	मौ० स० अबुल हसन अली	12
• संक्षिप्त इस्लामी इतिहास	अब्दुस्सलाम किदवई नदवी	15
• ईद मुबारक		18
• जो हैं गुस्ताख़	आसी लखनवी	18
• तिब्बे नबवी	गुफरान नदवी	19
• रसूले अकरम (सल्लल्लाहुअलैहि वसल्लम)	मु० आरिफ़ संभली	21
• ख़बर की तहक़ीक़ करना	अब्दुर्रशीद खैरानी	22
• आम होता है करपशन	मु० हसन अन्सारी	23
• सहाबा क्या हैं ?	हैदर अली नदवी	24
• आरियन सभ्यता	इदारा	25
• नारी स्वतंत्रता	श्यामा रानी	28
• मिर्गी का जिन्न	अबू मर्गूब	29
• जादू टोना	डा० उ० शैख	30
• आपके प्रश्नों के उत्तर	इदारा	32
• इस्लाम के विषय में वार्तालाप	मुअज़्ज़म हुसैन	33
• अन्तर्राष्ट्रीय समाचार	हबीबुल्लाह आज़मी	40

❑❑❑

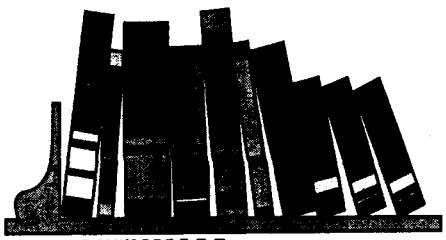

ईद की ख़ुशी

डा० हारून रशीद सिद्दीक़ी

हज़रत अनस (रज़ि) से रिवायत है कि मदीने के लोगों ने साल में दो दिन ख़ुशियां मनाने के लिए मुक़र्रर कर रखे थे जिन में वह ख़ुशियां मनाया करते थे। जब ऑ हज़रत सल्लल्लाहु, अलैहि व सल्लम हिजरत फ़रमाकर मदीना तयि्यबा तशरीफ़ लाए तो पूछा कि यह कैसे दिन हैं लोगों ने जबाव दिया कि हम इस्लाम से पहले से ही इन दोनों दिनों में ख़ुशी मनाया करते थे तो आपने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला ने तुम को इन दो दिनों के बदले में उन से अच्छे दूसरे दो दिन दिये हैं, ईदुल फ़ित्र का दिन और ईदुलअज़्हा का दिन। (बह्रूर्राईक़)।

इस रिवायत से मालूम हुआ कि अल्लाह तआ़ला ने अपने बन्दों को अपने महबूब (प्रिय) और आख़िरी नबी के ज़रीअ़े साल में दो दिन ख़ुशी मनाने के लिए दिये हैं, कोई ऐसी रिवायत नज़र से नहीं गुज़री जिस में इन दो दिनों के अ़लावा कोई दिन या रात ख़ुशी मनाने के लिये दिये जाने का ज़िक्र हो यहां तक कि लैलतुल्क़द्र जो हज़ार महीनों से बेहतर है उस में भी इबादत व दुआ़ की तालीम है ख़ुशी मनाने का ज़िक्र नहीं है बस इन दिनों के अ़लावा जो दिन भी ख़ुशी मनाने के लिये ख़ास करेंगे वह हमारे मुक़र्रर किये हुए होंगे अल्ला के नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के दिये हुए नहीं।

यहां यह बात भी ध्यान चाहती है कि जो ख़ुशी हम अल्लाह और उस के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) व सल्लम की इजाज़त से मनाएंगे वह ख़ुशी मनाना भी इबादत में शुमार होगा और जो ख़ुशी अपने मुक़र्रर किये हुए दिन में मनाएंगे उस पर सवाब की उम्मीद नहीं की जा सकती चाहे वह मुबाह हो।

आज हम ईदुल फ़ित्र की ख़ुशी की बात कर रहे हैं। रमज़ान के रोज़ों के बाद आज दिन में भी इफ़्तार का हुक्म हुआ है। आज अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से हमारी दअ़वत है। हमारे पास जो कुछ है सब अल्लाह ही का तो दिया हुआ है। अल्लाह तआ़ला ने अपने फ़ज़्ल से जो हम को हलाल रोज़ी अ़ता फ़रमाई है उसी से हमारी दावत है। आज रोज़ा नहीं रख सकते, आज रोज़ा रखना हराम है। मस्नून है कि आज कुछ मीठा भी खाएं। हिन्द व पाक में सिवैयों का रिवाज है कोई हरज नहीं, ज़रूरी भी नहीं, मीठे चावल पका लें, मीठी खीर बना लें, मीठी खूजरों का नज़्म कर लें, हस्ब हैसियत, हस्ब पसन्द मीठा तैयार कर लें, ख़ुद खाएं, घर वाले खाएं दूसरे भाइयों को भी खिलाएं।

इस ख़ुशी में अपने पड़ोसी की भी ख़बर लें बल्कि अपने हर उस भाई की ख़बर लें जो आपके नज़दीक तंगी के सबब ईद के रोज़ भी ख़ुशी नहीं मना सकता या पेट भर नहीं खा सकता या अपने मासूम बच्चों की ख़ुशी का सामान नहीं मुहय्या कर सकता। उन को भी ईद की ख़ुशी में शरीक कीजिए बेशक आप ने रमज़ान में अपने माल से उनका हक़ उनके हवाले कर दिया होगा। अब सदक़–ए–फ़ित्र भी उन का हक़ है। इम्कान इसका है कि (अगर आप मालदार हैं तो) आपने आख़िर रमज़ान ही में सदक़–ए–फ़ित्र उन को पहुंचा दिया होगा अगर ऐसा नहीं तो आज ईद की नमाज़ से पहले उन का हक़ उनको चुपके से पहुंचा दीजिए ताकि वह भी आज ईद की ख़ुशी मना

सकें और अगर वुसअ़त हो तो ज़कात व सदक़े ही पर इक्तिफ़ा न कीजिये दिल खोल कर अपने भाइयों की मदद कीजिये सख़ी (दानी) लोगों को तो गरीबों को खर्च देने में भी ख़ुशी हासिल होती है।

हॉ आज ख़ुशी मनाइये लेकिन हक़ीक़ी खुशी तो उसी में है जो अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की बताई हदों के अंदर हो, नाच गाने तो सिर्फ़ बुराईयों पर उभरते है। उनमें ख़ुशी कहॉ, बाजे गाजे भी शोर व शग़ब के साथ बद मस्ती पैदा करके मुआ़शरे में फ़साद पैदा करते हैं। शराब तो उम्मुल, ख़बाइस है ही उस की बुराईयां तो सब ही मानते हैं बस जो कौमें इन ख़ुराफ़ात को ख़ुशी की ज़रीआ़ (साधन) समझती हैं भारी भूल में है। इस्लाम ने तो इन सब को हराम (निषिद्ध) क़रार दिया है। ख़ुशी मनाने का मसनून तरीक़ा ऐसा है कि जिस से जिस्म भी राहत पाता है, दिल व दिमाग भी मसर्रत महसूस करते हैं और रूह भी मसूर होती है।

आप सुब्ह सवेरे उठें, अव्वल वक़्त में जमाअ़त से फ़ज्र अदा करें। फिर ईद के लिए ग़ुस्ल करें, मिस्वाक करें, जो अल्लाह ने दे रखे हो अच्छे–अच्छे जाइज़ कपड़े पहनें। मर्द रेशम पहन कर फ़ख़ चाहे महसूस कर ले कोई सईद रूह उस से फ़रहत नहीं पा सकती लिहाज़ा कपड़े अच्छे पहनये मगर हराम से बचिये, ख़ुशबू, लगाइये, ज़बान को भी हलाल व तयि्यब लज़ीज़ खानों से आशना कीजिये, कुछ मीठा खाइये और खिलाइये, बाहम मुबारक बाद पेश कीजिये, बच्चे, बच्चों से मिलें एक दूसरे को सलाम पेश करें, बच्चे बड़ों को अदब से सलाम पेश करें। बड़े बच्चों को शफ़क़त भरा सलाम का जवाब भी दें और अ़तीयात व बख़्शीश से नवाजें भी बाहम मुबारक बाद पेश करें और अब दोगान–ए–ईद की अदाएगी के लिये ईदगाह चलें रास्तें में कोई गाना नहीं अपने रब की बड़ाई व यक्ताई और हम्द गुनगुनाते हुए जाएं, "अल्लाहु अक्बर, अल्लाहु अक्बर ला इलाह इल्लल्लाहु व अल्लाहु अक्बर वल्लाहु अकबर व लिल्लाहिलहम्द" (अल्लाह बड़ा है, अल्लाह बड़ा है, अल्लाह के सिवा कोई उपास्य नहीं, अल्लाह बड़ा है, अल्लाह बड़ा है और सारी तारीफें उसी के लिये हैं।) ईद के रोज़ यह कलिमात गुनगुनाते हुए ईदगाह जाएं लेकिन ज़ोर की आवाज़ से न कहें। ईदगाह में इमाम दोरकअ़त नमाज़ पढ़ाएगा, यह नमाज़ भी आज हम से अल्लाह की बड़ाई का ख़ास इहतिमाम करवाती है यानी ६ बार अल्लाहु अक्बर ज़ियादा कहलवाती है। नमाज़ के बाद इस ख़ुशी के दिन ख़ुत्बा (भाषण) मस्नून हुआ जिसमें अल्लाह की बड़ाई के बयान के साथ उसके रसूल पर दुरूद व सलाम, सहाब–ए–किराम और तमाम मुसलमानों के लिये दुआ होती है, ईद के रोज़ के मसाइल होते है और सब का निचोड़ तक़्वा (संयम) इख़्तियार करने की तलक़ीन होती है जिसमें यह खुला इशारा मौजूद है कि आप ख़ुशी मनाने में किसी गुनाह को पास न फटकने दें।

नमाज़ के बाद आप वही तक्बीरात गुनगुनाते हुए लौटें, दोस्त अहबाब और अ़ज़ीज व अक़ारिब से मुलाक़ातें करें, एक दूसेर की ज़ियाफ़त करें और नव ज़वान लोग कुछ वरज़िशी खेलों और मुक़ाबलों का एहतिमाम करें। खेलें कूदें, हंसे, मुस्कराएं, अपने वालिदैल और घर व ख़ानदान के लोगों को ख़ुश करें अपने फ़न्नी करतबों से बाहम महज़ूज़ (आनन्तिद) हों मगर रक़्स व सरूद से दूर रहें, दौड़, कूद के मुक़ाबले, कलाबाज़ी, के मुज़ाहरे, तीर अन्दाज़ी, लाठी, बिनवट, एयरगनों से निशाना बाज़ी के प्रोग्रामों से ख़ुशी में इज़ाफ़ा किया जा सकता है। बैतबाज़ी और हम्द व नअ़त की मजालिसों से भी लुत्फ़ लिया जा सकता है। अल्लाह तआ़ला हर भाई को हक़ीक़ी ख़ुशी की निअ़मत से सरफ़राज़ फ़रमाऐं। हमारे बुज़ुर्गों ने तो ज़िन्दा लोगों की ख़ुशी के साथ मुर्दों की ख़ुशी का भी इन्तिज़ाम किया है आप भी बिदआ़त से बचते हुए अगर अपने ख़ान्दान के वफ़ात पाए हुए लोगों को बल्कि जमीअ़ वफ़ात पाए मोमिनों को कुछ पढ़कर और ग़रीबों की मदद कर के ईसाले सवाब करें तो बेहतर रहेगा, मग़्फ़िरत की दुआ भी करें।

क़ुरआन की शिक्षा

मौलाना मुहम्मद उवैस नदवी

शराब, जुआ और पांसा–

ऐ ईमान वालो! शराब, जुआ, बुत (चढ़ावे वाले) और पांसा गन्दे काम हैं शैतान के, सो इनसे बचो। (अलमाइदः २०)

इस आयत में चार चीजों से रोका गया है:–

शराबः इससे इन्सान की अक्ल पर असर पड़ता है, सेहत (स्वास्थ्य) और दौलत बरबाद होती है। शराब से बदमस्त होकर लोग वह काम करते हैं जो वह होश की हालत में कभी न करते, कितने कत्ल और कितनी लड़ाइयां इसी शराब की वजह से होती हैं। दीन और दुन्या के कामों से ग़फलत हो जाती है। हदीस में है कि आपने फ़रमाया कि कोई मोमिन जब शराब पीता है तो उस वक़्त उस का ईमान उस से रूख़्सत हो जाता है। यह भी फ़रमाया कि क़ियामत की निशानियों में से एक निशानी यह है कि शराब पीना बढ़ जाएगा।फ़रमाया खुदा ने शराब पर उसके पीने वाले, पिलाने वाले, बेचने वाले, खरीदने वाले, दूसरों के लिये निचोड़ने वाले यानी शराब बनाने वाले, उसके ले जाने वाले जिस के पास ले जाई जाए सब पर लानत फरमाई।

जुआः– यह भी दौलत की बरबादी दीन व दुन्या की तबाही और बुरे अख़्लाक (आचरण) की निशानी है। जिस प्रकार शराबी दीनदुन्या को भुला बैठता है उसी तरह जुआ खेलने वाला भी अपने नफा नुक़्सान से ग़ाफ़िल हो जाता है। उसकी सारी ज़िन्दगी नाकाम (असफल) व नामुराद हो जाती है। खुदा जाने कितने अच्छे घराने इसी जुए से तबाह हो गये। इस्लाम ने जुआ से रोका है।

पांसाः– यह भी एक किस्म का जुआ है। अरब के लोगों के लिये सबसे बड़ी दौलत ऊंट हैं, इसलिये वह उन्हीं के ज़रीअे जुआ खेलते थे। उसकी शक्ल यह थी कि ऊंटों को ज़ब्ह करते और उनके गोश्त को दस टुकड़ों में कर देते, उन्ही टुकड़ों, पर पांसा डालते थे, पांसे की सूरत यह थी कि दस तीर मुकर्रर कर लेते उन में हर तीर के मुख़्तालिफ़ (विभिन्न) हिस्से मुकर्रर करते और जब जुआ खेलते थे तो उनको एक थैले में डाल कर एक आदमी के हाथ में देते थे। वह उन को गडमडकर के एक तीर को एक–एक आदमी के नाम पर निकालता जाता था। जिन के नाम पर वह तीर निकलते थे जिन के हिस्से मुकर्रर होते वह कामयाब, सफल होते थे और जिन के नाम वह तीर निकलते जिन में हिस्से न होते वह नाकाम (असफल) होते। इस तरह गोश्त के जो टुकड़े जमा होते फकीरों मुहताजों और दोस्तों में तक्सीम कर देते थे। चूंकि यह दिखावे की झूठी सख़ावत, थी इसलिये इस्लाम ने इससे बचने का हुक्म दिया।

चढ़ावे का बुतः– इस्लाम से पहले खुदा के सिवा जिन चीजों की परस्तिश पूजा होती थी उनमें से अन्साब भी है, यह बिन गढ़े पत्थर होते थे जिन को खड़ा करके उन पर चढ़ावे चढ़ाते और जानवर ज़बह करते थे, यह एक मुशरिकाना रस्म थी इसलिये मुसलमानों को इससे अलग रहने का हुक्म हुआ। आसमानों और जमीन पर जो कुछ है सब अल्लाह का है। तुम अपने दिल की बातें चाहे जाहिर करो या छिपाओ अल्लाह उनका हिसाब तुम से लेगा। फिर वह जिसे चाहे माफ कर दे और जिसे चाहे सजा दे। वह हर चीज पर कुदरत रखता है।

रसूल (ﷺ) और सब ईमान वाले उस पर ईमान लाये जो रसूल (ﷺ) पर नाज़िल हुआ उनके रब की तरफ़ से। ईमान लाये अल्लाह पर, उसके फ़िरिश्तों पर उसकी किताबों पर उसके रसूलों पर। और कहते हैं कि हम पैग़म्बरों में फ़र्क़ नही करते हैं। ख़ुदा से कहते हैं कि हमने सुना और क़ुबूल किया और हम तेरी बख़्शिश मांगते हैं और तेरी ही तरफ़ लौट के जाना है। ख़ुदा किसी पर ताक़त से ज़ियादा बोझ नहीं डालता है। हर एक को सवाब भी उसी का मिलेगा जो वह इरादे से करे और उस पर अजाब भी उसी का होगा जो इरादे से करे। ऐ हमारे रब हम पर कोई सख़्त हुक्म न भेजिये जैसा हम से पहले लोगों पर भेजा था, ऐ हमारे रब हम पर कोई ऐसा बोझ न डालिये जिसे हम सहार न सकें और मुआफ़ कर दीजिए और हम को बख़्श दीजिए और हम पर रहम कीजिए आप हमारे काम बनाने वाले हैं, आप हम को मुन्किर लोगों पर ग़ालिब कीजिए।(अल्बक़रः आखिरी रूकूअ़)

प्यारे नबी की प्यारी बातें

अमतुल्लाह तस्नीम

(१/१०) सच्चाई नेकी की रहबर है-

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद से रिवायत है वह रसूलल्लाह (सल्ल०) से रिवायत करते हैं, आपने फरमाया कि सच नेकी की तरफ हिदायत करता है और नेकी जन्नत की तरफ हिदायत करती है। आदमी सच बोलता है, यहां तक अल्लाह तआ़ला अपने पास सच्चों में लिख लेता है, और झूठ गुनाहों पर आमादा करता है और गुनाह दोज़ख की तरफ ले जाते है, आदमी झूठ बोलता है यहां तक कि अल्लाह तआ़ला उसको झूठों और लाग़ियों में लिख लेता है। (बुख़ारी मुस्लिम)।

(२/५१)सच इत्मीनान है-

हज़रत हसन बिन अली (रज़ि०) से रिवायत है कि मुझे रसूलुल्लाह (सल्ल.) का फ़रमाना याद है कि छोड़ दो वह, जो तुमको शक में डाले और उस चीज़ को इख़्तियार करो जिससे तुम्हारे दिल में खटक पैदा न हो। बेशक सच इत्मीनान है और झूठ शक है। (तिर्मिज़ी)

(३/५२) रसूलुल्लाह (सल्ल.) की तअ़लीम-

हज़रत अबू सुफ़्यान (रजि.) से रिवायत है कि वह अपनी लंबी हदीस में हिरक़्ल के किस्से में बयान करते हैं कि हिरक़्ल ने कहा, तुम को किस चीज़ का हुक्म देते हैं, यानी नबी (सल्ल०) अबू सुफ़्यान (रज़ि) कहते हैं मेनें कहा हमको हुक्म देते है कि अल्लाह की अ़िबादत करो और उसके साथ किसी को शरीक न करो और जो तुम्हारे बाप दादा कहते हैं उसको छोड़ दो, और हमको नमाज़ और सच्चाई, सिल–ए–रहिमी सदका, और पाक दामिनी का हुक्म देते हैं। (बुख़ारी मुस्लिम)

(४/५३) सच्चे दिल से दुआ़ मक़बूल होती है-

हज़रत सुहैल (रजि.) बिन हनीफ (रजि.) से रिवायत है (वह बदरी थे) कि नबी (सल्ल.) ने फ़रमाया, जो अल्लाह तआ़ला से शहादत का सच्चाई के साथ सवाल करेगा तो अल्लाह तआ़ला उसको शहीदों के मरतबे में पहुंचायेगा, अगरचे वह अपने बिस्तर पर मरे। (मुस्लिम)

(५/५४) थोड़ा सा झूठ सारे सच को ग़ैर मक़बूल बना देता है-

हज़रत अबू हुरैरा (रजि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल.) ने फरमाया कि किसी नबी ने एक गज़वा किया, उन पर अल्लाह का दुरूद और सलामती हो। उन्होंने कहा मेरे साथ ऐसा आदमी न हो कि जिसने शादी की हो, और ऐसा न हो जिसने घर बनाया हो और उसकी छतों को अभी न उठाया हो और न ऐसा आदमी हो जिसने बकरियॉ या ऊटनियॉ खरीदी हो और उनके बच्चों का इन्तिज़ार हो'–। फिर उन्होंने कूच किया, अ़स्र के वक़्त या उसे पहले एक बस्ती के क़रीब हुए। सूरज से कहा, तू भी अपने काम पर लगा हुआ है और हम भी लगे हुए है।। फिर कहा ऐ अल्लाह! इसको ठहरा दे बस वह ठहर गया। यहां तक अल्लाह ने उनको फ़तह दी, उन्होंने ग़नीमत जमा की। आग आई, कि उसको खाए और न खाया। उन्होंने कहा कि तुम में चोरी है, हर क़बीले का एक आदमी हमसे बैअ़त करे जब बैअ़त की तो एक आदमी का हाथ उनके हाथ पर चिपक गया। फिर कहा तुममे चोरी है तुम्हारा क़बीला मुझसे बैअ़त करें तो दो या तीन के हाथ उनके हाथ पर चिपक गये। फ़िर कहा तुम में चोरी है तो एक सोने का सर गाय के सर की तरह लाये और उसको रखा, फिर आग आई और उसको खा लिया और ग़नीमत हमसे पहले किसी को जायज न थी। अल्लाह ने जब हमारी कमज़ोरी और जोफ़ को देखा तो हमारे लिए जायज़ कर दिया। (बुख़ारी)

(६/५५) झूठ से तिजारत की बरकत जाती रहती है-

हज़रत अबू ख़ालिद बिन हकीम बिन हिजाम से रिवायात है कि रसूलुल्लाह (सल्ल.) ने फ़रमाया, खरीद व फ़रोख़्त करने वालों को इख़्तियार है। जब तक अलग न हो– अगर वह सच बोलें तो उनकी सौदागारी में बरकत दी जायेगी और अगर झूठ बोले तो उनकी सौदागारी की बरकत मिटा दी जायेगी।

नमाज़ इस ध्यान के साथ पढ़ो कि हम खुदा को देख रहे हैं, अगर हम उसको नहीं देख सकते तो वह हम को देख रहा है।

हजरत उमर (रज़ि०) रिवायत है कि एक रोज़ हम रसुलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के पास बैठे हुए थे, एक आदमी बहुत सफेद कपड़े वाला और बहुत काले बाल वाला आया उस पर सफ़र का निशान न था, हम लोग उसको नहीं पहचानते थे वह नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के पास बैठ गया। अपने घुटने आप के घुटने से मिला दिये और अपनी हथेली आपकी ज़ानों पर रख दी और कहा या मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) मुझको इस्लाम के बारे में खबर दीजिए। आपने फ़रमाया इस्लाम यह है कि कहो–अल्लाह के सिवा कोई उपास्य नहीं और मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) अल्लाह के रसूल हैं, नमाज, पढ़ो ज़कात दो और रमज़ान के रोज़े रखो, और इस्तिाअत हो तो हज करो। उस ने कहा आप ने सच फ़रमाया, हज़रत उमर (रजि०) कहते है कि हम लोगों को हैरत हुई कि पूछता भी हे और तस्दीक़ भी करता है फिर कहा ईमान के बारे में खबर दीजिए, आप ने फ़रमाया अल्लाह पर ईमान लाओ और उसके फ़रिश्तों पर, उसकी किताबों पर उसके पैग़म्बरों और आख़िरत के दिन पर और अच्छी बुरी तक़दीर पर। कहा आप ने सच कहा, अब इहसान के बारे में बताये। फ़रमाया अल्लाह तआला की अिबादत इस तरह करो गोया तुम उसको देख रहे हो। अगर तुम उसको नहीं देखते हो तो वह तुमको देखता है। कहा कियामत के बारे में मुझको खबर दीजिए। फ़रमाया जिससे पूछा जा रहा है वह सुवाल करने वाले से ज़्यादा नहीं जानता। कहा अच्छा उसकी निशानियाँ क्या हैं, फ़रमाया लौंडी अपनी मालिका को पैदा करें–' और नंगे पावँ फिरने वाले, नंगे बदन मोहताज लोग बकरी चराने वाले एक दूसरे से बढ़–बढ़ कर महल बनायें। फिर वह चले गये, बाद में आपने फ़रमाया ऐ उमर (रजि०) तुम जानते हो यह सुवाल करने वाला कौन था। मैंने कहा अल्लाह और उसके रसूल ज्यादा जानते हैं। आपने फ़रमाया वह जिब्रईल थे तुम्हारे पास आये थे, ताकि मुमको तुम्हारा दीन सिखायें।

(२/५७) अल्लाह का ख़ौफ़-

हज़रत अबू ज़र (रजि०) और हज़रत मआज (रजि०) बिन जबल से रिचायत है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फ़रमाया कि जहां भी तुम हो अल्लाह से डरो और बुराई के बाद नेकी करो, वह इस बुराई को मिटा देगी और लोगों के साथ अच्छे अख़्लाक़ के साथ पेश आओ।

(३/५८) अल्लाह की याद उसी से सवाल उसी से मदद चाहना– हज़रत इब्ने अब्बास (रजि०) से रिवायत है कि एक रोज़ मैं नबी करीम (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के पीछे था, आपने फ़रमाया ऐ लड़के मैं तुझको चन्द बातें सिखा दूं। अल्लाह के हुक़्मों की इताअ़त करो, वह तेरी हिफ़ाजत करेगा। अल्लाह को याद करो तो उसको अपने सामने पाओगे और जब सवाल करना तो अल्लाह ही से सुवाल करना, मदद चाहना तो उसी से चाहना, और जान ले कि अगर सारी दुनिया इस बात पर इत्तेफ़ाक़ करे कितुझको नफ़ा पहुंचाये तो तुमको नफ़ा नहीं पहुँचा सकती, मगर वही जो तुम्हारे लिये अल्लाह ने लिख दिया, अगर सारी दुनिया इस बात पर इत्तिफ़ाक करे कि तुझको नुक़सान पहुँचाये तो नहीं पहुंचा सकती, मगर वही जो अल्लाह ने तेरे लिये लिख दिया है। क़लम उठा लिये गये और सहीफ़े खुश्क कर दिये गये। और एक रिवायत में है कि अल्लाह का ध्यान रखो तुम उसको अपने सामने पाओगे और आराम के ज़माने में अल्लाह से तअ़ल्लुक़ पैदा कर लो मुसीबत के वक़्त काम आयेगा और याद रखो, जो तुम से चूक गया वह तुम्हें पहुंचने वाला ही न था, और जो पहुंचा वह ख़ता ही नहीं हो सकता था– याद रखो कि सब्र के साथ मदद है मुसीबत के साथ आराम है और मुश्किल के साथ आसानी है।

(४/५९) बाज़ आमाल को मामूली समझना- हज़रत अनस (रजि.) से रिवायचत है कि तुम अमल करते हो वह तुम्हारी निगाह में बाल से ज़्यादा हकीक़त नहीं रखते, और हम उन को रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के अहद में हलाक कर देने वाले आमाल में शुमार करते थे।

(५/६०) हज़रत अबू हुरैरा (रजि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फ़रमाया, अल्लाह तआ़ला को ग़ैरत आती है और अल्लाह तआ़ला की ग़ैरत यह है कि इन्सान वह अमल करे, जो अल्लाह ने उस परहराम कर दिया था।

(६/६१) अपनी पिछली हालत को याद रखना- हज़रत अबू हुरैरा (रजि०) से रिचायत है कि मैंने नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) से सुना है कि बनी इस्राईल के ज़माने में तीन

आदमी थे। एक कोढ़ी, दूसरा गन्जा, तीसरा अन्धा। अल्लाह तआ़ला ने उनकी आज़माईश का इरादा किया। उनके पास एक फ़रिश्ता भेजा पहले सफेद दाग वाले के पास आया और कहा तुझे कौन सी चीज़ महबूब है, उसने कहा अच्छा रंग और अच्छी जिल्द और मुझसे यह बीमारी दूर हो जाये, जिसकी वजह से लोग नफ़रत करते हैं। फ़रिश्ते ने उसके बदन पर हाथ मारा तो अच्छी जिल्द और अच्छा रंग नसीब हुआ कहा कौन सा माल तुझे पसन्द है कहा ऊँट या गाय (रावी को शक है) फ़रिश्ते ने एक गाभिन ऊंटनी दी और बरकत की दुआ की। फिर गन्जे के पास आया और कहा तू क्या चाहता है, मैं चाहता हूँ मेरा गंजा दूर हो जाये जिसके सबब से लोग मुझसे नफ़रत करते हैं और अच्छे बाल की ख़्वाहिश है। फ़रिश्ते ने इसके सर पर हाथ मारा तो इसका गंजा दूर हो गया और अच्छे बाल निकल आये, कहा कौन सा माल तुझे मरगूब है कहा गाय। बस एक गाभिन गाय इसको दी और बरकत की दुआ की। फिर अन्धे के पास आया और कहा तेरी क्या ख़्वाहिश है कहा मैं यह चाहता हूं कि अल्लाह तआ़ला मेरी बीनाई वापस कर दे, उस ने ऑखों पर हाथ फेरा तो उसकी बसारत पलट आयी, कहा तुम को कौन सा माल पसंद है कहा बकरी, बस उसको एक गाभिन बकरी दी। कुछ अर्से बाद उन तीनों के जानवरों से मैदान भर गये। कुछ दिन के बाद फ़रिश्ता उसी सूरत में कोढ़ी के पास आया, और कहा मैं गरीब आदमी हूं मेरी राह खोटी हुई है, मैं आज के दिन नहीं पहुंच सकता, तुझे अल्लाह का वास्ता देकर सवाल करता हूं जिसने तुझको अच्छी जिल्द और अच्छी खाल अ़िनायत की। मुझको रास्ते का खर्च दे, ताकि मैं पहुंच जाऊँ सफेद दाग वाले ने कहा मुझ पर बहुत हुकूक़ हैं फ़रिश्ता बोला लगभग मैं तुझको पहचानता हूँ तू फ़क़ीर था और कोढ़ी भी, लोग तुझसे नफ़रत करते थे अल्लाह तआ़ला ने तुझ पर इहसान किया। कहा यह दौलत मेरे घर में बाप दादाओं से चली आती है। फरिश्ते ने कहा अगर तू झूठा है तो खुदा तुझको वैसा ही कर दे। फिर गन्जे के पास आया और वैसा ही सवाल किया जैसा कोढ़ी से किया था गन्जे ने भी वही जवाब दिया । फ़रिश्ते ने कहा अगर तू झूठा है तो खुदा तुझ को वैसा ही कर दे। फिर अन्धे के पास आया और कहा मैं गरीब आदमी हूं। अपने वतन नहीं पहुंच सकता, तुझको अल्लाह का वास्ता देता हूं जिसने तुझको बसारत अ़ता फ़रमायी, मुझको रास्ते का खर्च दे, ताकि मैं पहुंच जाऊँ इसने कहा बेशक मैं अन्धा था अल्लाह तआ़ला ने मरी ऑखों को रौशन किया तेरा जितना जी चाहे ले लें और जितना जी चाहे छोड़ दे। खुदा की क़सम मैं आज के दिन तुझसे न झगडूंगा, जिस चीज़ को तू खुदा के नाम पर ले लेगा। फरिश्ते ने कहा तेरा माल तुझे मुबारक हो, अल्लाह ने महज़ आज़माईश की थी, बस अल्लाह तुझ से राज़ी हुआ और तेरे उन दोनों साथियों से नाराज़ हुआ। (बुख़ारी, मुस्लिम)

(७/६२) नफ़्स कहा हिसाब- हज़रत शद्दाद बिन औस से रिवायत है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फ़रमाया अक़्लमंद वह है जो अपने नफ़्स का जायज़ा लें और आख़िरत के लिए अ़मल करे, पीछे रह जाने वाला वह है जो अपने नफ़्स को ख़्वाहिश के पीछे डाल दे ओर अल्लाह से बड़ी–बड़ी उम्मीदें लगाये बैठा रहे। (तिर्मिज़ी)

(८/६३) बकवास बात से एहतेराज़- हज़रत अबू हुरैर (रजि०) से रिवायत है कि रसुलूल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फ़रमाया, आदमी के इस्लाम की एक बड़ी खुबी यह है कि उस चीज़ को छोड़ दें जो उसके मतलब की न हो–

क़ुर्आने मजीद में आया है कि "जो ईमान लाये वह अल्लाह की महब्बत सब से ज़ियादा रखते हैं।" (२:१६५) एक दूसरी जगह अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को हुक्म हुआ कि "कह दीजिए अगर तुम अल्लाह से महब्बत रखते हो तो मेरी पैरवी करो अल्लाह के महबूब (प्रिय) हो जाओगे। (३:३१) अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फ़रमाया कि उस वक़्त तक तुम में से कोई मोमिन नहीं हो सकता जब तक कि मैं उसके माल, उसकी औलाद, उसके मां बाप बल्कि दुन्या के सभी लोगों यहां तक कि उसकी जान से भी ज़ियादा अ़ज़ीज़ (प्रिय) न हो जाऊं। (यह कई हदीसों का सारांश है जो बुख़ारी, मुस्लिम, मुसन्नफ़ अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ में अंकित हैं) एक और हदीस में हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फ़रमाया जिसने मेरे तरीक़े से मुंह मोड़ा वह मेरा उम्मती नहीं है। पस चाहिए कि हर उम्मती अच्छे ढंग से यह तीन बातें फैलाये कि हर मुसलमान में : (१) अल्लाह की महब्बत सबसे ज़ियादा हो। (२) अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की महब्बत दुन्या की हर चीज़ से ज़ियादा, यहां तक कि अपनी जान से भी ज़ियादा हो। और (३) सुन्नत की पैरवी, अ़क़ाइद, इबादत, मुआ़मलात, मुआ़शरत (रहन सहन) सब कुछ अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के तरीक़े पर हो।

सीरतुन्नबी

सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम

अल्लामा शिबली नोमानी

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अख़लाक़

तवाज़ो (विनम्रता, ख़ाकसारी)

घर का काम खुद, करते, कपड़ों में पेवन्द लगाते, घर में खुद झाड़ू देते, दूध दुहलेते, बाज़ार से सौदा लाते, जूती फटजाती तो खुद गॉठ लेते, गधे की सवारी से आप को शर्म न थी। गुलामों और मिस्कीनों के साथ बैठने और उनके साथ खाना खाने से परहेज न था एक दफ़ा घर से बाहर तशरीफ़ लाये, लोग ताज़ीम (सम्मान) को उठ खड़े हुए, फ़रमाया कि ग़ैर अरब की तरह ताज़ीम को न उठो (अबूदाऊद)

ग़रीब से ग़रीब बीमार होता तो इयादत (बीमार को देखने जाना) को तशरीफ़ ले जाते। ग़रीबी और फ़कीरी के यहां जाकर उनके साथ बैठते तो इस तरह बैठते कि इम्तियाज़ी हैसीयत न होने से कोई आप को पहचान न सकता। किसी मजमा में जाते तो जहां जगह मिल जाती बैठ जाते। एक दफ़ा एक आदमी मिलने आया, लेकिन नुबूवत का रोब इस क़दर तारी हुआ कि कॉपने लगा। आपने फरमाया, धबराओ नहीं, मैं बादशाह नहीं, एक क़ुरैशी औरत का बेटा हूं जो सूखा गोश्त पका कर खाया करती थी। तवाज़ो और ख़ाकसारी की राह से आप उकड़ूँ बैठ कर खाना खाते थे और फ़रमाया करते थे, मैं बन्दा और बन्दों की तरह बैठता हूं। एक दफ़ा खाने के मौक़े पर जगह तंग थी और लोग ज़्यादा आ गये। आप उकड़ूँ बैठ गये, एक बद्दू भी मजलिस में शरीक था उसने कहा, मुहम्मद यह कैसा बैठना है? आपने फरमाया अल्लाह ने मुझे ख़ाकसार बन्दा बनाया है, जब्बार और सरकश नहीं बनाया है। तवाज़ो की चरमसीमा यह है कि आप सल्ल० अपने बारे में ज़ायज़ ताज़ीमी अल्फ़ाज भी नहीं पसन्द फरमाते थे। एक बार एक व्यक्ति ने इन अल्फ़ाज़ से आपको खिताब किया ऐ हमारे आक़ा और हमारे आक़ा के बेटे? और ऐ हममें सबसे बेहतर और हममें सबसे बेहतर के बेटे? आपने फ़रमाया, लोगो परहेज़गारी इख़्तियार करो, शैतान तुम्हें गिरा न दे। मैं अब्दुल्लाह का बेटा मुहम्मद हूं, खुदा का बन्दा और उसका रसूल। मुझको खुदा ने जो मर्तबः बख्शा, मैं पसन्द नहीं करता कि तुम मुझे उससे ज्यादा बढ़ाओ (मुसनद इब्नेहॅबल)। एक दफ़ा एक व्यक्ति ने आपको या ख़ैरूल बैत (यानी ऐ बेहतरीन खुल्क) कहकर सम्बोधित किया। आपने फ़रमाया, वह इब्रहीम थे। (सही बुख़ारी)। अब्दुल्लाह बिन सख़ीर का बयान है कि बनी आमिर की सिफ़ारत के साथ जब हम लोग आपकी सेवा में आये तो अर्ज़ की कि हुजूर? हमारे आक़ा (सय्यिद) हैं। इरशाद फ़रमाया कि आक़ा खुदा है फिर हम लोगों ने अर्ज़ की कि आप हममें सबसे अफ़ज़ल और सबसे बरतर हैं। इरशाद हुआ कि बात कहों तो देख लो कि शैतान तो तुम को नहीं चला रहा है। (अबूदाऊद)।

मदीना मुनव्वरः में एक औरत थी जिसके दिमाग़ में कुछ फ़ुतूर था। आपकी सेवा में आई और कहा कि मुहम्मद मुझको तुमसे कुछ काम है। फ़रमाया जहां कहो चल सकता हूं। वह आपको एक गली में ले गयी, और आप को जिस काम के लिए भेजा आप कर लाये (अबूदाऊद)। मख़ज़मा एक सहाबी थे। एक दफ़ा उन्होंने अपने बेटे मसूर से कहा कि आप सल्ल० के पास कहीं से चादरें आयी है और वह बांट रहे हैं। आओ हम भी चलें आये तो आप ज़नाना में तशरीफ़ ला चुके थे। कहा आवाज़ दो। उन्होंने कहा, मेरा यह रूतबः है कि मैं ऑहज़रत सल्ल० को आवाज दूँ? मख़ज़मा ने कहा बेटे! मुहम्मद जब्बार नहीं हैं। उनके हिम्मत दिलाने से मसूर ने आवाज दी। ऑहज़रत सल्ल० फ़ौरन निकल आये और उनको दीबा की क़बा (चोग़ा) इनायत की जिसकी घुंडियॉ सोने की थी। एक दफ़ा एक अन्सारी ने एक यहूदी को यह कहते सुना की उस खुदा की क़सम जिसने मूसा को तमाम इन्सानों पर फ़ज़ीलत दी, यह समझे कि ऑहज़रत सल्ल० पर तारीज़ है। गुस्से में आकर उस के मुंह पर थप्पड़ खींच मारा। वह आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के पास फ़रियादी आया आपने अन्सारी को बुला भेजा और घटना की जांच के बाद फ़रमाया कि मुझको अंबिया पर फ़जीलत ने दो। (बुखारी)।

इन्सान के गुरूर व घमंड का

असल मौक़ा वह होता है जब वह अपने बायें–दायें हज़ारों आदमियों को चलते हुए देखता है जो उसके इशारे पर अपनी जान तक क़ुर्बान कर देने को तैयार हो जाते हैं, ख़ासकर जब वह फ़ातेहाना एक ज़रार व पुरजोश लशकर के साथ शहर में दाख़िल होता है। लेकिन ऑहज़रत सल्ल० की तवाज़ो व ख़ाकसारी ऐसे मौक़े पर और उजागर हो जाती है। मक्का विजय के अवसर पर जब आप शहर में दाख़िल होते हैं तो विनम्रता में सरे मुबारक को इस क़दर झुका दिया कि कजावा से आकर मिल गया। (शरह शिफ़ा क़ाजी अयाज़)। ग़जव–ए–ख़ैबर में जब आप का दाख़िला हुआ तो आप एक गधे पर सवार थे, जिसमें लगाम की जगह खजूर की छाल बंधी थी (मिशकात) हज्जतुलविदा में जिस कजावा पर आप सवार थे, सुन चुके हो कि उसकी कीमत क्या थी।

ताज़ीम और ज़्यादा तारीफ़ से रोकते थे:-

इस नुकतः का बड़ा लिहाज फ़रमाते थे हज़रत ईसा अ. की मिसाल पेश नज़र थी। फ़रमाया करते थे कि मेरी इतनी ज्यादा बढ़ा चढ़ा कर तारीफ़ न किया करो जिस क़दर नसारा मरिमय के बेटे की करते हैं। मैं तो खुदा का बन्दा और उसका भेजा हुआ हूं। क़ैस बिन सअद कहते हैं कि एक दफ़ा मैं हीरा गया वहां लोगों को देखा कि रईसे शहर के दरबार में जाते हैं तो उसके सामने सज्दः करते हैं। ऑहज़रत सल्ल० की ख़िदमत घटना बयान की और अर्ज़ की कि आपको सज्दः किया जाये कि आप इसके ज्यादा मुस्तहक़ हैं। आपने फ़रमाया कि तुम मेरी क़ब्र पर गुज़रोगे तो सज्दा करोगे? कहा, नहीं। तो फ़रमाया जीतेजी भी सज्दा नहीं करना चाहिए। (बुख़ारी)।

मअज़ बिन उज़रा की बेटी की जब शादी हुई तो आप उनके घर तशरीफ़ ले गये और दुल्हन के लिए जो फ़र्श बिछाया गया था उस पर बैठ गये। घर की लड़कियॉ आस पास जमा हो गई और दफ़ बजा बजा कर गाने लगीं, जब यह मिस्रः गायाः अनुवादः हममें एक पैग़म्बर है जो कल की बातें जानता है फ़रमाया, यह छोड़ दो और वही कहो जो पहले कह रही थीं (मुस्लिम)।

ऑहज़रत सल्ल० के बेटे हज़रत इब्राहीम ने जिस रोज़ इन्तेक़ाल किया, इत्तेफ़ाक से उस रोज सूरज ग्रहण लगा। लोगों के ख़्याल में एक पैग़म्बर की ज़ाहिरी अज़मत का फ़र्ज़ी तख़ैय्युल यह था कि इस दर्द व सदमः से कम से कम आकाश मण्डल में क्रान्ति पैदा हो जायेगी। लोग इस सयोग को इस घटना से जोड़ बैठे। एक जाह पसन्द इन्सान के लिए इस प्रकर संयोग बेहतरनी मौक़ा हो सकता था। लेकिन नबूवत की शान इस की कई गुना ऊंची है। ऑहज़रत ने उसी समय लोगों को मस्जिद में जमा किया और सम्बोधन किया कि चांद और सूरज में ग्रहण लगना प्राकृतिक घटना है, किसी की ज़िन्दगी और मौत से इन में ग्रहण नहीं लगता। (बुख़ारी)। एक दफ़ा आप सल्ल० वज़ू कर रहे थे, वज़ू का पानी जो हाथ से गिरता, फ़िदायी बरकत के ख्याल से उसको चुल्लू में लेकर बदन में मल लेते। आपने पूछा कि तुम यह क्यों कर रहे हो ? उन्होंने अर्ज़ किया कि खुदा और खुदा के रसूल की मुहब्बत में। फ़रमाया, अगर कोई इस बात की खुशी हासिल करना चाहे कि वह खुदा और खुदा के रसूल से महब्बत रखता है तो उसको चाहिए कि जब बातें करे सच बोले, जब अमीन बनाया जाये अमानत अदा करे और किसी का पड़ोसी है तो पड़ोसी को अच्छी तरह निबाहे।

एक सहाबी आपकी सेवा में उपस्थित हुए। बातचीत के दौरान उन्होंने कहा, जो खुदा चाहे और जो आप चाहें। इरशाद हुआ तुमने खुदा का शरीक व हमसर ठहराया, कहो कि जो खुदा तनहा चाहे। (बुख़ारी)।

शर्म व हयाः– सिहाह में है कि आप दोशीज़ः लड़कियों से भी ज़्यादा शर्मीलें थे और शर्म व हया का असर आपकी एक–एक अदा से ज़ाहिर होता था। कभी किसी के साथ बद्ज़बानी नहीं की। बाज़ारों में जाते तो चुपचाप गुज़र जाते। तबस्सुम के सिवा कभी क़हक़हा लगाकर न हॅसते। भरी महफिल में कोई बात नागरवार होती तो लेहाज़ की वजह से ज़बान से कुछ न फ़रमाते। चेहरा के असर से ज़ाहिर होता और सहाबः सावधान हो जाते। अरब में अन्य देशों की तरह शर्म व हया का बहुत कम लेहाज़ था। नंगे नहाना आम बात थी हरम काबा का तवाफ़ नंगे होकर करतते थे। आप सल्ल० को स्वभाव से यह बातें बहुत नापसन्द थीं। एक दफ़ा फ़रमाया कि हम्माम से परहेज़ करो। लोगों ने अर्ज़ की कि हम्माम में नहाने से मैल कुचैल दूर होता है और बीमारी से फाइदा होता है। फरमाया : नहाओं तो पर्दा कर लिया करो। अरब में हम्माम न थे लेकिन शाम व ईराक़ के जो शहर अरब की सरहद से मिले हुए थे वहां कसरत से हम्माम (स्नानघर) थे। इस बिना पर

आपने फ़रमाया कि जब अज़म (ग़ैरअरब) फ़तेह करोगे तो वहां हम्माम मिलेंगे, उनमें जाना तो चादर के साथ जाना।

एक दफ़ा कुछ औरतें हज़रत उम्मे सलमा रजि० के पास आई उन्होंने वतन पूछा। बोली हमस (शाम का एक शहर) हज़रत उम्मे सलमा ने कहा तुम ही वह औरतें हो जो हम्माम में नहाती हैं? बोलीं क्या हमाम कोई बुरी चीज़ हैं? फ़रमाया कि मैंनें ऑहज़रत (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) से सुना है कि जो औरत अपने घर के सिवा किसी घर में कपड़े उतारती है, ख़ुदा उसकी पर्दादरी करता है। अबूदाऊद में है कि ऑहज़रत (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने हमाम में नहाने को एकदम मना कर दिया था। फिर मर्दो को पर्दो की क़ैद के साथ इजाज़त दी लेकिन औरतों के लिए वही हुक्म रहा। अरब में शौचालय न थे। लोग मैदान जाया करते थे लेकिन पर्दा नहीं करते थे बल्कि आमने सामने बैठ जाया करते थे और हर क़िस्म की बातचीत करते। आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने इसको सख़्त मना फ़रमाया और फरमाया कि खुदा इससे नाराज़ होता है। (अबूदाऊद)। मालूम था कि शौच के लिए इतनी दूर निकल जाते कि ऑखों से ओझल हो जाते। मक्का में जब तक रहे हरम की सीमा से बाहर चले जाते, जिसका फ़ासिला मक्का से कम से कम तीन मील था (शरहक़ाज़ी अयाज़)।

अपने हाथ से काम करना:-

यद्यपि तमाम सहाबः आप परजान निछावर करते थे, तथापि आप स्वयं अपने हाथ से काम करने को पसन्द करते थे। हज़रत आयशा, अबू सर्दइ द ख़ुदरी और इमाम हसन रजि० बयान करते है कि आप अपने काम खुद अपने हाथ से करते थे एक व्यक्ति ने हज़रत आयशा से पूछा कि अप घर में क्या–क्या करते थे जवाब दिया कि घर के काम काज में लगे रहते थे। कपड़ों में अपने हाथ से खुद पेवन्द लगाते थे। घर में ख़ुद झाड़ू दे लेते थे। दूध दूह लेते थे, बाज़ार से सौदा ख़रीद लाते थे। जूती फट जाती तो खुद गॉठ लेते थे, डोल में टांके लगा देते थे, ऊँट को अपने हाथ से बांध देते थे, उसको चारा देते। गुलाम के साथ मिलकर ऑटा गूंधते। हज़रत अनस एक बार सेवा में उपस्थित हुए तो देखा आप खुद अपने हाथ से एक ऊँट के बदन पर तेल मल रहे थे उनका दूसरी जगह बयान है कि उन्होंने देखा कि आप सदकः के ऊँटों को दाग रहे हैं तीसरी जगह बयान है कि आप बकरियों को दाग़ रहे थे। एक दफ़ा मस्जिदे नबवी में तशरीफ़ ले गये, देखा तो मस्जिद में किसी ने नाक साफ़ की है, आपने स्वयं हाथ में एक कॅकर लेकर उसको खुरच डाला, और लोगों से कहा आइन्दः ऐसा न करें। आप जब बच्चे थे और काबा का निर्माण कार्य हो रहा था तो उस समय पत्थर उठा–उठा कर राजगीरों के पास लाते थे। मस्जिदे कुबा और मस्जिदे नबवी के निर्माण और खन्दक खोदने में जिस तरह आम मज़दूरों के साथ मिलकर आपने काम किया, स्वयं अपने खोदी उसका विस्तृत वर्णन खण्ड एक में आ चुका है। एक सफ़र में काम बॉट लिए। आपने फ़रमाया, जंगल से लकड़ी मैं लाऊंगा। साहबः हिचकितचाये तो फ़रमाया मैं भेदभाव पसंद नहीं करता एक और सफ़र में आपकी जूती का तस्मः टूट गया आपने स्वयं उसको दुरूस्त करना चाहा। एक सहाबी ने अर्ज़ किया कि मैं टांक दूं। फरमाया : यह बड़प्पन मुझे पसन्द नहीं। दो सहाबी बयान करते है कि एक दफ़ा हम लोग सेवा में उपस्थित हुए तो देखा कि आप स्वयं अपने हाथ से मकान की मरम्मत कर रहे हैं। हम लोग भी इस काम में शरीक हो गये। जब काम ख़त्म हो गया तो आपने हमारे लिए ख़ैर की दुआ फरमायी।

दूसरों का काम कर देना:-

ख़ब्बाब बिन अरत एक साहाबी थे एक दफ़ा आप सल्ल० ने उनको किसी लड़ाई में भेजा। ख़ब्बाब के घर में कोई मर्द न था और औरतों को दूध दुहना नहीं आता था। इस बिना पर आप हर रोज उनके घर जाते और दूध दुह दिया करते। हब्श से जो मेहमान आते थे सहाबः ने चाहा कि वह उनकी सेवा करें लेकिन आपने उनको रोक दिया और फ़रमाया कि इन्होंने मेरे मित्रों की सेवा की है इसलिए मैं स्वयं इनकी सेवा करूंगा। कुफ़्फ़ारे सक़ीफ़ जिन्होंने ताइफ में आपके पैरों को ज़ख्मी कर दिया था। सन नौ हिज्री मे शिब्द मण्डल लेकर आये तो आपने उनको मस्जिदे नबवी में उतारा और उनकी मेहमानदारी की।

मदीना की सेविकायें आपकी सेवा में आतीं और कहतीं कि ऐ अल्लाह के रसूल। मेरा यह काम है। आप फौरन उठ खड़े होते और उनका काम कर देते।

मदीना में एक पागल लौंडी थी वह एक दिन हाज़िर हुई और आपका हाथ पकड़ लिया आपने फ़रमाया ऐ औरत

(शेष पृष्ठ २० पर)

दीने इस्लाम का मिज़ाज और उसकी खास-खास बातें

मौ० स० अबुलहसन अली हसनी

इस दुन्या में हर जिन्दा शय का एक ख़ास मिज़ाज और उसकी कुछ ख़ास बातें होती है जो उसकी "शख़सियत" को बनाने में अहम रोल अदा करती हैं। इसमें इंसान, उनके गिरोह, मिल्लतें और क़ौमें मज़हब व फ़ल्सफ़ा सब एकसाँ तौर से शरीक हैं। यह बस अपनी कुछ ख़ास पहचान व अलामतें रखते है। इसलिए दीन इस्लाम की तालीमात को पढ़ने और समझने से पहले यह बात जरूरी है कि हम उसके मिज़ाज और उसकी बुनियादी ख़ास–ख़ास बातों की जानकारी करें और तभी हम उससे पूरा–पूरा फ़ायदा उठा सकते हैं। सबसे पहले हमें यह जान लेना चाहिए कि दीने इस्लाम हम तक हकीमों, दानिशवरों, माहिरीने कानून, उलमा–ए–अख़लाक़, सल्तनतों के बानी, ख्याली घोड़े दौड़ाने वाले फ़ल्सफ़ी, और सियासी रहनुमाओं के जरिये नहीं पहुंचा। यह दीन हम तक उन नबियों के जरिये पहुंचा है जिनके पास अल्लाह तआला की "वह्‌य" आती थी और जिनका सिलसिला अल्लाह के आख़री नबी मोहम्मद सल्ललाहु अलैहि व सल्लम पर ख़त्म हो चुका है। हज्जतुलविदा के मौक़े पर अरफ़ात के दिन यह आयत नाज़िल हुई थी:–

"आज हमने तुम्हारे लिए दिन कामिल कर दिया, और अपनी नेमत तुम पर पूरी कर दी, और तुम्हारे लिए इस्लाम को दीन पसन्द किया।" (सूरः मायदा–३)

और जिनके बारे में कुर्आन का इरशाद है :–

और न ख़ाहिशे नफ़्स के मुंह से बात निकालते हैं यह (कुरआन) तो हुक्मे ख़ुदा है जो (उनकी तरफ) भेजा जाता है" (सूरः नज्म–३–४)

इस्लाम की सबसे पहली ख़ास बात "अक़ीदा" पर जोर और उसे मज़बूत करने की ताकीद है। हज़रत आदम **अलै० से लेकर आख़री नबी मोहम्मद सल्लल्लाहु** अलैहि **व सल्लम तक** सभी **नबी एक तैशुदा अक़ीदा की दावत देते रहे और उसके मुकाबले में किसी तरह के समझौते पर तैयार न हुए।** उनके नज़दीक बेहतर से बेहतर इख़लाकी ज़िन्दगी नेकी व सलामत रवी, किसी बेहतर हुकूमत का क़याम, किसी अच्छे समाज का वजूद! और किसी इनक़लाव का जहूर उस वक्त तक कोइ क़दर व क़ीमत नहीं रखता जब तक वह इस अक़ीदा का मानने वाला न हो जिसको वह लेकर आये और जिसकी उन्होंने दावत दी। नबियों की दावत और क़ौमी व सियासी लीडरों के बीच यही फ़र्क़ हैं। कुरआन मजीद जो तहरीफ़ व तबदीली से महफूज और क़यामत तक बाक़ी रहने वाली वाहिद आसमानी किताब है और नबियों की सरीत में हज़रत मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सीरत, जिस पर तारीख़ी व इल्मी एतबार से भरोसा किया जा सकता है, में कसरत से इसके दलायल मिलते हैं। नीचे इसकी कुछ मिसालें दी जाती है। इस सिलसिले में सबसे नुमायाँ वह आयत है जिसमें अल्लाह, तआला ने अपने नबी हज़रत इब्राहीम अ० के तहम्मुल और नर्म दिली की ख़ास तौर पर तारीफ़ की है:–

तर्जुमा:– "बेशक इब्राहीम बड़े तहम्मुल वाले, नर्मदिल, और रूजू करने वाले थे" (सूरे–हूद–७५) और उनके साथियों के बारे में इरशाद होता है:–

तर्जुमा:– "तुम्हें इब्राहीम अ. और उनके साथियों की नेक चाल चलनी (जरूरी) है, जब उन्होंने अपनी क़ौम के लोगों से कहा कि हम तुम से उन बुतों से जिनको तुम ख़ुदा के सिवा पूजते हो, बेतालुक़ हैं (और) तुम्हारे माबूदों के (कभी) क़ायल नहीं हो सकते और जब तक तुम एक ख़ुदा पर ईमान न लाओ हम में तुम में हमेशा खुली हुई अदावत रहेगी हाँ, इब्राहीम अ० ने अपने बाप से यह (जरूर) कहा कि मैं आपके लिए मग़फ़रत माँगूगा! और मैं ख़ुदा के सामने आपके बारे में किसी चीज़ का कुछ अख्तेयार नहीं रखता, ऐ हमारे परवरदिगार तुझी पर हमारा भरोसा है, और तेरे ही तरफ़ हम रूजू करते हैं, और तेरे ही हुजूर में हमें लौट जाना है" (सूरः अलमुमतहिना–४)

अक़ीदा की अहमियत का अन्दाजा इस बात से बख़ूबी हो सकता है कि सूरः अल्काफ़ेरून मक्का में उस वक्त नाज़िल हुई जब वहां के हालात इस मसले को उस वक्त तक मुल्तवी रखने में हक़ में थे जब तक इस्लाम को

ताक़त न हासिल हो जाये। लेकिन ऐसा नहीं किया गया। कुरआन ने साफ–साफ एलान कियाः–

तर्जुमा "ऐ पैग़म्बर इन मुनकिराने इस्लाम से कह दो कि ऐ काफ़िरो जिन (बुतों) को तुम पूजते हो मैं नहीं पूजता, और जिस (खुदा) की मैं इबादत करता हूं, उसकी तुम इबादत नहीं करते और मैं फिर कहता हूं कि जिनकी तुम पूजा करते हो, उनकी मैं पूजा करने वाला नहीं हूं, और न तुम उसकी बन्दगी करने वाले (मालूम होते) हो, जिसकी मैं बन्दगी करता हूं, तुम अपने दीन पर, मैं अपने दीन पर"। (सूरः अल्काफ़ेरून)

अगर अक़ीदा के मामले में किसी को ढील दी जा सकती है तो इसके मुस्तहक़ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के चचा अबूतालिब थे क्योंकि वह जिन्दगी भर आपके लिए सीना सिपर रहे और जानपमाल कुरबान करते रहें। सीरत निगार एक राय हैं कि 'वह अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लिए सिपर और हिसार बने हुए थे और अपनी पूरी क़ौम के ख़िलाफ आप के नासिर और हामी थे"। लेकिन सही रवायतों से यह साबित है कि जब अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अबू तालिब की मौत के वक़्त उनके पास तशरीफ़ ले गये, उस वक़्त अबूजहल और अब्दुल्लाह बिन उमेया भी वहां बैठे थे। फ़रमाया, "ऐ चचा। आप "लाइलाह इल्लल्लाह" कह दीजिए, मैं इस कल्मे की खुदा के यहां गवाही दूंगा, तो अबूजहल और इब्न अबी उमैया कहने लगे, "अबूतालिब। क्या तुम अब्दुल मुत्तलिव के मज़हब से फिर जाओगे? तो अबूतालिब ने यह कहते हुए जान दी कि अब्दुल मुत्तलिब के मज़हब पर हूं। सही रवायत में आता है कि "हज़रत अब्बास र० ने अल्लाह के रसूल से अर्ज़ किया कि अबूतालिब आप की हिफ़ाज़त और मदद करते थे और आप को बहुत चाहते थे और आप के लिए वह लोगों की नाराजगी की बिल्कुल परवाह नहीं करते थे तो क्या इसका फ़ायदा उनको पहुंचेगा? आप ने फ़रमाया कि मैंने उनको आग की लपटों में पाया और मामूली आग तक निकाल लाया।" इसी तरह मुस्लिम ने हज़रत आयशा र० की रवायत नक़ल किया है " मैं ने कहा ऐ अल्लाह के रसूलः इब्न जदआन जाहिलियत के जमाने में बड़ी सिलह रहमी करते थे, मिसकीनों और ग़रीबों को खाना खिलाते थे तो क्या उनके लिए यह सूदमन्द होगा"? आपने फ़रमाया, " नहीं, इनको इससे कोई फ़ायदा हासिल न होगा क्योंकि उन्होंने कभी नहीं कहा कि, "(ऐ मेरे रब। रोज़े जज़ा! को मेरे गुनाह बख्श दीजियेगा)"।

हज़रत आयशा र० एक रवायत में फ़रमाती हैं "अल्लाह के रसूल स० बदर की तरफ़ रवाना हुए और जब " हर्रतुलवबरा " पर पहुंचे तो एक मशहूर बहादुर आया उसे देखकर सहाबा को बड़ी खुशी हुई कि इससे इस्लाम के लश्कर को ताक़त मिलेगी जिसमें सिर्फ ३१३ अफराद थे। उस बहादुर और जियाले शख्स ने आपके पास आकर अर्ज़ किया, "मैं इसलिए आया हूं कि आप के साथ चलूं और माले ग़नीमत में शरीक हूं।" अल्लाह के रसूल स० ने फ़रमाया," तुम अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान रखते हो?" उसने कहा, "नहीं" आपने फ़रमाया "वापस जाओ इसलिए कि मैं किसी मुशरिक से मदद नहीं ले सकता"। हज़रत आयशा र० बयान करती हैं कि वह कुछ दूर चला और शजरा के मक़ाम पर फिर आया और अल्लाह के रसूल से वही पहली बात अर्ज की। आपने वही पहला जवाब दिया–फ़रमाया "जाओ, मैं मुशरिक से मदद नहीं लेता"। वह चला गया और बैदा पहुंचने पर फिर आया। आप ने फिर पूछा कि अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाते हो? "उसने कहा "हां । उस वक्त अल्लाह के रसूल ने फ़रमाया" तो चलो"।

दूसरी बात यह है कि नबियों की दावत व तबलीग़ और जद्द व जेहद का असल सबब महज खुदा की रजा और खुशनूदी की तलब होती है। यह एक ऐसी तेज़ तलवार है जो इस मक़सद के अलावा हर मक़सद को काटती है फिर दुनिया की कोई तलब बाक़ी नहीं रहती। न मुल्क व दौलत न सल्तनत व रियासत न इज़्ज़त की तमन्ना न इक़तेदार की हवस।

यह हक़ीक़त सबसे ज्यादा अल्लाह के रसूल स० की उस दुआ में झलकती है जो आपने तायफ़ में उस वक्त की थी जब तायफ़ वालों नें आपके साथ वहशियाना बर्ताव किया थाजिसकी मिसाल दावत व रिसालत की तारीख़ में मिलनी मुश्किल है। आप जिस मक़सद के लिए वहां गये थे वह पूरा नहीं हुआ। तायफ़ का एक भी आदमी मुसलमान नहीं हुआ। मगर इस नाजुक घड़ी में आपने जो दुआ की उसके कल्मात यह थेः

"इलाही अपनी कमज़ोरी, बेसरोसामानी और लोगो में तहक़ीर की बाबत तेरे सामने फ़रियाद करता हूं। तू सब रहम करने वालों से ज्यादा रहम

करने वाला है, दरमान्दा और आज्ज़ों का मालिक तू ही है, और मेरा मालिक भी तू ही है, मुझे किसके सिपुर्द कर रहे हैं, क्या बेगाना तुर्शरू के, या उस दुश्मन के जो काम पर क़ाबू रखता है। इस नुक्ते पर आकर नबूवत का मिज़ाज पूरी तरह झलक उठता है आप फ़रमाते हैं।

"अगर मुझ पर तेरा ग़ज़ब नहीं तो मुझे भी इसकी परवाह नहीं, लेकिन तेरी आफ़ियत मेरे लिए ज्यादा फैलाव वाली है।" नूह अ० जिन्होंने दावत व तबलीग़ का काम एक लम्बी मुद्दत तक किया, के बारे में क़ुरआन की शहदात है:–

तर्जुमाः वह अपनी क़ौम में पचास साल कम हजार साल रहे। (सूरः अन्कबूत–१४)

"(नूह ने) ख़ुदा से अर्ज़ की कि परवरदिगार मैं अपनी क़ौम को रात–दिन बुलाता रहा— फिर मैं उनको खुले तौर भी बुलाता रहा, और ज़ाहिरा व पोशीदा हर तरह समझाता रहा"। (सूरः नूह– ५, ८, ६) लेकिन इस मेहनत का नतीजा क्या रहा?

" उनके साथ ईमान बहुत ही कम लोग लाये।" (सूरः हूद–४०)।।

मगर हज़रत नूह अ० इस पर मायूस नहीं हुए और अपनी मेहनत को बेकार नहीं समझा और न इससे उनके ख़ुदा के महबूब पैग़म्बर होने में कोई फ़र्क आता है। ख़ुदा उनसे राज़ी था और वह अपने ख़ुदा से राज़ी थे। ख़ुदा का पैग़ाम उन्होंने ख़ुदा के बन्दों तक पहुंचा दिया था जिसके इनाम में क़ुरआन की यह आयतें नाज़िल हुईं।

तर्जुमाः "और पीछे आने वालों में उनका जिक बाक़ी छोड़ दिया यानी तमाम जहान में नूह अ० पर सलाम हो। नेकूकारों को हम ऐसे ही बदला दिया करते हैं, बेशक वह हमारे मोमिन बन्दों में से थे।" (सूरः साफ़्फ़ात ७८–८१)

क़ुरआन करीम दावत व तबलीग़ के मैदान में काम करने वालों को तालीम देता है कि:–

तर्जुमाः " वह जो आख़िरत का घर, है हमने उसे उन लोगों के लिए तैयार कर रखा है, जो मुल्क में जुल्म और फ़साद का इरादा नहीं करते और अन्जामे नेक परहेज़गारों ही का हैं"। (सूरः क़सस–८३)

इसका यह मतबल नहीं है कि दावत व तबलीग़ के काम में ईमान की इस्लामी ताक़त की अहमियत कम की जाये। यक ख्याल गैर इस्लामी है और इसमें रहबानियत की झलक मिलती है जिसके लिए इस्लाम में कोई जगह नहीं। अल्लाह तआला का इरशाद है:–

तर्जुमाः– "जो लोग तुममें से ईमान लाये, और नेक काम करते रहे, उनसे ख़ुदा का वअदा है कि उनको मुल्क का हाकिम बना देगा, जैसा कि उनसे पहले लोगों को हाकिम बनाया था, और उनके दीन को जिसे उसने उनके लिए पसंद किया है, मजबूत और पायदार करेगा और ख़ौफ़ के बाद उनको अमन बख्शेगा, वह मेरी इबादत करेंगे और मेरे साथ किसी को शरीक न बनायेंगे और जो इसके बाद कुफ़ करे तो ऐसे लोग बदकिरदार हैं।" (सूरः नूर– ५५) यह भी इरशाद है:–

" और उन लोगों से लड़ते रहो, यहां तक कि फ़ितना बाक़ी न रहे, और दीन सब ख़ुदा का ही हो जाये। (सूरः अनफ़ाल–३६)

यह भी इरशाद है:–

तर्जुमाः " यह वह लोग हैं कि अगर हम इनको मुल्क में दस्तरस दें तो नमाज़ को क़ायम करें, और ज़कात अदा करें, और नेक काम करने का हुक्म दें, और बुरे कामों से मना करें, और सब कामों का अन्जाम ख़ुदा ही के अख्तयार में है।" (सूरः हज–४१)

अल्लाह तआला ने मोमनीन के लिए इज्ज़त व सरबलन्दी का वअ़दा फ़रमाया है लेकिन इस शर्त पर कि उनमें ईमान हो और उनके अमल का मक़सद सिर्फ़ ख़ुदा की रज़ा हासिल करना हो इज्ज़त व इक्तेदार हासिल करना नहीं। क्योंकि इज्जत व इक्तेदार नतीजा है न कि मक़सद, इनाम है न कि ग़र्ज व ग़ायत। अल्लाह तआला का इरशाद है:–

तर्जुमाः– "और (देखो) बेदिल न होना, और न किसी तरह का ग़म करना, अगर तुम मोमिन हो तो तुम्ही ग़ालिब रहोगे।" (सूरः आले इमरान–१३६)

तर्जुमाः– "जिस दिन न माल ही कुछ फ़ायदा दे सकेगा न औलाद, हॉ जो शख्स ख़ुदा के पास पाक दिल लेकर आया (वह बच जायेगा") (सूरः शेरा– ८८– ८६ जारी)

गर यहां तुम साहिबे ईमान हो
फिर अगर तुम हाफ़िज़े क़ुर्आन हो
कैसे फिर काविश सता सकता है जिन्न
तुम तो महबूबे ख़ुदा, इन्सान हो
अ़ज़मते क़ुरआं की दौलत बांटते हैं
हम रसूलुल्ला की सीरत बांटते हैं
जुर्म होगा बांटना त्रिशूल का
हम मदारिस में महब्बत बांटते हैं

दसवीं किस्त

संक्षिप्त इस्लामी इतिहास

हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु

अब्दुस्सलाम किदवाई नदवी

मुसलमानों में मतभेद और हज़रत उसमान की शहादत

प्रारम्भ में हज़रत उसमान का ज़माना बहुत अच्छा रहा मुसलमान चारों तरफ़ बढ़ते चले जा रहे थे अगर चार वर्ष यही हालत रहती तो सारे संसार में इस्लाम का झण्डा लहराने लगता लेकिन चन्द बदमाशों ने सारा काम बिगाड़ दिया। पहले बताया जा चुका है कि यहूदी इस्लाम के कैसे सख़्त दुश्मन थे। शुरू में उन्होंने तलवार के ज़ोर से मुसलमानों को ख़त्म कर देना चाहा और इसके लिए जान तोड़ कोशिश की लेकिन जब कुछ न हो सका तो उन्होंने दोस्त बन कर हानि पहुंचाने का इरादा किया। अब्दुल्लाह बिन सबा यमन का यहूदी था। इस्लाम की उन्नति उससे देखी न जाती थी लेकिन करता क्या, इतनी ताक़त न थी कि खुलकर मुकाबला करता। आख़िर कुछ सोच कर मुसलमान हो गया। अब रात दिन इस फिक्र में रहता कि किसी प्रकार मुसलमानों में फूट पड़ जाए। आखिर सोचते – सोचते एक बात उसके समझ में आ गई उसने देखा कि हज़रत अली (रज़ि०) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के बहुत क़रीबी संबंधी है। ऐसे भी मुसलमानों में उनकी बड़ी इ़ज़्ज़त हैं। अगर उनके नाम पर हज़रत उसमान (रज़ि) के ख़िलाफ़ काम किया जाये तो बहुत जल्द सफलता मिल सकती है लेकिन कठिनाई यह थी कि अरब में सहाबा का प्रभाव बहुत अधिक था जो हुजूर सल्ल० के साथ रह चुके थे और इस्लाम को बहुत अच्छी तरह समझते थे। इसलिये यहां ऐसी बातें चल नहीं सकती थीं इराक का क्षेत्र अभी नया –नया फ़तह हुआ था यद्यपि यहां इस्लाम काफ़ी फैल चुका था लेकिन अभी तक लोगों के दिलों से अभी तक ईरानी बादशाह परस्ती का असर दूर नहीं हुआ था। इबने सबा ने सोचा इससे अच्छी और कौन सी जगह हो सकती थी तुरन्त यमन से चलकर बसरा आया और यहां पहुंच कर अपना, काम शुरू कर दिया। यह लोगों से मिलता और कहता कि विचित्र बात है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बाद उकने निकट संबंधी तो यूं ही रह गए और इधर उधर के लोग खलीफ़ा बन बैठे। अब भी समय है कि हज़रत उसमान को हटाकर उनकी जगह हज़रत अली रज़ि को बादशाह बना दे। सहाबा होते तो जवाब देते कि रसूलुल्लाह सल्ल० खुदा का दीन फैलाने आए थे। खुदा नख्वास्ता बादशाहत स्थापित करने थोड़े ही आए थे आपने खुद ही फरमाया कि नबी कोई विरासत नहीं छोड़ते आख़िरी हज के अवसर पर साफ़–साफ़ फरमा दिया कि इ़ज़्ज़त हसब नसब (वंश व नस्ल) से नहीं मिला करती बल्कि इस के लिए अमल जरूरी है। जो अधिक परहेज़गार है वही इ़ज़्ज़त का अधिक हक़दार है। इस बारे में आपने इतनी कड़ाई बरती थी कि अपने खानदान के लिये ज़कात आदि की आमदनी हराम कर दी थी ताकि लोग यह न सोंचे कि यह अल्लाह का नाम लेकर अपने खानदान में दौलत जमा करना चाहते हैं लेकिन यहां कौन था जो इस प्रकार का जवाब देता। इराक़ी और ईरानी भला इन बातों को समझते। उनकी तो सारी उम्र बादशाहों की चौखट पर सर रगड़ते गुज़री थी। उन्होंने तो ज़िन्दगी भर यही देखा था कि बाप के बाद बेटा और बेटे के बाद पोता तख़्त पर बैठता है। उन्हें क्या मालूम था कि इस्लाम खानदान नस्ल और खून के यही बंधन काटने आया है और वह एक ऐसी हुकूमत क़ायम करना चाहता है जिस में बादशाह या अमीर विरासत और खानदारी प्रभाव के कारण नहीं बल्कि अपनी जाती योग्यता और कौम की राय से चुना जाएगा। नतीजा यह हुआ कि इब्ने सबा की बातें उनके दिल में उतर गईं। धीरे–धीरे बसरा के गवर्नर अब्दुल्लाह बिन आमिर को ख़बर हुई। उन्होंने उसे शहर से निकलवा दिया अब वह कूफ़ा पहुंचा वहां भी इसी प्रकार की साज़िश की और कुछ दिनों के बाद निकाला गया। यहां से शाम गया मगर वहां अमीर माविया रज़ि की वजह से उसका कोई उपाय न चला। वहां से भागकर मिस्र पहुंचा। यहां उसने चुपके –चुपके अपना काम शुरू किया और थोड़े दिनों में अच्छी खासी जमाअ़त बना ली। हज़रत उसमान बड़ी नम्र तबीयत के थे। बड़े सहाबा स्वर्गवास

हो चुके थे। नई उम्र के लोग रह गए थे। नव मुस्लिमों की संख्या बहुत बढ़ गई थी। इन परिस्थितियों में हजरत उमर जैसा प्रबन्ध कठिन था। यहूदी और मुनाफिक (कपटी) जैसे लोग इस्लामी शासन को समाप्त करने की फिक्र में थे इन हालात में यहूदी अब्दुल्लाह बिन सबा की जमाअ़त को हज़रत उसमान और उन के अफसरो को बदनाम करने का अवसर मिल गया और वह एक सच में सौ झूठ मिला कर तरह–तरह से मशहूर करते। नाम बदल –बदल कर नई जगहों से विभिन्न शहरों में तरह–तरह के पत्र भेजे जिनमें पुराने शहरों–शहरों की बुरी दशा दिखाते और अफसरों का अत्याचार बयान करते। लोग बेचारे क्या जानते कि असल कहानी क्या है। पढ़ कर अफसोस करते और कहते कि शुक्र है कि हम इस मुसीबत से बचे हुए है। फलतः सारे देश में यही चर्चा होने लगी। अब मदीना में भी इस प्रकार की सूचना आनी शुरू हुई। लोगों ने हज़रत उसमान रज़ि० को खबर दी और कहा ज़रा पूछिये कि वास्तविकता क्या है। आप पता लगाने के लिए कई विश्वासपात्र लोगों को रवाना फ़रमाया। सबने वापस आकर बयान किया कि कहीं कोई खराबी नहीं है। हर जगह शांति है और तमाम काम पहले की तरह भलीभांति हो रहा है लेकिन सबाई (इब्ने सबा के आदमी) बराबर झूठ फैलाते रहे। इसका प्रभाव यह हुआ कि सारी सलतनत में हज़रत उसमान रज़ि और उनके अफसरों के ख़िलाफ कहानियां मशहूर हो गईं यहां तक कि मदीना में भी यह चर्चा होने लगी। जब चर्चा अधिक हुई तो हज़रत उसमान रज़ि० ने अफसरों को आदेश भेजा कि मौक़े पर हाज़िर हों। जब सब इकट्ठा हुए तो पूछा कि आख़िर बात क्या है और यह ख़बरे क्यों फैल रही हैं। लोगो ने कहा कि चन्द बदमाश मिल कर इस किस्म की ख़बर उड़ाते हैं। हमें चाहिए कि ऐसे लोगों को पकड़ कर कत्ल कर दें ताकि यह फ़ितना दब जाए। लेकिन हज़रत उसमान रज़ि० बहुत ही नम्र स्वभाव और रहम दिल थे वह प्रजा का खून बहाना न चाहते थे चूंकि सबाई अभी तक अच्छी तरह ज़ाहिर नहीं हुए थे अतः उन्हों ने केवल संदेह पर इतनी बड़ी कार्यवाही की अनुमत नहीं दी और यह आग चुपके–चुपके सुलगती रही। कुछ दिनों के बाद कूफा, बसरा और मिस्र के सबाई आपस में तय करके रवाना हुए और शहर के बाहर जाकर ठहर गए। हज़रत उसमान रज़ि० को मालूम हुआ तो आपने लोगों को बुलाया और सब सहाबा रज़ि के सामने उनसे कहा कि अपनी शिकायतें बयान करें। जब यह सब कह चुके तो आपने हर बात का पूरा–पूरा जवाब दिया और अच्छी तरह समझाया कि सूरत क्या है। उनकी सबसे बड़ी आपत्ति यह थी कि हज़रत उसमान रज़ि० अपने संबंधियों के साथ सुलूक क्यों करते हैं। आपने फरमाया मैं जो कुछ करता हूं अपने जाती माल से करता हूं। सरकारी ख़जाने से एक पैसा भी उनको नहीं देता मेरा तो यह हाल हैं कि अपने खर्च के लिए भी कभी एक पैसा (वेतन) सरकारी ख़जाने से नहीं लेता हूं। आपने फ़रमाया तुम लोग कहते हो कि मरवान बिन हकम को मदीना आने की अनुमत क्यों दी तो भाई इसमें मेरा क्या कुसूर है। रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने खुद ही अपनी जिंदगी में इजाज़त दे दी थी। अब मैं रोकने वाला कौन हूं। तुम लोग कहते हों कि मैंने नवजवानों को हाकिम बना दिया यह कोई बुरी बात नहीं। खुद नबी सल्ल० ने हज़रत उमासा रज़ि० को जो बहुत कम उम्र थे बड़े–बड़े सिन रसीदा सहाबा रज़ि पर अमीर बनाया था हालांकि उस समय उनकी उम्र केवल सत्रह साल की थी। मैंने जिसे अमीर सरदार बनाया उसको योग्यता, अक़्ल दीनदारी और इमानदारी को जांच कर अमीर बनाया है। तुम कहते हो कि मैंने अब्दुल्लाह बिन साद को एक बड़ी रक़म क्यों दी हालांकि तुम्हें मालूम है कि खलीफ़ा को इनाम व पुरस्कार देने का अधिकार है उन्होंने अफ़रीका की फतह में बड़ी मेहनत की थी। इस पर प्रसन्न होकर उन्हें इनाम दिया गया लेकिन फिर भी लोगों की नाखुशी के ख़्याल से वह वापस ले लिया गया। तात्पर्य यह है कि हज़रत उसमान (रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु) ने उनकी एक–एक बात का पूरा जवाब दिया। जवाब पर हसाबा (रज़ि०) से पूछते जाते थे कि ठीक है या नहीं सब कहते कि बिल्कुल सही और दुरस्त है। हज़रत उसमान ने हर बात इस तरह साफ़ कर दी थी कि अगर सचमुच कोई शिकायत होती तो समाप्त हो गई होती लेकिन उन लोगों का उद्देश्य यह थोड़े ही था यह तो केवल फ़साद चाहते थे और अगले वर्ष हज और ज़ियारत के नाम से कूफा, बसरा, मिस्र, से सोलह–सोलह सौ आदमी चले इस खयाल से कि लोगों को संदेह न हो। चार टुकड़े कर के आगे पीछे रवाना हुए और मदीना से तीन मंजिल पहले ठहर गए। पहले मदीना के हालात देखने के लिए दो आदमी रवाना हुए फिर मौक़ा

देख कर कुछ और लोग आए और हज़रत अ़ली रज़ि० हज़रत तलहा रज़ि० और ह़ज़रत ज़ुबैर रज़ि से मिले। उनसे हज़रत उसमान रज़ि की बुराइयां बयान की और कहा कि हम चाहते हैं कि उनके स्थान पर आप ख़िलाफ़त का काम संभाले लेकिन उन बुज़ुर्गो ने साफ़ इनकार कर दिया तो यह लोग अपने साथियों के साथ वापस गए। इसके बाद इकट्ठा होकर सबने मदीना पर ध ावा बोल दिया और आकर हज़रत उसमान के घर को चारों तरफ़ से घेर लिया और शहर में एंलान कर दिया कि जो शख्स खैरियत चाहता हो, हथियार डाल दे। हज़रत अली रज़ि ने जाकर पूछा अभी तो तुम चले गए थे, अब क्यों वापस आए हो। मिस्र वाले बोले हम तो चुपचाप चले जा रहे थे, रास्ते में हमने एक पत्र पकड़ा जिसमें लिखा है कि जब हम मिस्र पहुंचें तो क़त्ल कर दिये जाएं। यह सुनकर हज़रत अली रज़ि ने कूफ़ा और बसरा वालों से पूछा कि तुम क्यों आए हो। उन्होंने ने भी यही जवाब दिया अब उन लोगों का झूठ बिल्कुल ज़ाहिर था।

हज़रत अली रज़ि ने फ़रमाया कि तुम लोगों का रास्ता तो अलग–अलग है आख़िर तीन मंजिल के बाद कैसे मालूम हुआ कि मिस्रियों के लिए ऐसा आदेश जा रहा था जिसे उन्होंने पकड़ लिया है कि जोश के मारे सहायता के लिए आ पहुंचे। ख़ुदा की क़सम तुम सब झूठे हो। तुमने पहले ही से साज़बाज़ कर रखा था कोई बात होती तो जवाब देते झूठ कहां तक चलता हज़रत अली रज़ि० की आपत्ति पर यह सब हक्का बक्का रह गए। जब कुछ जवाब न बन पड़ा तो कहने लगे आप जो चाहें हमें कहें, हम तो इस ख़लीफा को कत्ल करके रहेंगे। इस में आप भी हमारा साथ दीजिए। हज़रत अली रज़ि० ने इस पर लानत की और कहा कि हरगिज नहीं। मैं तुम्हारा साथ किसी भी कीमत पर नहीं दे सकता। हज़रत तलहा रज़ि और हज़रत ज़ुबैर रज़ि के साथ भी ऐसी ही बातें हुई। उन्होंने भी उन्हें डांटा और उन पर लानत भेजी लेकिन उनपर कोई असर नहीं हुआ और यह सीधे हज़रत उस्मान (रज़ि०) के पास गए और वही जाली ख़त पेश किया यह ख़त ऐसा साफ़ बना हुआ था कि हज़रत उस्मान (रज़ि०) ने देखते ही इनकार कर दिया कि यह न मेरा ख़त है और न इसके बारे में कुछ जानता हूं। सचमुच कोई सच्चाई होती तो यह लोग जान जाते लेकिन इसका तो मंशाही कुछ और था। इसलिए वही रट लगाए हुए थे कि नहीं हम न मानेंगे। यह तो आप ही का ख़त है।

घर पहले ही घेर चुके थे चन्द दिन के बाद निकलना, बैठना, दाना पानी सब बन्द कर दिया। बड़ा गम्भीर समय था। बड़े–बड़े सहाबा घरों में बंद थे किसी की हिम्मत न पड़ती थी कि बाहर निकल सके। सारे शहर में इन्हीं शैतानों का राज था हज़रत अली रज़ि० ने जब देखा कि हजरत उसमान रज़ि० को नहीं बचा सकते और बाग़ी उनको भी बदनाम करना चाहते हैं तो अपने बेटो हसन रज़ि० हुसैन रज़ि० को हज़रत उसमान रज़ि की सुरक्षा के लिए भेज दिया और खुद मदीना छोड़ कर चले गए। मदीना बिल्कुल खाली हो गया और बाईस रोज़ के घेराव के बाद कुछ लोग घर के पीछे से छत पर चढ़कर अन्दर पहुंच गये। हज़रत उसमान रज़ि कुर्आन पढ़ रहे थे बाग़ियों ने तलवार मार दी तो खून के क़तरे कुरआन पर गिरे। आपकी बीबी हज़रत नाएला रज़ि० ने बचाना चाहा तो उनकी उंगलियां हथेली से कट गई। कत्ल के बाद सर काटा फिर घर का सारा सामान लूट लिया। यह घटना जिलहिज्जा (बक़रईद) सन ३५ हिजरी (२० मई ६५६ ई०) को हुई इसी दिन से मुसलमान ऐसे टुकड़े–टुकड़े हुए कि फिर आज तक जुड़ना नसीब न हुआ। अब तक मुसलमान अपने खलीफ़ा या सरदार के खिलाफ़ एक कदम भी उठाना कुफ़्र के बराबर समझते थे लेकिन इसके बाद यह ख़याल दिल से निकल गया और एक मुसलमान की तलवार दूसरे मुसलमान की गर्दन काटने लगी और जो मुसलमान ज़ोर और ताकत में पहाड़ थे आपस में टकरा कर चूर–चूर हो गए हज़रत उसमान रज़ि ने शुरू–शुरू में हज़रत उमर के प्रबंध को कायम रखा लेकिन फिर कुछ दिनों के बाद इसमें परिवर्तन शुरू हो गया। अपके जमाने में मुसलमानों का समुद्री बेड़ा बना अमीर माविआ रज़ि को बहुत दिनों से इसका बड़ा शौक था लेकिन हजरत उमर रज़ि० ने अनुमत नहीं दी थी। प्रारंभ में हज़रत उसमान रज़ि० भी इनकार करते रहे लेकिन जब आप को यक़ीन हो गया कि यह हानिकारक नहीं बल्कि लाभदायक है तो अनुमत दे दी। अमीर माविआ रज़ि० ने चन्द दिनों में ऐसा ज़बर्दस्त बेड़ा तैयार कर लिया कि पांच सौ जहाज़ों के बेड़े को बुरी तरह पराजित किया। हज़रत उसमान रज़ि ने भी अपने ज़माने में बहुत से लोकहित के काम किये पुल बनवाए, सड़कें निकलवाई, मुसाफिर खाने बन गए।

लोगों के वज़ीफ़ों में इजाफ़े किए। धार्मिक सेवाएं भी सम्पन्न कीं। मस्जिद नबवी की इमारत तंग थी, उसे तुड़वा कर बड़ी ज़र्बदस्त और सुन्दर इमारत बनवाई। उनका सबसे बड़ा कारनामा यह है कि क़ुर्आन का प्रकाशन किया और तुम पढ़ चुके हो कि हज़रत अबूबकर रज़ि० अपने जमाने में क़ुर्आन मुरत्तब करा चुके थे जो हज़रत हफ़सह रज़ि के पास रखा हुआ था। हज़रत उसमान रज़ि के जमाने में अजमी (ग़ैर अरब) मुसलमानों ने क़ुर्आन की भिन्निता शुरू कर दी थी। कोई किसी तरह से पढ़ता था कोई किसी तरीके से। हज़रत उसमान रज़ि को मालूम हुआ तो आपने हज़रत अबूबक्र रज़ि वाला क़ुर्आन मंगा कर उसकी नक़लें करा कर सभी देशों में भेज दीं। अगर हज़रत उसमान ने तुरंत यह उपाय न किया होता तो मुसलमानों में बड़ा फितना पैदा हो जाता और अल्लाह की किताब में भिन्निता क़ायम हो जाती। यह सब कुछ आपने किया लेकिन आप नम्र स्वभाव और ऐसे नेक थे कि सख़्ती जानते न थे। इस का नतीजा यह हुआ कि ख़िलाफ़त के प्रबंध को कुछ आपके खानदान वालों ने और कुछ आपके विरोधियों ने गड़बड़ किया। आपके विरोधी जो पहले ही ताक में थे आप को बदनाम करके इतना बड़ा इनक़लाब बरपा कर दिया। आप बड़े नेक, नम्र स्वभाव और सहनशील थे सख़्ती करना जानते ही न थे सख़्त से सख़्त बातें सुनकर पी जाते थे। आपके दिल में ख़ुदा का बड़ा डर था। हर समय ख़ुदा के डर से कांपा करते थे शर्म व लज्जा आप में इतनी थी कि रसूलुल्लाह सल्ल० भी आप का लिहाज़ करते थे। हज़रत उसमान रज़ि० का प्रारंभ से ही पालन पोषण सुख सुविधा तथा लाड प्यार में हुआ था और अच्छे खानपान और सुन्दर लिबास पहनने वाले थे मगर इस्लाम के बाद यह रंग बदल गया। ख़लीफ़ा होने के बाद लोगों को अमीराना खाना खिलाते थे और खुद सिरका रोटी पर गुज़र बसर करते थे। खिलाफ़त के बाद सारी दौलत खत्म हो गई इसके बावजूद संयम व उपासना का दामन हाथ से न छूटा। तबीअ़त में बड़ी सादगी थी लौंडी गुलाम सब कुछ थे लेकिन अपना काम अपने हाथ से करते थे। दूसरों के वक़्त पर काम आते थे अपने खानदान के तमाम गरीबों की परवरिश अपने रूपये से करते थे।

(अनुवाद– हबीबुल्लाह आज़मी)

ईद मुबारक

कर के रब की ह़म्दो–सना
आओ गायें ईद मुबारक
नबी पे रह़मत और सलाम
हर मोमिन को ईद मुबारक
दादा मियां को ईद मुबारक
दादी अम्मां! ईद मुबारक
नाना जान! ईद मुबारक
नानी अम्मां ! ईद मुबारक
अब्बू अम्मी, ईद मुबारक
मामूं मम्मी, खाला फूफी
भाई जान और बजिया रानी
हां हां सब को ईद मुबारक
भूल गये हम मुन्ना को
कहां है उस को ईद मुबारक
गुड़िया भी मुस्काती है
गुड़िया तुझ को ईद मुबारक

जो हैं गुस्ताख़ क़ुर्आं के सज़ा उनको तो मिलना है

ग़ुरूरे बुश ने ललकारा है ईमानी ह़रारत को
वो नादां है नहीं समझा अभी ईमां की ताक़त को
तक़ाज़ा है ये ईमां का उठें सब साहिबे ईमां
न रस्ता दें किसी जानिब भी सहयूनी शरारत को
जो हैं गुस्ताख़ क़ुर्आं के सज़ा उन को तो मिलना है
करूं मैं मांग ग़ैरों से नहीं मुम्किन यह आदत को
अगर मांगें मुआफ़ी वो मुआफ़ उन को करेगा कौन
सिवा इसके वो पेशे रब करें ज़ाहिर नदामत को
नहीं चारा हलाकत से अगर समझें सिवा इसके
करें तौबा पढ़ें कल्मा वो टालें अपनी शामत को
ख़ुदा के वो तो बाग़ी हैं उन्हें दोज़ख़ में जलना है
मगर हां ये कि ताइब हों ख़ुदा से लें हिदायत को
सुनो जो ढील उनको है नहीं हैरत है इस पर कुछ
है मक्सद इस में पोशीदा बुलाएं ख़ुद से आफ़त को
किये जल्से बहुत हमने मगर ज़ालिम वहीं पर है
किया हम ने जियाअ़े वक़्त न बदला उसने आदत को
जो मुम्किन हो तो ताक़त से मिटा दो उसकी हस्ती को
रवा रखे ज़रा भी यां जो क़ुर्आं की इहानत को
अगर तुम में नहीं ताक़त कि पकड़ो हाथ ज़ालिम का
दुआओं से मिटाना है तुम्हें उस की ख़बासत को
क़ुनूते शहर साबित है उसय्या ज़अ़्ल–व–ज़क्वां पर
किया जब कत्ल उन सब ने सहाबा की जमाअत को
मैं आसी हूं मेरे मौला तेरी दी जान रखता हूं
निछावर है तेरी ख़ातिर ये क़ुर्आं की ह़िफ़ाज़त को

नब्बे नबवी

गुफ़रान नदवी

तकया लगाकर न खाओ

हज़रत अबी हुजैफ़ा (रज़ि अल्लाहु अन्हु) रवायत करते हैं :

रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) फरमाया करते थे " मैं तकया लगाकर खाना नहीं खाता"– इसी मफहूम (अर्थ) की दूसरी रवायत हज़रत अ़ली बिन अक़मर से यूं है "जहां तक मेरा तअल्लुक (सम्बन्ध) है, मैं तकया लगाकर खाना नहीं खाता हूं।"

(बुख़ारी, अबूदाऊद, निसाई)

हुजूर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) क्यों तकया लगाकर खाना पसन्द नहीं करते थे? इसका जवाब हुजूर की ज़ौजा मुतह्हरा हज़रत आइशा सिद्दीका रज़ियल्लाहु अन्हा की ज़बाने मुबारक से सुनिये।

फ़रमाती हैं मैंने रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) से अर्ज़ किया "अल्लाह मुझे आप पर कुरबान करे आप तकया लगाकर खाना खा लीजिए" यह सुनकर हुजूर ने अपना सर मुबारक ज़मीन की तरफ़ झुका लिया, फिर फ़रमाया "मैं तो एक बन्दा हूं मुझे ऐसे ही बैठना ज़ेब (शोभा) देता है जैसे एक बन्दा बैठता है और मैं ऐसे ही खाना खाऊंगा जैसे एक बन्दे को खाना ज़ेब देता है। (अहकामे नबविया)

ग़ौर कीजिए यह इज्ज़ व इनकिसार (विनय और नम्रता) किस की तरफ़ से है, और अपनी बन्दगी व उबूदियत का इज़हार कौन कर रहा है वह जो सरवरे काइनात हैं (सारे जहानों के सरदार) खुलास–ए–काइनात हैं (संसार का का सारांश जिनके लिए यह पूरी दुनिया वजूद में आई, जिनके लिए यह सूरज चांद, बनाए गए, दूसरी तरफ़ हम हैं जिनकी गरदनें हर दम अकड़ी रहती हैं – तकया लगाकर कोई बीमार या उज़्र वाला खाए तो कोई बात नहीं लेकिन एक अच्छे भले तन्दुरुस्त और ताक़तवर इन्सान के लिए हरगिज़ जाएज़ नहीं, एक बन्दा अल्लाह का दिया हुआ खाए और अकड़ कर बैठे यह उसकी बन्दगी के खिलाफ़ है।

आंहज़रत (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का इकट्ठे खाना

हज़रत अनस रज़ि अल्लाहु अन्हु मशहूर सहाबा में से हैं, वह बयान करते हैं –

हुजूर रसूल करीम पर अल्लाह का दुरूद व सलाम हो, " वह अकेले खाना तनावुल न फरमाया करते" अर्थात अकेले खाना नहीं खाते थे, यह सिर्फ एक सहाबी–ए–रसूल की तन्हा रवायत नहीं बल्कि बहुत से सहाबा के बयानात और उनका मुसलसल अमल इस बात पर गवाह है कि रहमतुललिल आलमीन खाना अलाहिदा तनावुल नहीं फरमाते थे बल्कि मजलिस में मौजूद तमाम छोटे बड़े अफ़राद को खाने में शरीक करते थे।

हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) न सिर्फ मजलिस के तमाम हज़रात को खाने में शरीक फरमा लेते और अमीर ग़रीब छोटे बड़े में कोई फ़र्क न रखते बल्कि साथियों को अपने खाने के बरतन में शरीके तआम फरमाते थे, तमाम हाजिरीन को एक ही दस्तरखुवान पर बिठाते और एक ही बरतन में एक जगह खिलाते।

हज़रत जाबिर रज़िअल्लाहु अन्हु कहते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को यह फ़रमाते हुए सुना है "एक आदमी का खाना दो को किफ़ायत करता है और दो का खाना चार को और चार का खाना आठ आदमियों को काफी होता है।" (मुस्लिम)

नई तहजीब ने इन्सान को बहुत कुछ दिया है, नई ईजादात (आविष्कार) और मुवासिलाती निज़ाम (संचार साधन) ने दूर के फासिले नजदीक कर दिये हैं, नश्र व इशाअत के आलात (प्रचार, प्रसार के साधन) ने पूरी दुनिया को एक कर दिया है, लेकिन आदमी को शरफ़े आदमियत (मानव सम्मान) से महरूम (वंचित) कर दिया है, और एक इन्सान को दूसरे इन्सान से जुदा कर दिया है दस्तर ख्वान पर यकजा (एक जगह) खाने का तसव्वुर (खयाल) उठता जा रहा है, हर कोई अपनी अपनी प्लेट और अपने अपने गिलास संभाल रहा है, वह उन्स व मुहब्बत जो एक जगह खाने से हासिल होती थी, खत्म होती जा रही है। आइये! फिर सुन्नत–नबवी की रस्म ताज़ह करें।

एक जगह खाने के आदाब (नियम)

"हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (अल्लाह उन दोनों से राज़ी हो) बयान करते हैं कि हजरत रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फ़रमाया कि जब दस्तर ख्वान बिछ जाए तो उस वक़्त कोई न उठे जब तक दस्तर ख्वान उठा न लिया जाए और कोई शख्स खाने से हाथ न रोके जब तक लोग फारिग न हो जाएं चाहे तबीयत भर जाए, अगर मजबूर हो तो उज़्र पेश करे कि साथियों

(शेष पृष्ठ ३६ पर)

मदरसों में आतंकवादी शिक्षा?

रिज़वानुल्लाह

एक दौर था जब मदरसों में शिक्षा पाने वालों को गिरी हुई नजरों से देखा जाता था और संसार के सबसे विकलांग दुर्बल लोगों में गिनती की जाती थी, और यह कहा जाता था कि इनका वजूद निरर्थक है, इनकी शिक्षा निरर्थक है, यह लोग धरती पर बोझ थे। लेकिन पता नहीं वह कौन सा क्षण था जिसमें अचानक क्रान्ति आ गई और आन की आन से, देखते ही देखते वहीं धरती के बोझ संसार के लिये खतरा बन गए। अब वह जहां रहें, जहां पढ़ें जो कुछ पढ़ें सबमें खतरा दिखाई देने लगा है। मदरसों के इतिहास पर एक नज़र डालिए, अपने आरम्भिक दौर से आज तक मदरसों के प्रांगण में कोई अप्रिय घटना नहीं हुई। यहां न धरना प्रदर्शन होता है न शिक्षकों का घेराव करके उनका अपमान किया जाता है और नही खौफ व दहशत से जुड़ी हुई कोई पाठ कोर्स में दाखिल है जिसके नतीजे में यहां से निकलने वाले छात्र–छात्राएं देश के लिए दुरूपयोग सिद्ध हों मदरसों में अमन के लिए प्रचारक तैयार किये जाते हैं। सच्चा नागरिक बनने की शिक्षा दी जाती है और देश के प्रति प्रेम की भावना पैदा की जाती है। आजकल मदरसों की तलाशी ली जाती है यह कार्य इससे पहले भी कई बार हो चुका है। सवाल है कि पहले क्या मिला था? और अब क्या मिलेगा? हालांकि एक बार तलाशी के बाद कोई सन्देह नहीं रहना चाहिए। न्याय होता कि हर समुदाय के स्कूलों की तलाशी ली जाती। क्या संघ के द्वारा चलाए जानें वाले हज़ारों विद्या भारती स्कूलों की तरफ किसी का ध्यान गया है? क्या ऐसा इमकान नहीं कि संघ के स्कूलों में आतंकी शिक्षा दी जा रही हो, वरना वह अगर सिर्फ धार्मिक संगठन है तो क्या उनका धर्म मारधाड़, साम्प्रदायिक दंगे करवाना सिखाता है? ऐसे में प्रधानमंत्री डा० मनमोहन सिंह का अमेरिका में दिया गया बयान काफी महत्व रखता है। उन्होंने पत्रकारों से कहा "हमारे देश के मुसलमान अमन पसंद है, और आज तक भारतीय मुस्लिम का अलकाइदा से संबंध नहीं पाया गया है, ना ही आतंकवादी गतिविधियों में लिप्त पाया गया है" मगर दुख की और आश्चर्य की बात है कि इतनी महत्वपूर्ण बात को मीडिया ने न सिर्फ महत्व नहीं दिया बल्कि अपने सफेद लिबास को दाग़दार कर दिया है? इन मदरसों के बारे में जितना शोर मचाया जाता है उतना ही ये संस्थाएं शांत हैं। अगर यह प्रोपेगेन्डा सच साबित होते तो आज एक भी मदरसा नहीं रहता, सब पर ताले लग चुके होते। अगर आतंकवाद के विरूद्ध साफ दिलों से कार्य होता तो आतंकवादी पकड़े गए होते संसार में शांति का राज होता। आज देश के मदरसों और संघ परिवार के स्कूलों को सुबह–सुबह जाकर देखा जाए तो एक भी ऐसा मदरसा नहीं मिलेगा जहां किसी अभ्यास का चिन्ह मिले। इसके विपरीत दूसरे स्कूलों में खास ढंग के अभ्यास कराए जाते है? बच्चों के विचारों को खास समुदाय के खिलाफ बिगाड़ा जाता है। इसकी मिसाल पूर्व सरकार द्वारा तैयार किया गया निसाब है। फिर किस आधार पर मदरसे आतंकवादी अड्डे और प्रशिक्षण शिविर कहे जाएंगें?

(पृष्ठ ११ का शेष)

मदीना की जिस गली में जाकर तू बैठ मैं काम कर दूंगा। अतएव उसके साथ गये और उसकी ज़रूरत पूरी की बेवा और मिस्कीन के साथ चलकर उनका काम कर देने में आपको आर न था। एक दफ़ा आप नमाज़ के लिए खड़े हो चुके थे कि एक बद्दू आया और आपका दामन पकड़ कर बोला मेरा जरा से काम रह गया है ऐसा न हो कि मैं भूल जाऊं, पहले इसको कर दो आप उसके साथ फ़ौरन मस्जिद से बाहर निकल आये और उसका काम करके नमाज़ अदा की। (अबूदाऊद) जारी।

प्रस्तुतिः हसन अन्सारी।

(पृष्ठ २१ का शेष)

इन्शा अल्लाह इस मज़्मून में ऑ हज़रत सल्लल्लाह अ़लेहि व सल्लम के ऐसे खुसीसी — फ़ज़ाइल लिखेंगे जिनसे यक़ीनी तौर पर जाना जा सकेगा कि हुज़ूर सल्लल्लाह अ़लैहि वसल्लम सारी मख़्लूक़ में अल्लाह तआ़ला के सब से महबूब व मुक़र्रब और सारी दुन्या के सरदार हैं। उसी के साथ हम हुज़ूर की अ़ब्दीयत (बन्दा होने) पर भी रौशनी डालेंगे जिससे वाज़िह होगा कि हुज़ूरे अक़्दस कामिल तौर पर अहकामे इलाही के पाबन्द और उसकी मर्ज़ी के ताबिअ़ थे और अल्लाह तआ़ला की ज़ात उसकी सिफ़ात और उसकी ख़ुदाई में आप ज़र्रा भर भी शरीक और साझी नहीं थे। (जारी)

सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के फ़ज़ाइल

मु० आ़रिफ़ नदवी संभली

इससे बढ़कर तअ़ज्जुब की बात और कौन सी हो सकती है कि जिस नबी ने अपनी पैदाइश की थोड़ी ही देर बाद अपने बारे में बताया था:

मैं अल्लाह का बन्दा हूं, वह मुझे किताब अ़ता फ़रमाएगा और नबी बनाएगा (सूर–ए मर्यमः३०)

उन्ही नबी की उम्मत ने उनके आसमान पर तशरीफ़ ले जाने के थोड़े ही दिनों बाद उनके खुले हुए एअ़लान (घोषणा) को एक दम भुला कर ख़ुदा का बेटा और उससे भी आगे बढ़कर ख़ुद ख़ुदा ही क़रार दे दिया और उनको बन्दा कहने में उन की तौहीन (अपमान) ठहराया। चुनांचि। रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) से मुनाज़रा करने की ग़रज़ से ईसाई पदारियों का जो वफ़्द यमन के नजरान से मदीना तयिबा पहुंचा उसने हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम पर इल्ज़ाम लगाया कि आप हमारे नबी को ऐब लगाते हैं। हुज़ूर ने फ़रमाया वह क्या बात है जो मैं उन की निस्बत करता हूं और तुम उसे ऐब लगाना कहते हो? उन्होंने कहा आप उन्हें अ़ब्दुल्लाह कहते हैं यानी उनकी तरफ़ बन्दा होने के ऐब की निस्बत करते हैं। हुज़ूर सल्लल्लाहुअ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया इसमें तो उनके हक़ में कोई आ़र (शर्म) का पहलू तो नहीं है इसी वाक़िअे के बाद सूर–ए–निसा में एक आयत नाज़िल हुई जिस में ईसाइयों के इस मुहमल (ब्यर्थ) और जाहिलाना इल्ज़ाम का रद किया गया अल्लाह तआ़ला ने इरशाद फ़रमाया। मसीह अल्लाह का बन्दा होने से हरगिज़ शर्म नहीं करेंगे और न मुक़र्रब फ़िरिश्ते और जो कोई अ़ल्लाह की बन्दगी से शर्म करेगा और घमन्ड करेगा तो अल्लाह तआ़ला ज़रूर सबको अपने पास जमा करेगा। (सूर–ए–निसा आयतः १७२)

इस वाक़िअे से दो पक्की बातें बहुत खुल कर सामने आई, जिन में हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की उम्मत के लिये बड़ी आगाही और बड़ी रहनुमाई है। एक यह कि अगर नबी की हस्ती के बारे में भी ग़ुलू (सीमोल्लंघन) हो जाता है तो ऐसी बेहुदूद अ़क़ीदत (असीम आस्था) वाले ख़ुद अपने नबी की बात भी नहीं मानते, बल्कि वह नबी की खुली हुई, वाज़ेह (स्पष्ट) बातों का भी दूसरा अर्थ निकालते हैं और अपनी ग़लत सोच को हक़ीक़ी दीन समझ कर दीन व ईमान से महरूम हो जाते हैं। जिस तरह पूरी ईसाई उमत हज़रत ईसा के मुआ़मले में भटक गई। दूसरी यह बात सामने आई कि जो लोग नबी के बारे में ग़ुलू (सीमोलंघन) में फंस जाते हैं तो उन की हालत यह हो जाती है कि अगर कोई उन्हे सीधे रास्ते पर लाने की कोशिश करता है तो वह उसकी नसीहत पर ग़ौर करने के बाजए उल्टा उस पर तौहीन का इल्ज़ाम लगा देते हैं, जिस तरह ईसाई पादरियों ने हुज़ूर सल्लल्लाह अ़लैहि वसल्लम पर ईसा अ़लैहिस्सलाम की तौहीन का इल्ज़ाम लगाया था। बस आज जो लोग हुज़ूर (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) की हस्ती की अ़ब्दीयत (बन्दा होना) व रिसालत (रसूल होना)के मरतबे (पद) से बढ़ा कर आप के लिये ख़ुदाई सिफ़ात व इख़्तियारात साबित करने की कोशिश कर रहे हैं या अपनी समझ में साबित (सिद्ध) मान कर उसको अपना अ़क़ीदा (विश्वास) बना चुके हैं। अगर आप उनके इस अ़क़ीदे की इस्लाह (सुधार) की कोशिश करेंगे तो वह आपको ज़रूर रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु, अ़लैहिवसल्लम) का मरतबा घटाने और आपकी तौहीन करने का मुजरिम (अपराधी) करार देंगे। क्योंकि जब इस इल्ज़ाम से रसूलुल्लाह (सल्लाहु अ़लैहिवसल्लम) की मअ़सूम (पापरहित) व पाक हस्ती महफ़ूज़ (सुरक्षित) न रह सकी तो आप उससे किस तरह बच सकते है। हालांकि अगर ग़ुलू से हटकर इन्साफ़ से सोचा जाए तो यह कितनी आसानी से समझ में आ जाने वाली बात है कि रसूलुल्लाह (सल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) को जो मरतबा व मक़ाम अल्लाह तआ़ला ने क़ुर्आन शरीफ़ में बयान फ़रमाया है और ख़ुद हुज़ूर (सल्लल्लाह अ़लैहवसल्लम) ने अहादीस में बयान फ़रमाया है, हुज़ूर (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) बस वैसे ही हैं न उससे कम न ज़ियादा बस जो लोग अल्लाह व रसूल के बयान फ़रमाए हुए रूत्बे से हुज़ूर को बढ़ाते हैं वह यक़ीनन ग़ुलू में मुब्तला हैं और जो उससे आप का मरतबा घटाते हैं वह हुज़ूर की तौहीन के बदतरीन मुजरिम हैं। हम

(शेष पृष्ठ २० पर)

ख़बर की तहक़ीक़ात करना

अब्दुर्रशीद खैरानी

इस दुनिय्या में लोगों को कामयाबी से अपनी जिन्दगी गुजारने के लिए अल्लाह ताआला ने अपनी किताब कुरआन पाक में नसीहते बयान की है और अल्लाह के रसूल सलल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस पर पूरा अमल करके हमें रिदखा दिया है? अल्लाह तअला यह हुकुम दे रहा है कि कोई भी खबर या बात सुनकर उसकी तहकीक व जानकारी प्राप्त किये बिना उस पर अमल नहीं करना चाहिए।

कुरआन की सूरः हुजरात की आयत नम्बर ६ में फरमान है कि– ऐ इमान वालों ! अगर तुम्हें कोई फासिक खबर दे तो तुम उसकी अच्दी तरह तहकीक कर लिया करो ऐसा न हो कि नादानी में किसी कौम को नुकसान पहुंचा दो, फिर अपने किये पर परेशानी शर्मिन्दगी उठानी पड़े। इस आयत में बताया गया है कि किसी झूठे, बदकार या अफवाह फैलाने वाले शख्स की बातों पर भरोसा नहीं करना। इस आयत में मोमिनों को एक बुनियादी उसूल बताया गया है? कहा गया है कि किसी भी किस्म की खबर या जानकारी किसी से मिलने पर उस पर बिना जांच पड़ताल के मानना नहीं चाहिए? पहले इस बात की हकीकत पर गौर करना चाहिए, ऐसी खबर की पूरी तरह छानबीन करनी चाहिए? थोड़ा सा वक्त लगाकर इसकी सच्चाई की खोज करना चाहिए। बिना खोज खबर किये और खबर की सच्चाई की जानकारी लिए कभी भी किसी भी किस्म की पहल नहीं करनी चाहिए और न ही इस खबर को दूसरो को बतानी चाहिए क्योंकि अगर यह खबर झूठी होगी तो खुद भी झूठ फैलाने के गुनहगार होंगे। जब तक मिली खबर की पूरी जांच पड़ताल से असल वाकिआ साफ तौर पर मालूम न हो जाए कोई हरकत नहीं करनी चाहिए हो सकता है कि किसी ने कोई झूठ बात कर दी हो या खुद इसमें गलती हो गयी हो और इस खबर को सही जान कर कोई कार्यवाही कर बैठे तो सही बात मालूम होने पर पछताना और शर्मिन्दा होना पड़े और नुकसान भी हो। ऐसे शख्स की बात पर भी भरोसा नहीं करना चाहिए जिसे पहले से न जानते हो? इसलिऐ फासिक शख्स की खबर को मानने से मना किया गया है वैसे भी किसी भी शख्स से मिली खबर या जानकारी की जांच करनी जरूरी और फायदे मन्द होती है।

हजरत कतादह रहमतुल्लाहि अलैह कहते हैं कि हुजूर सलल्लाहों अलैहिवसल्लम का फरमान है कि तहकीक और तलाश बुर्दबारी (बरदाश्त करने) और दूरबीनी (दूर की सोच) अल्लाह की तरफ से है और उजलत और जल्दबाजी शैतान की तरफ से है। हजरत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रदिअल्लाह अन्हू फरमाते हैं कि शैतान आदमी के भेष में काम करता है वह लोगों के पास आकर झूठी बातें बयान करता है, फिर लोग जुदा (अलग) हो जाते हैं यानी बैठक खत्म हो जाती है तो इनमें से एक आदमी कहता है कि मैंने यह बात एक आदमी से सुनी है जिसका चेहरा तो मैं पहचानता हूं लेकिन नाम नहीं जानता? इस लिये मुसलमान को कोई बात बगैर तहकीक़ के कहने से रोका गया है क्योंकि शैतान का काम हमेशा समाज में फसाद फैलाने का होता है। बिना जांच पड़ताल के जमाअत (समाज) में बातें बयान करने की आदत चल पड़े तो समाज में बहुत ही ज्यादा फसाद व खराबी फैल सकती है लिहाजा खबर देने वाले और खबर के बारे में संजीदगी के साथ गौर व जांच पड़ताल कर लेना जरूरी है।

कभी किसी शख्स को किसी दूसरे शख्स या गिरोह में नाराजगी होती है तो अपने दिल की जलन व इन्तिकाम व बदला लेने या समाने वाले को नीचा दिखाने या बेइज्जत करने की मंशा से कोई झूठी बात फैलाने की कोशिश करता है इसलिय जरूरी है कि हर बात की छानबीन करने एवं उसका मक्सद जानने के बाद ही भरोसा करना चाहिए और दूसरे को बताना चाहिए अगर बात झूठी हुई तो और उसे दूसरों से बयान कर दिया तो इस तरह सुनी बात को दूसरों को बताने वाला भी झूठ कहने वाला होगा और गुनहगार होगा। इस लिए इस मसले पर संजीदगी से गौर करके अपने आप को गुनहगार होने से बचाना चाहिए।

किसी के पीठ, पीछे उसकी बुराई मत करो कि यह ग़ीबत है।

आम होता करपशन (भ्रष्टाचार)

आज की तारीख में हिन्दुस्तान और करपशन दो अदल–बदल होने वाले शब्द हैं। हिन्दुस्तानी शहरी ज़िन्दगी के किसी भी कोने में झांक लीजिए करपशन एक आवश्यक तत्व के तौर पर वहां मौजूद होगा। लोकतांत्रिक संस्थाओं की परिकल्पना में करपशन से नजात शामिल थी, लेकिन जो व्यवहारिक परिदृश्य उभरा वह इस परिकल्पना के बिल्कुल विपरीत था। जैसे –जैसे हमारे लोकतंत्र का कारवां बढ़ता गया वैसे–वैसे करपशन की जड़े मज़बूत होती गईं और उसकी डालें उन मैदानों में भी दाखिल हो गयी जो सामान्यतः करपशन से अछूते समझे जाते थे। आज हालत यह है कि जो करपशन के खिलाफ मुहिम चलाता नज़र आता है वह भी करपशन की गोद में बैठा पाया जाता है। हाल ही में ट्रॉन्सपेरेन्सी इन्टरनेशनल इण्डिया (टी आई आई) हिन्दुस्तान में करपशन का जाइज़ २००५' नाम से एक रिपोर्ट जारी की, जिस में बताया गया है कि २००४–०५ में हिन्दुस्तानी अवाम ने अपने छोटे बड़े कामों के लिए लगभग इक्कीस हजार करोड़ रूपये करपशन की नज़र किये। टी आई आई के अनुसार अरबों खरबों रिश्वत हज़म करने वाले विभागों में शैक्षिक संस्थायें, पुलिस, रेवेन्यू, विभाग, न्याय पालिका, विद्युत विभाग, अस्पताल, आयकर विभाग, जनसाधारण विपणन प्रणाली और जल निगम सूची में सबसे ऊपर हैं। इसमें चौंकाने वाली बात यह है कि आम राय के विपरीत उच्च स्थान शैक्षिक संस्थाओं ने प्राप्त किया है। इन संस्थाओं ने लगभग चार हजार एक सौ सैंतीस करोड़ रूपये की रिश्वत लेकर सर्वोच्च स्थान प्राप्त किया है तो क्रमशः पुलिस और लैंड रेवेन्यू विभाग से होते हुए अरबों रिश्वत लेने वाले विभागों में जल निगम एक सौ तैंतालिस करोड़ रूपये की रिश्वत कमा पाया।

इस समय करपशन से कमाई करने की दौड़ खुली अर्थ व्यवस्था की तिजारती दौड़ से कहीं अधिक तीव्रगति से चल रही है। भ्रष्टाचार निरोध की सरकारी संस्थायें स्वयं करपशन में निडरता के साथ लिप्त हैं फिर भी कोई सीनियर एडमिन्स्ट्रेटिव अफसर सौ करोड़ करपशन की कमाई के कारण चर्चा में आ जाता है तो कभी कोई पुलिस वाला दो सौ रूपये की रिश्वत के लिये चर्चा का विषय बन जाता है, लेकिन हैरानी की बात है कि अब लोगों को न सौ रूपये की रिश्वत परेशान करती है और न सौ करोड़ की। इस प्रकार की दुर्घटनाओं को अब करपशन की व्यापक स्वीकारोक्ति के पेशे नज़र कभी –कभी करपशन की चूक से उजागर होने वाली एक मामूली घटना मानकर भुला दिया जाता है। इसलिये न कोई जन आन्दोलन खड़ा होता है और न कहीं नाराज लोगों का गुस्सा सामने आता है। ऐसे में जब कोई न्यूज चैनल बड़े–बड़े मगरमच्छों से भरे तालाब में अपना छोटा सा कांटा डालकर छोटी–छोटी मछलियों को पकड़ कर हवा में लहरा कर दिखाता है, तो एक हास्यास्पद स्थिति पैदा हो जाती है। यह हॅसोढ़पन के सामने एक अत्यंत छोटे और अप्रभावी प्रयास के कारण पैदा होती है। दुर्भाग्य यह है कि हिन्दुस्तानी शहरी समजा करपशन की आम मानसिकता के संगीन खतरों का विश्लेषण नहीं कर पा रहा है। शिक्षा में एक विद्यार्थी के प्रवेश से लेकर परीक्षा में पास होने तक, एक स्कूल के निर्माण से लेकर एक उस्ताद की बहाली तक शिक्षा के पवित्र सामाजिक उद्देश्य के एक खुले कारोबार में बदल जाने तक की प्रक्रिया में पूरी मानव व्यवस्था के ढह जाने के खतरनाक संकेत निहित हैं। इससे पहले कि सब कुछ तबाह हो जाये हमें होशियार हो जाना चाहिए?

(दैनिक उर्दू राष्ट्रीय सहारा, लखनऊ से साभार)

प्रस्तुतिः हसन अन्सारी

मुस्लिम औरत का नामहरम मर्द के साथ तन्हाई हराम है

बेपर्दगी बड़ा गुनाह है, मुस्लिम औरत के लिए ना महरमों के साथ किसी आफिस में काम करना नाजाइज़ है, किसी नामहरम की साइकिल या मोटर साइकिल पर बैठकर चलना औरतों के लिए नाजाइज़ है।

सहाबा क्या हैं कौन हैं?

हैदर अली नदवी

इन्सानों के मार्गदर्शन के लिए अल्लाह पाक ने अपने रसूलों (संदेशठाओं) को भेजा और इस मार्ग दर्शन के कार्य में साथ देने के लिए जिन पाक (पवित्र) लोगों को चुना उनको "सहाबा" (साथी) कहते हैं अल्लाह पाक ने प्रत्यक नबी को " हवारियीन" सहाबा की जमाआत अता की है– जो नबी पर ईमान लाए और उनके हर आदेश का पालन किया– यह सहाबा–ए किराम (रजि.) नबी और उम्मत के मध्य दीन पहुंचाने का वास्ता हैं– अंबिया अलैहि को अल्लाह ने अहकामात दिये और अंबिया (अ.) ने उन अहकामता आदेशों को सहाबा के जीवन में कार्यान्वित करके कियामत तक इन्सानों के लिए आदर्श बना कर प्रस्तुत किया ये दीन हम तक अल्लाह के नबी मुहम्मद (स.) की नुबूवत के नूर और सहाबा रजि. के पाक जीवन के सांचे में ढ़ल कर पहुंचा है– इनमें से किसी भी कड़ी पर विश्वास न करना, दीन को संदेह में डालने के बराबर है। अल्लाह ने दीन को फैलाने के लिए जिन माध्यमों को चुना है वह सब सम्मानीय और भरोसे के क़ाबिल हैं यह मानना ईमान का भाग है, अगर कोई व्यक्ति जिब्रील (अ.) की दयानत दारी पर शक करे तो उसका ईमान ही खत्म हो जाएगा अगर कोई मुहम्मद सल्ल की रिसालत का मुन्किर हो तो ईमान से ख़ारिज होगा, इसी प्रकार अगर कोई सहाबा को या उनमें से किसी को मोमिन न समझे तो वह अपना ईमान कैसे साबित कर सकेगा? इसलिये कि ईमान की तालीम और अल्लाह की किताब हम तक सहाबा द्वारा ही पहुंची है। ताजदरे मदीना मुहम्मद सल्ल ने फरमा दिया मेरे सारे सहाबा सितारों की तरह है तुम उनमें से जिसका भी मार्ग अपना लोगे तो सफलता का मार्ग पा जाओगे। ईमान व इस्लाम को समझने के लिए आवश्यक है कि सहाबा रजि. पर भरोसा किया जाए दिल में उनका प्रेम हो, सहाबा रजि. पर संदेह करना दीन को मश्कूक (संदिग्ध) करना है। यही कारण है कि हमेशा इस्लाम के दुश्मन यहूद व नसारा और उनके एजेण्टों ने सहाबा के जीवन को दाग़दार बनाने की कोशिश की है ताकि क़ौम का भरोसा सहाबा से उठ जाए, तो कुरआन के आदेशों और नबी सल्ल के फरमानों में कतर व्योंत करना आसान हो जाए और इस्लाम के रूप को बिगाड़ने का रास्ता साफ हो जाए– क्योंकि दीन नबी सल्ल ने सर्व प्रथम सहाबा रजि. को समझाया सहाबा रजि. ने नबी की संगत में जो दीन सीखा वह यक़ीनन पूर्ण और शुद्ध है। उसी कामिल और पूर्ण दीन को सहाबा रज़ि० ने उम्मत को प्रस्तुत किया। उम्मत जब तक सहाबा रजि वाले पूर्ण व शुद्ध दीन पर चलती रहेगी तब तक किसी मुनाफिक़ (कपटी) और इस्लाम के दुश्मन को हिम्मत नहीं कि इस्लाम की शक्ल को बिगाड़ सके। आज सबाई चेलों और यहूद व उनके एजेन्टों की पूरी टीम इस बात पर तुली हुई है कि मुसलमानों के दिलों से सहाबा रजि. की अज़्मत (सम्मान) मिटा दी जाए ताकि सहाबा रजि. पर से लोगों का भरोसा खत्म हो जाए। आज जहां–जहां बिद्अतें और जाहिलाना व मुश्रिकाना रस्में पनप रही हैं वहां अगर देखा जाए तो सहाबा रजि. वाले अमलों को छोड़ने ही से ऐसा हो रहा है। अबू बक्र व उमर व उस्मान व अ़ली, आइशा व खदीजा मुआविया व खालिद को लोग भूल बैठ हैं हालांकि सहाबा रजि. दीन की प्रथम बुनियाद हैं कुरआन का कोई पारा कोई रूकुअ कोई मंजिल सहाबा रजि. के जिक से खाली नहीं तो फिर कुर्आन ने जिनको रज़ियाल्लाहु अन्हुम कह दिया हो जिनको जबाने रिसालत सितारों के मिस्ल बता रही हो वह सब हमारे रहनुमा हैं। बाज़ सहाबा के बारे में आपने खास तौर पर फरमाया जैसे फ़रमायाः अगर मैं किसी को अपना खलील बनाता तो अबू बक्र को बनाता! वह मेरे भाई और दोस्त हैं कही इर्शाद है अगर मेरे बाद कोई नबी होता तो वह उमर होते कहीं उस्मान रजि. के मनाक़िब बयान किए कहीं अली का जिक है कहीं हजरात हसनैन व मुआविया रजि. के फजाइल हैं तो कही आइशा व फातिमा रूकय्या व जैनब के मरातिब बयान किए जा रहे हैं कहीं पर प्यारे आक़ा खबरदार कर रहे है कि खबरदार–खबरदार! ऐ मुसलमानो यहूदी एजेन्टों से होशियार रहना मेरी आंखों के तारे सहाबा के बारे में परवरदिगार से डरते रहना उनकी तौहीन मत करना, उन पर उंगली मत उठाना उनको लानत व मलामत का निशाना मत बनाना। फरमाया मेरे सहाबा रज़ि० से महब्बत होगी तो ये मेरी मोहब्बत की वजह से होगी और इनसे बुग्ज व नफरत होगी तो उस बद्दीन के दिल में मेरी नफरत होगी।

●●●

आर्यन सभ्यता

इतिहास के पन्नों से

आर्य कौन थे– आर्य संस्कृत भाषा का शब्द है इसका शाब्दिक अर्थ होता है श्रेष्ठ अथवा अच्छे कुल में उत्पन्न। परन्तु व्यापक अर्थ में आर्य एक जाति का नाम है जिनके रूप रंग आकृति तथा शरीर का गठन विशेष प्रकार का होता है यह लोगा लम्बे डील–डौल के, हृदय–पुष्ट गोरे रंग के लम्बी नाक वाले और वीर तथा साहसी होते थे। भारत, ईरान तथा यूरोप के विभिन्न देशों के निवासी इन्हीं की सन्तान माने जाते हैं सबसे पहले आर्य शब्द का प्रयोग वेदों के लिखने वालों ने किया था इन आचार्यो ने अपने को आर्य और अपने विरोधियों को दस्यु अथवा दास कहना आरम्भ किया। अपने को आर्य कहने का कारण यह जान पड़ता है कि ये लोग अपने को अनार्यो से अधिक श्रेष्ठ तथा कुलीन समझते थे। आर्य लोग शीतोष्ण कटिबंध के निवासी थे और दूध, मांस तथा गेहूं इनके खाद्य–पदार्थ थे। ठंडी जलवायु में हरने तथा पोश्टिक पदार्थो के खाने के कारण यह बड़े ही बलिष्ठ, वीर तथा साहसी होते थे। यह लोग अपने जीवन के आरम्भिक काल में बड़े पर्यटनशील थे और एक स्थान से दूसरे स्थान पर धूमा करते थे। यह लोग पशुओं को पालते थे और कृषि करना भी जानते थे। यह लोग बड़े युद्ध–प्रिय होते थे, और अपने हथियारों को बड़ी चतुरता से चला सकते थे। प्रकृति से इन लोगों का बड़ा प्रेम था और हर प्रकार के विचारों तथा भावों को ग्रहण करने के लिये लोग उद्यत रहते थे।

आर्यो का आदि देश– आर्यो का मूल निवास स्थान कहां था, यह एक अत्यंत विवाद–ग्रस्त प्रश्न है इसी से स्मिथ महोदय ने लिखा है, "आर्यो के मूल स्थान या निवास स्थान की विवेचना जान–बूझकर नहीं की गई है, क्योंकि इस विषय पर कोई भी धारणा स्थापित नहीं हो सकी है।" इनके आदि–देश के अन्वेषण करने में विद्वानों के भाषा–विज्ञान, पुरातत्व तथा जातीय विशेषताओं का सहारा लिया है। चूंकि इन विद्वानों ने विभिन्न साधनों का सहारा लिया है और विभिन्न दृष्टिकोणो से इस समस्या पर विचार किया है तएव यह लोग विभिन्न निष्कर्षो पर पहुंचे है और आर्यों के आदि देश के संबंध में चार सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया है, अर्थात (१) यूरोपीय सिद्धान्त, (२) मध्य ऐशिया सिद्धांत (३) आर्कटिक प्रदेश का सिद्धांत तथा (४) भारतीय इतिहास।

(१) यूरोपीय सिद्धांत– भाषा तथा संस्कृति की समानता के आधार पर कुछ विद्वानों ने यूरोप को आर्यो का आदि देश बतलाया है। आर्य लोग सबसे अधिक संख्या में भारतवर्ष, ईरान तथा यूरोप के विभिन्न देशों में पाये जाते है।। इनकी भाषा में बड़ी समानता पायी जाती है। पितृ, पिदर, पेटर तथा फादर और मातृ, मादर, मेटर तथा मदर शब्द एक ही अर्थ में संस्कृत, फारसी, लैटिन तथा अंग्रेजी भाषाओं में प्रयोग किये जाते हैं इनसे ऐसा प्रतीत होता है कि इन भाषाओं के बोलने वाले कभी एक स्थान पर रहते रहे होंगे, अब यह जान लेना आवश्यह है कि यूरोप में कौन सा स्थान आर्यो का आदि–देश हो सकता है। डॉ पी. गाइल्स के विचार में आस्ट्रिया हंगरी का मैदान आर्यो का आदि देश था क्योंकि य मैदान समशीतोष्ण कटिबंध में स्थित है और वह सभी पशु तथा वनस्पति अर्थात् गाय, बैल, घोड़ा, कुत्ता, गेहूं जौ आदि इस मैदान में पाये जाते है, जिससे प्राचीन घास आर्य परिचित थे। पेन्का ने जर्मन प्रदेश को और नेहरिंग ने दक्षिण रूस के घास के मैदान को आर्यो का आदि–प्रदेश बतलाया है। जिन विद्वानों ने यूरोप को आर्यो का आदि देश बतलाया है उन्होंने अपने मत के समर्थन में कई तर्क भी उपस्थित किये हैं उनका कहना है कि यूरोप का यह मैदान शीतोष्ण कटिबंध में स्थित है। जहां उन सभी पशुओं तथा वनस्पतियों का होना सभव है जिनका उल्लेख आर्य–साहित्य में किया गया है। यह मैदान उन स्थानों के निकट है जहां यूरोप के आर्यो की भिन्न–भिन्न शाखाएं निवास कर रही है। चूंकि यूरोप में आर्यो की संख्या एशिया के आर्यो से अधिक है, अतएव यह संभव है कि आर्य लोग पश्चिम से पूर्व की ओर गये हों इस क्षेत्र में कोई ऐसे सघन वन मरूभूमि अथवा पर्वत मालाएं नहीं हैं जिन्हें पार नहीं किया जा सकता, अतएव पश्चिम की ओर से पूर्व को जाना अत्यंत सरल है। यूरोपीय सिद्धांत के समर्थकों को यह कहना है कि प्रव्रजन प्रायः पश्चिम से पूर्व को हुआ है, पूर्व से पश्चिम को नहीं।

(२) मध्य एशिया का सिद्धांत– जर्मन विद्वान मैक्समुलर ने मध्य–एशिया को आर्यो का आदि–देश बतलाया है। मैक्समुलर महोदय का कहना है कि आर्य–जाति तथा उसकी सभयता एवं संस्कृति का ज्ञान हमें वेदों तथा अवेस्ता

से होता है कमशः भारतीय तथा ईरानी आर्यो के धर्म ग्रन्थ है। इन ग्रन्थों के अध्ययन से स्पष्ट हो जाता है कि भारतीय तथा ईरानी आर्य बहुत दिनों तक एक साथ निवास करते थे। अतएव इनका आदि–देश भारत तथा ईरान के सन्निकट कहीं रहा होगा वहीं से एक शाखा ईरान को, दूसरी भारतवर्ष को और तीसरी यूरोप को गई होगी वेदों तथा अवेस्ता से हमें ज्ञात होता है कि प्राचीन आर्य पशु पालते थे तथा कृषि करते थे अतएव ये एक लंबे मैदान में रहते रहे होंगे। ये लोग अपने वर्ष की गणना हिम से करते थे, जिससे य स्पष्ट है कि वह प्रदेश शीत– प्रधान रहा होगा। कालांतर में ये लोग अपने वर्ष की गणना शरद् से करने लगे जिसका यह तात्पर्य है कि लोग बाद में दक्षिण की ओर चले गये जहां कम सर्दी पड़ती थी और सुन्दर वन ऋतु रहती थी। ये लोग घोड़े रखते थे जिन्हें वे सवारी के काम में लाते थे और रथों में जोतते थे। गेहूं तथा जौ का भी उल्लेख आर्य–ग्रन्थों में मिलता है। इन तथ्य के आधार पर मैक्स मूलर महोदय इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि मध्य ऐशिया ही आर्यों का आदि देश था क्योंकि ये सभी चीजें वहां पर पाई जाती हैं। यहां पर एक बात यह भी ध्यान देने योग्य है कि बाद में शक, कुषाण, हूण आदि जातियां यहीं से भारत गई थीं। मध्य एशिया से ईरान, यूरोप तथा भारतवर्ष तीनों जगह जाना संभव तथा सरल भी है। यह संभव है कि जन–संख्या की वृद्धि भोजन तथा चारे के अभाव अथवा प्राकृतिक परिवर्तनों के कारण ये लोग अपनी जन्मभूमि को त्यागने के लिए विवश हो गये हो। मध्य एशिया में जल का न होना, भूमि को अनुपजाऊ होना तथा आर्यो का वहां से निर्मल हो जाना आदि इस मत के स्वीकार करने में कठिनाई उत्पन्न करते हैं क्योंकि आर्यो के आदि देश में जल की कमी न थी और वह बड़ा उपजाऊ तथा सम्पन्न प्रदेश था।

(३) आर्कटिक प्रदेश का सिद्धान्त – लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक के विचार में उत्तर ध्रुव–प्रदेश आर्यो का आदि देश था। अपने मत के समर्थन में तिलक जी ने वेदों तथा अवेस्ता का सहारा लिया है। ऋग्वेद में छः महीने की रात तथा छः महीने के दिन का वर्णन है। वेदों में उषा की स्तुति की गई जो बड़ी लम्बी होती थी। ये सब बातें केवल उत्तरी ध्रुव प्रदेश में पायी जाती हैं। अवेस्ता में यह भी लिखा है कि उनके देवता अहुरमन ने जिस देश का निर्माण किया था उसमें दस महीने सर्दी और केवल दो महीने गर्मी पड़ती थी। इससे यह पता लगता है कि प्रदेश कहीं उत्तरी ध्रुव–प्रदेश के निकट ही रहा होगा। अवेस्ता में यह भी लिखा है कि उस प्रदेश में एक बड़ा तुषारापात हुआ जिससे उन लोगों को अपनी जन्मभूमि त्याग देनी पड़ी। तिलक जी का कहना है कि जिस समय आर्य लोग उत्तरी ध्रुव प्रदेश में रहते थे उन दिनों वहां पर बर्फ न थी और वहां पर सुहावना बसंत रहता था। कालांतर में वहां पर बड़ें जोरों की बर्फ गिरी और संभवतः इसी का उल्लेख अवेस्ता में किया गया। इस तुषारापात के कारण आर्यो ने अपनी जन्म–भूमि को त्याग दिया और उनकी एक शाखा ईरान को और दूसरी भारतवर्ष को चली गई। यहां से चले जाने पर भी वे लोग अपनी मातृ भूमि का विस्मरण न कर सके और इसी से उन्होंने उसका गुणगान अपने धर्म–ग्रन्थों में किया है। तिलक जी के मत के बहुत कम समर्थक है।

(४) भारतीय सिद्धान्त– कुछ विद्वानों के विचार में भारत आर्यो का आदि देश था और वे कहीं बाहर से नहीं आयें थे जैसा कि डॉ० राधा कुमुद मुखर्जी ने लिखा है, "अब आर्यों के आकमण और भारत के मूल निवासियों के साथ उनके संघर्ष की परिकल्पना को धीरे–धीरे त्याग दिया जा रहा है।" श्री अविनाश चन्द्र दास के विचार में सप्त सिंधु ही आर्यो का आदि देश था। कुछ अन्य विद्वानों के विचार से काश्मीर तथा गंगा का मैदान आर्यों का आदि देश था। भारतीय सिद्धांत के समर्थकों का कहना है कि आर्य–ग्रन्थों में आर्य के कहीं बाहर से आने की चर्चा नहीं है और न अनुश्रूतियों में ही कहीं बाहर से आने की ओर संकेत मिलता है। इन विद्वानों का यह भी कहना है कि वैदिक साहित्य आर्यो का आदि साहित्य है। यदि आर्य सप्त–सिन्धु में कहीं बाहर से आये तो इनका साहित्य अन्यंत्र क्यों नहीं मिलता। ऋग्वेद की भौगोलिक स्थिति से भी यही प्रकट होता है कि ऋग्वेद के मन्त्रों की रचना करने वालों का मूल निवास स्थान पंजाब तथा उसके समीप का ही देश था। आर्य साहित्य से हमे यह पता लगता है कि प्राचीन आर्य गेहूं तथा जौ का बहुत प्रयोग करते थे और यही उनका खाद्यान्न था। यह ध्यान देने की बात है पंजाब में इन दोनों अन्नों का ही बाहुल्य है। अतएव यही आर्यो का आदि देश रहा होगा। इस मत को स्वीकार करने में सबसे बड़ी कठिनाई यह है कि ऐतिहासिक युग में बाहर से भारत में विभिन्न जातियो के आने के प्रमाण मिलते हैं परंतु एक भी जाति के भारत से बाहर जाने का प्रमाण नहीं मिलता। दूसरी कठिनाई यह है कि हड़प्पा तथा मोहन जोदड़ों की सभ्यता आर्य सभ्यता से भिन्न तथा अधिक प्राचीन है। जब सिन्धु प्रदेश की प्राचीनतम सभ्यता अनार्य थी तब सप्त–सिन्धु कैसे आर्यो का आदि देश हो सकता है।

निष्कर्षः– उपयुक्त विवरण

से यह स्पष्ट हो जाता है कि आर्यो के आदि देश के सम्बन्ध में जितने सिद्धांत प्रतिपादित किये गये हैं वे सभी संदिग्ध हैं, क्योंकि किसी भी सिद्धांत के समर्थन में अकाट्य तर्क उपस्थित नहीं किये जा सके हैं।

आर्यो का विस्तार– यद्यपि आर्यो के मूल निवास–स्थान का ठीक–ठीक पता नहीं लग सका है परन्तु इतना तो निश्चित है कि अन्त में जनसंख्या में वृद्धि हो जाने तथा आवश्यकताओं की पूर्ति न होने के कारण उन्हें अपना आदि देश त्याग देना पड़ा। यह भी निश्चित है कि अपनी जन्मभूमि को छोड़ कर वे किसी निर्जन तथा अनुपजाऊ प्रदेश में नहीं गये वरन् वे जहां गये वहां की भूमि उपजाऊ थी और वहां के निवासियों के साथ इन्हें संघर्ष करना पड़ा। यही मूल निवासी अनार्य कहलाये क्योंकि वे डील–डौल, रूप रंग, रहन–सहन आदि में आर्यो से भिन्न थे। चूंकि आर्यो ने अनार्यो को परास्त कर उन्हें अपना दास या सेवक बना लिया, अतएव आर्यो का अनार्यो को दास अथवा दस्यु के नाम से भी पुकारा है। जब आर्यो ने अपने मूल स्थानों को त्यागा तब वे तीन प्रमुख शाखाओं में विभक्त हो गये। उनकी एक शाखा पश्चिम की ओर बढ़ी और धीरे–धीरे वह यूनान में पहुंच गई; कालान्तर में यह लोग यूनानी आर्य कहलाने लगे और यहीं से वे लोग यूरोप से अन्य देशों में फैल गये आर्यो की दूसरी शाखा पर्यटन करती हुई ईरान पहुंची जिसे फारस भी कहते हैं लोग ईरानी आर्य कहलाये। तीसरी शाखा का प्रसार भारतवर्ष में हुआ ईरान तथा भारतीय आर्यो में बड़ी समानता है जिससे यह अनुमान लगाया गया है कि आज की यह दोनों शाखाएं कभी एक ही स्थान पर निवास करती रही होंगी। इन्द्र, मिशन वरूण, अग्नि आदि जो भारतीय आर्यो के देवता हैं, इरानी आर्यो के भी देवता थे ईरानी आर्यो का धर्म–ग्रंथ अवेस्ता कहलाता है और इनके प्रधान देवता अहुरमन है। विद्वानों की धारणा है कि अहुर शब्द का रूपान्तर असुर है जिसका उल्लेख ऋग्वेद में बार–बार किया गया है। संभवतः देवासुर संग्राम, जिसका वर्णन भारती आर्यो के साहित्य में मिलता है, ईरानी तथा भारीय आर्यो का ही संघर्ष था। इस प्रकार भारतीय आर्य देव और ईरानी आर्य असुर कहलाये। अब भारतीय आर्यो के भारत के अन्य भागों में प्रसार का परिचय दे देना आवश्यक है।

सप्त सिन्धु में निवास–

(१) भारतीय आर्य चाहे भारत के मूल निवासी रहे हों और चाहें विदेशों में भारत से आये हों परन्तु इतना तो निश्चित है कि प्रारंभ में वे सप्त सिन्धु नामक प्रदेश में निवास करते थे और यही से वे शेष भारत में फैले सप्त सिन्धु वही प्रदेश था जिसे आजकल पंजाब के नाम से पुकारा जाता है। पंजाब का शुद्ध नाम हैं पंचाम्बु जिसका अर्थ है पच अम्बु अर्थात पांच जलों अथवा नदियों का देश। सप्त–सिन्धु का भी अर्थ है, सात नदियों का देश। उन दिनों इस प्रदेश मइें सात नदियां पाई जाती थी। उसमें से पांच तो अब भी विद्यमान है और दो नदियां जिसका नाम सरस्वती तथा दृशद्वती था, विलुप्त हो गयी है। प्राचीन आर्यो ने अपने ग्रन्थों में इसी सप्त–सिन्धु का गुणगान किया है। इसी जगह उन्होंने वेदों की रचना की थी और यही पर उनकी सभ्यता तथा संस्कृति का सृजन हुआ था। यहीं से भारतीय आर्य शेष भारत में फैले थे।

(२) ब्रह्मावर्त में प्रवेश –सप्त–सिन्धु से आर्य लोग पूर्व की बढ़े सप्त–सिन्धु से प्रस्थान करने के इनके दो प्रधान कारण हो सकते है। प्रथम कारण यह हो सकता है कि इनकी जनसंख्या में वृद्धि हो गई, जिससे इनहें नये स्थान को खोजने की आवश्यकता पड़ी और दूसरा कारण यह हो सकता है कि अपनी सभ्यता तथा संस्कृति का प्रसार करने के लिये लोग आगे बढ़े। सप्त–सिन्धु से प्रस्थान करने का जो भी कारण रहा हो, इतना तो निश्चित है कि वे बड़ी मन्द गति से आगे बढ़े क्योंकि अनार्यो के साथ उन्हें भीषण संघर्ष करना पड़ा। अनार्यो से अधिक बलिष्ठ, वीर, साहसी तथा रणकुशल होने के कारण इन लोगों ने उन पर विजय प्राप्त कर ली और कुरूक्षेत्र के सन्निकट के प्रदेश पर उन्होंने अपना अधिकार स्थापित कर लिया। इस प्रदेश को उन्होंने 'ब्रह्मवर्त' के नाम से पुकारा है।

(३)ब्रह्र्षि देश में प्रवेश– अपने विरोधियों पर विजय प्राप्त कर लेने से आर्यो का उत्साह बहुत बढ़ गया और उन्होंने अपनी युद्ध–यात्रा जारी रक्खी। अब उन्होंने आगे बढ़ते हुए पूर्वी राजस्थान, गंगा तथा यमुना के दोआब तथा उसके निकटवर्ती प्रदेश पर अपना अधिकार स्थातिप कर लिया। इस सम्पूर्ण प्रदेश को उन्होंने ब्रह्मर्षि देश के नाम से पुकारा है।

(४) मध्य देश में प्रवेश– ब्रह्मर्षि देश पर अपना प्रभुत्व स्थापित कर लेने के बाद ये लोग आगे बढ़े और हिमालय तथा विन्ध्य–पर्वत के मध्य की भूमि पर इन्होंने अपना प्रभुत्व स्थापित कर लिया। इस प्रदेश का नाम आर्यो ने 'मध्य–देश' रक्खा।

(५) सुदूरपूर्व में प्रवेश– बिहार तथा बंगाल के दक्षिण–पूर्व का भाग आर्यो के प्रभाव से बहुत दिनों तक मुक्त रहा, परंतु अंत में उन्होंने इस भू–भाग पर भी अपना प्रभुत्व स्थापित कर लिया और सम्पूर्ण उत्तरी भारत को उन्होंने 'आर्यावर्त' के नाम से पुकारा

है।

(६) दक्षिणापथ में प्रवेश– विन्ध्य–पर्वत तथा घने वनों के कारण दक्षिण भारत में बहुत दिनों तक आर्यो का प्रवेश न हो सका। इन गहन वनों तथा पर्वत–मालाओं को पार करने का साहस सर्वप्रथम ऋषियों तथा मुनियों ने किया। कहा जाता है कि सबसे पहले अगस्त्य ऋषि दक्षिण–भारत में गये थे इस प्रकार आर्यो की दक्षिण–विजय केवल सांस्कृतिक विजय थी। यह राजनीतिक विजय न थी। धीरे–धीरे संपूर्ण दक्षिण–भारत में आर्य लोग पहुंच गये और उसके कोने–कोने में आर्य सभ्यता तथा संस्कृति का प्रचार हो गया। दक्षिण–भारत को आर्यो ने 'दक्षिण –पथ' के नाम से पुकारा है।

दस राजाओं का युद्ध– प्राचीन आर्यो का कोई विशाल संगठित राज्य न था वरन् वे छोटे–छोटे राज्यों में विभक्त थे जिनमें प्रायः संघर्ष हो जाया करता था। फलतः आर्यो को न केवल अनार्यों से युद्ध करना पड़ा वरन् उनमें आपस में भी युद्ध हो जाया करता था। ऋग्वेद में इस प्रकार के एक युद्ध का वर्णन है जिसे दस राजाओं का युद्ध कहा गया है। इस युद्ध का वर्णन इस प्रकार किया गया है। सरस्वती नदी के किनारे भारत नाम का एक राज्य था, जिस पर सुदास नामक राजा शासन करता था। विश्वामित्र इस राजा के पुरोहित थे। अनबन हो जाने के कारण सुदास ने विश्वामित्र के स्थान पर वशिष्ठ को अपना पुरोहित बना लिया। इससे विश्वामि. बड़े अप्रसन्न हुए और सुदास के विरूद्ध दस राजाओं को संगठित करके युद्ध छेड़ दिया। परंतु युद्ध में सुदास को ही विजय प्राप्त हुई। इसी प्रकार के अन्य युद्ध भी आर्यो में आपस में हुआ करते थे।

●●●

नारी स्वतंत्रता

श्यामा रानी

आज हर ओर नारी स्वतंत्रता की मांग है। नर नारी एकजुट होकर यही नाद लगा रहे हैं। इसका बड़ा लाभ भी सामने आया है। बहुत सी नारियां प्रधान बन गईं कुछ प्रमुख हो गईं। जिन्होंने पढ़ा लिखा उनमें से कई एम० एल० ए० और कई एम० पी० बन गईं कुछ ने और ऊंचे पद ग्रहण कर लिये, परंतु जब लोगों की मांगों और नादों को ध्यान मे रखते हुए समाज के पदाधिकारियों का अवलोकन करती हूं तो मन दुख से पीड़ित हो जाता है। निःसन्देह रिसिपशन के पद पर हम स्त्रियों ही को विराजमान पाते है, स्टेनोंग्राफर, हम को नारियां ही दिखाई पड़ती हैं, सेल्स गर्ल के स्थान पर भी सुन्दरीया ही बिठाई जाती है, एयर होस्टेज भी आप को सुन्दरियां ही दिखेंगी। आप का मन प्रसन्न हो जाएगा जैसे यह सारे पद नारियों के लिये बिना किसी मांग के हों। परंतु क्या कहूं और कैसे कहूं कि यह सरे आरक्षण सुन्दरियों के लिये हैं हम श्यमा रूपियो तथा कृष्णकृतियों को इन्टरव्यूय में असफल कर दिया जाता है। फिर इन सुन्दरियों के बास उन के साथ क्या व्यवहार करते है और इन रूपतियों की सेवाएं किस प्रकार की होती है? हम कहेंगे तो दंडित होंगे कोई सुन्द्री स्वयं ही समीक्षा कर ले हां मैं यह बताती हूं कि समीक्षा परिणाम इस प्रकार होगा। यदि उसकी सुन्दरता से आनंद लेने में उसके बास के अतिरिक्त किसी ने साझा लगाया तो सम्भव है कि उनमें से कोई एक अपने साझीदार को रासते से हटाने की चेष्ठा करेगा या फिर उस रूपवती की सुन्दरता को एसिड की बून्दें कुरूपता में बदल देंगी, और अगर सब निर्लज हो जाएं तो नारी स्वतंत्रता का अधिकांश लाभ केवल सुन्दरीयों को और केवल दस वर्षो के लिये मिलेगा, आयु ढलते ही और खाल पर झुर्रियां पड़ते ही छटनी कर दी जाएगी। मैं यह कदापि नहीं कहती कि सब बलात्कार का शिकार हो जाती हैं इसलिये कि रूपवतियों से आनंद लेने के संभोग के अतिरिक्त बहुत से प्रकार है जिन के पाए जाने पर पुलीस चालान करती है और जो स्वच्छ समाज में अप्रिय है। क्या नारी स्वतंत्रता का नाद करने वाले और उसकी मांग करने वालियां इस के संशोधन पर ध्यान देगी कुछ सुझाव मैं भी लिखती हूं। नारियों के कार्य के विभाग ही अलग हों जिनमें मर्दो का आवागन किसी स्तर पर न हो। एक मिनिस्ट्री ही नारी कल्याण के लिये आरक्षित हो जो नारियों के इन विभागों को देखे और उस की मंत्री कोई योग्य नारी हो। विशेषकर नारी शिक्षा हेतु शिक्षा विभाग जो प्रारंभिक शिक्षा से विश्वविद्यालय के स्तर तक हो। नारी चिकित्सा विभाग, नारी,पुलिस विभाग आदि। यदि नारियों के लिये विशेष विभाग खोलने में अड़चन हो तो दूसरा मेरा सुझाव है कि रिसेप्शन, स्टेशनोग्राफर, सेलिग, एयर होसटेज आदि पदों पर श्याम रूपियों के लिये ५० प्रतिशत आरक्षण हो। अगर ऐसा न हुआ तो इस भारतीय समाज से सर्वप्रथम धर्म विदा होगा तदोपरान्त पिता पुत्री, भाई बहन, माता पुत्र यहां तक कि पत्नी का वास्तविक स्नेह सदैव के लिये विदा हो जाएगा जिसे योरोप और अमरीका में देखा जा सकता है। ऐ भारतीय सज्जनो यदि तुम को यह प्रिय है तो मुझे इस परिस्थिति के आने से पहले मौत प्रिय है।

मिर्गी का जिन्न

अबू मर्गूब

मिर्गी के मरीज़ को अरबी में मसूअ़ कहा जाता है। ऐसे शख़्स को भी मसूअ़ कहते है जिस पर आसेबी असर हो। मिर्गी का मरज़ बड़ा ही ख़तरनाक होता है। इसकी मुख़्तलिफ़ (विभिन्न) शकलें होती हैं। कभी मरीज़ चीख़ मार कर गिर पड़ता है, हाथ पटकता है, मुंह से झाग निकलता है। कभी ऐसी हालत में ज़बान दान्त के नीचे आ कर ज़ख़्मी हो जाती है। फिर मरीज़ चुप होकर बेहोश पड़ा रहता है आध पौन घंटे के बाद होश आता है। कभी मरीज़ चीख़े बिग़ैर बदन की थरथराहट के साथ बेहोश हो जाता है, फिर थोड़ी देर के बाद होश आ जाता है। पानी से गुज़रते वक़्त, कुंए से पानी निकलते वक़्त, आग के पास काम करते वक्त अगर यह दौरा पड़ जाए तो जान ही का ख़तरा हो जाए, इसलिये इस मरज़ को बहुत ही ख़तरनाक समझा जाता है। आमतौर से कहा जाता है कि यह मरज़ भी शैतान के असर से होता है इसी लिये अरबी में इस मरज़ को सरअ़ और मरीज़ को मसूअ़ कहते हैं यानी वह जिस पर शैतान का असर हो सकता है यह मरज़ इन्सान पर दो तरह से आता हो, एक यह कि शैतान इन्सान के दिमाग में घुस कर ऐसा असर डालता हो कि मिर्गी के अस्बाब (कारण) पैदा हो जाते हों। यह बात इसलिये कही गयी है कि साइन्सी तरक़्क़ी के इस दौर में दिमाग़ के भीतर का भी फोटू लिया जाता है। जिससे पता चल जाता है कि दिमाग़ में क्या ख़राबी पैदा हुई है। अब तक कोई ऐसा मसूअ़ (मिर्गी का मरीज़) इल्म में नही आया जिसके दिमाग़ के एक्सरे फोटू में कोई ख़राबी न पाई गयी हो। दूसरे यह कि इन्सान के दिमाग़ में पैदाइशी ख़राबी या किसी ख़रिजी (वाह्य) सबब से यह मरज़ पैदा हो गया हो।

दोनों सूरतों में दुआ़ और तअ़वीज़ मुफ़ीद हैं मगर उनही पर भरोसा न करलें बल्कि लग कर इलाज करना चाहिये। अब मिर्गी का एलोपैथिक इलाज यक़ीना सा हो गया जबकि मरज़ पुराना न हुआ हो कभी मरीज़ इब्तिदाई मर्हले (प्रारंभिक अवस्था) में होती है और दुआ करते हैं तअ़वीज बान्धते हैं तो बिन दवा के मरीज़ अच्छा हो जाता है कारण यह कि अगर शैतान के असर से दिमाग़ में ख़राबी आ रही होती है तो दुआ तअ़वीज से शैतान भाग जाता है और मरीज़ अच्छा हो जाता है। कभी पैदाइशी तौर पर आ रही ख़राबी दुआ के सबब अल्लाह का फ़ज़्ल होता है और मरीज़ अच्छा हो जाता है और यह हर अवस्था में सम्भव है लेकिन जब अल्लाह चाहेंगे तभी। बेशक दुआ से भूख ख़त्म हो सकती है लेकिन हर भूखा शख़्स दुआ में खाना मांगता, खाना ढून्ढता और खाना खाकर भूख मिटाता है, बस मिर्गी का इलाज भी कीजिए और दुआ भी।। कभी हल्के मरज़ को मरीज़ की तबीअ़त ही ठीक कर लेती है। उसका मन यूं बनता है कि दुआ हुई है, तअ़वीज़ पहना है अब तो मरज़ को जाना ही है बस हल्का मरज़ जाता रहता है इसको नफ़्सियाती इलाज कहते है। लेकिन अगर मिर्गी पर काफ़ी वक़्त गुज़र गया है और मिर्गी ख़ासी पुरानी हो गई है तो अब उस का कोई इलाज नहीं। अल्बत्ता यह देखा गया है कि कभी कोई मरीज़ ख़ुद से अच्छा हो गया, हो सकता है जैसे मरज़ पैदा हुआ उसी तरह कोई ऐसा सबब हुआ कि दिमाग़ की वह ख़राबी ख़ुद से ठीक हो गई मगर ऐसा कभी ही हो सकता है, हो सकता है मुस्तक्बिल (भविष्य) में कोई इलाज निकल आए। कितने ग़ैर मुस्लिम बल्कि दहरीया मिर्गी में मुब्तला हुए न दुआ कराई न तअ़वीज़ सिर्फ़ इलाज किया और अच्छे हो गये इससे मालूम हुआ कि हर मिर्गी शैतान से नहीं होती उनकी मिर्गी भी खांसी बुख़ार जैसा मरज़ थी सहीह इलाज हुआ ठीक हो गई।

बाज़ ग़ैर मुस्लिमीन नाजाइज़ तअ़वीज़ गन्डों और टोटकों से अच्छे हो जाते हैं, उसकी दो शक्लें होती है, या तो वह मरज़ हल्का होता है टोटकों से मरीज़ का नफ़्सियाती इलाज हो जाता है। या शैतान का असर होता है तो नाजाइज़ दुआ तअ़वीज से शैतान खुश हो कर हट जाता है ताकि ऐसा करने वाला इन्सान कुफ़्र व शिर्क और नाजाइज़ बातों में फंसा रहे।

यह बात वाज़ेह रहे कि दुआ तअ़वीज से सख़्त से सख़्त बल्कि लाइलाज मरज़ भी दूर हो सकता है मगर यह किसी मुत्तक़ी (संयमी) की करामत से हो सकता है और करामत कभी–कभी ही ज़ाहिर होती है। ऐसा नहीं कि जो चाहे पढ़ कर फूंक दें या तअ़वीज बाध दें और मरज़ दूर हो जाए।

जादू, टोना और इस्लाम

डॉ. उ० शेख़ (इन्दौर)

जादू शब्द में ही जादू इन अर्थो में है कि हम बार–बार इसमें पहले से अधिक रोमांचक, डरावना या वीभत्स पढ़ना, सुनना या देखने की अपेक्षा रखते हैं। यह मनुष्य की स्वयं अपने अंदर के डर से रोमांचित होने की प्रवृत्ति के कारण है। एक प्रकार से यहां भी मांग और आपूर्ति (डीमान्ड एंड सप्लाई) का नियम लागू होता है। जिसके चलते जादू का व्यावसायीकरण हुआ। पब्लिक जैसा कुछ देखने की आशा करती रही, जादूगर भी उन्हें वैसा ही बहुत कुछ दिखाने का प्रयास करते रहे हैं।

मनुष्य में नयी–नयी चमत्कारी अनुभूतियों या दृश्यों के देखने की पिपासा बनी रही, जिसके कारण इस क्षेत्र के प्रसार व प्रचार में वास्तविकता से अधिक काल्पनाशीलता और अतिशयोक्ति की भूमिका रही। इस्लाम के आगमन के समय अरब कल्चर में जादू की परिकल्पना मौजूद थी। अरब वाले इस शब्द का प्रयोग किसी व्यक्ति की असमान्य मनोदशा और प्रभावशाली व्यक्तित्व दोनों के संदर्भ में करते थे। जब पैग़बरे इस्लाम हज़रत मुहम्मद (सल्ल.) ने ईश्वरीय आदेशानुसार इस्लाम धर्म का प्रचार शुरू किया तो उनके विरोध में कई तरह की टिप्पणियां की गयी। उन में एक सामान्य प्रकार की टिप्पणी यह भी थी कि आपके व्यक्तित्व में और बातों में जादू है। जिससे आप एक बार मिल लेते हैं, वह आपकी बातों के जादू में फंस जाता है। सीधे–सीधे भी ये आप (सल्ल.) के लिए जादूगर शब्द का प्रयोग करते थे।

दूसरी ओर वे पैग़म्बरे इस्लाम (सल्ल.) पर जादू से प्रभावित होने का आरोप भी लगाते रहते थे। इस प्रकार उन लोगों के जादू बोध में वशीकरण (हिप्नोटिज़्म), मानसिक रूप से विक्षिप्त या प्रेतबाधा से ग्रस्त होने इत्यादि का भी समावेश था। अरब वालों की इन अवधारणाओं का व्यापक प्रारूप क्या था और यह अन्य देशों के जादू, टोने, छू–मंतर, टोटकों और तांत्रिक क्रियाओं (ब्लेक मेजिक, विच काफट और आकल्ट साइंस) से कितना भिन्न थी, यह एक अलग चर्चा का विषय है यहां केवल जादू के प्रति इस्लामी दृष्टिकोण की विवेचना अभीष्ट है। क़ुरआन में जादू का उल्लेख पैग़म्बरों की चमत्कारी शक्तियों के तुलनात्मक परिप्रेक्ष्य में अधिक आया है। अधिकांश पैग़म्बरों से चमत्कार दिखाने की मांग भी की जाती थी और स्वतः भी उनमें ऐसे लक्षणें का प्रदर्शन होता था जो उनके संदेश और मिशन की सत्यता प्रमाणित करने के लिए आवयक थे। फिर भी नबियों के चमत्मकारों को जादू कहकर टाल दिया जाता था। बनी इसराईल के पैग़म्बर हज़रत मूसा अलेहिस्सालम के विरूद्ध तो फ़िरऔन ने एक खुला मुक़ाबला भी रखा था जिससे उसके सरकारी जादूगर परास्त हुए थे। इन प्रसंगों की निहित शिक्षा यही है कि जो चमत्कार पैग़म्बरों ने दिखाये वे ईश्वरीय शक्ति से प्राप्त चमत्कार हुआ करते थे, जबकि जादूगरों ने जो स्वांग रचे वे चालू किस्म के जादुई तमाशे होते थे और पैग़म्बरों के मुक़ाबले ठहर नही पाते थे। इस प्रकार इस्लाम चमत्कारों और जादुई क्रियाकलापों में एक स्पष्ट अन्तर की ओर संकेत करता है।

विशुद्ध जादू–टोने और उस जैसे दूसरे विषयों में इस्लामी मत पवित्र क़ुरआन की उन आयतों में मिलता है जहां हारूत और मारूत नाम के दो फ़रिश्तों द्वारा जादू सिखाने का प्रसंग आया है, परंतु यहां भी औपचारिक रूप से जादू सिखाये जाने का वर्णन करके जादू को किसी प्रकार की धार्मिक मान्यता देना अभिप्रेत नहीं बल्कि पूरे उपक्रम को "बनी इसराईल की परीक्षा" कहा गया है।

इन्हीं आयतों में बताया गया है कि वे फ़रिश्ते जादू का ज्ञान सिखाते समय चेतावनी दे दिया करते थे कि उनके प्रकट होने और इस विद्या के सिखाने का मतलब यह देखना है कि कौन अपने काम बनाने के लिए ईश्वर की सहायता पर निर्भर रहता है और कौन जादू जैसे हथकंडों पर भरोसा करता है। इस चेतावनी के वावजूद बनी इसराईल के बहुत लोगों ने यह कला सीखी और उसका प्रयोग भी किया।

इस प्रकार इस प्रवृत्ति की भर्त्सना करते हुए पवित्र क़ुरआन इसे "शैतानी कर्म" बताता है। और उल्लेख करता है कि इसके प्रयोग से बनी इसराईल पति–पत्नी में अलगाव कराने

जैसी ओछी हरकतें किया करते थे। हो सकता है यही कला पीढ़ी दर पीढ़ी कई लोग सीखते सिखाते रहे हों और आज जो कुछ " सुलैमानी इल्म" या 'तिलस्म' के नाम से प्रचलित है, वह उसी ज्ञान का हिस्सा हो जो लोगों ने बाबुल शहर में सीखा था। पैग़म्बर हज़रत सुलैमान (अलै.) के जीवन के बारे में जो भी प्रसंग पवित्र कुरआन में मिलते हैं उनसे बहुत लोगों ने अपनी कल्पनाशीलता को अनुचित हवा दी है।

यह कल्पना की जा सकती है कि इस्लाम जब ईरान, रोम और चीन इत्यादि देशों की संस्कृति के सम्पर्क में आया होगा तो वहां प्रचलित जादू–टोनों की मान्यताओं से प्रभावित होकर बहुत लोगों ने इस्लामी रिवायतों पर आधारित साहित्य रचने के प्रयास किये होंगे। इन्हीं प्रयासों के नतीजे में जहां "अलिफ़–लैला", बाग़ो–बहार" जैसी कृतियों की रचना हुई वहीं "जिन्नों और मुवक्किलों" को काबू करने और उनसे चमत्कारिक सेवाएं लेने की लालसाओं ने भी जन्म लिया। चीन इस क्षेत्र में बहुत आगे समझा जाता था, अतः "आलादीन का चराग़" जैसी कथी की पृष्ठभूमि चीन में होना कोई आश्चर्य की बात नहीं है।

मुक़द्दमा जीतना हो, इम्तिहान में पास होना, बड़े धन की खोज करना या प्रतिद्वंदी को पछाड़ना हो ऐसे सारे काम करवा देने को दावा बाबा, फ़कीर और तांत्रिक करते हैं और लोग उनके पीछे भागते रहते हैं। जबकि इस्लाम की शिक्षाओं के अनुसार नफ़ा पहुंचना और नुक़सान से बचाना सब परमशक्तिशाली अल्लाह का विशेषाधिकार है। हर ज़रूरत के लिए उसी अल्लाह के सामने हाथ फैलाना चाहिए।

चौराहों पर फूटे, अंडे और मिट्टी के घड़े लाल कपड़ा यही दर्शाते हैं कि लोग मात्र सांसारिक लाभ के लिए टोनों–टोटकों पर कितना विश्वास करते हैं और शीघ्र हाथ आने वाले लाभ के पीछे भाग रहे है, इसके विपरीत कुरआन में तो अल्लाह ने यह वादा किया है कि " मुझसे मांगों मैं तुम्हारी प्रार्थनाएं स्वीकार करूंगा।" क्या ही अच्छा हो कि हम अपनी इच्छाओं और ज़रूतों को संतुलित करें और तब अपनी दुआओं का असर भी आज़मा कर देखें।

इस्लाम धर्म के जादू या जिन्नों के असर से पीड़ित व्यक्तियों को केवल इतनी छूट है कि वे इससे छुटकारे का उपाय कर सकते हैं। यह बात और है कि पवित्र मन रखने वाला व्यक्ति जिसका संबंध संसार में कम और ईश्वर से अधिक हो कभी ऐसी परेशानियों में पड़ेगा ही नहीं। अतः इस्लाम केवल बचाव पक्ष ही अपनाने की अनुमति देता हैं इस प्रकार जादू टोने के अस्तित्व को जहां इस्लाम स्वीकार करता है, वहीं इसे "शैतानी कर्म" बताकर वर्जित भी ठहराता है। सृष्टि रचना के गंभीर उद्देश्य और इसमें मनुष्य की जिम्मेदारी की तुलना में जादुई कलाबाज़ियों का क्षेत्र स्वतः ही तुच्छ नज़र आता है।

जादुई दुनिया के रहस्य टटोलना, अनावश्यक खोजबीन करना और इस विद्या का व्यावसायीकरण इत्यादि किसी प्रकार इस्लाम को मान्य नहीं हैं। ईश्वर का दिया हुआ जीवन और उसका भेजा हुआ धार्मिक साहित्य इतना सस्ता नहीं है कि उसका उपयोग झूठी प्रतिष्ठा अर्जित करने, मनोरंजन या अनुचित सांसारिक लाभ प्राप्ति के लिए किया जाए।

सत्कर्म का महत्व समझने वाले जानते हैं कि जो सामाजिक, प्रतिष्ठा, परोपकार और दीन–दुखियों की सेवा के फलस्वरूप हासिल होती, वह जादुई उपकृत्यायों से बैठने वाली धाक से बेहतर है। वे यह भी जानते हैं कि खून–पसीने की कमाई ही अच्छी है, न कि छूमंतर के बलबूते रातों रात धनवान बनने की ख़्वाहिश। रहा मनोरंजन, तो जिसने अपने रब की याद का मज़ा चख लिया हो, उसे इससे भी क्या मतलब।

Mob: 9415006053
Mohd. Irfan
Proprietor
न्यू करीम ज्वैलर्स
NEW KAREEM JEWELLERS
Shop No. 1 Balad Market, Opp. Ek Menara Masjid,
Akbarigate, Lucknow. Ph.: (S) 2260890

0522-264646
Bombay Jewellers
The Complete Gold & Silver Shop
84, Victoria Street,
Akbari Gate, Lucknow.

आपके प्रश्नों के उत्तर

इदारा

प्रश्नः एक शख़्स की ईद की नमाज़ छूट गई तो क्या वह क़ज़ा पढ़ सकता है?

उत्तरः ईद की नमाजः की क़ज़ा नहीं है बस तौबा इस्तिग़फ़ार करे, अल्बत्ता अगर कई लोगों की छूटी हो और वक़्त हो तो दूसरी जमाअ़त कर के ईद की नमाज़ अदा करें।

प्रश्नः ईद की एक रकअ़त छूट जाए तो उसे कैसे पूरी करें?

उत्तरः इमाम के सलाम फेरने पर खड़े हों पहले अल्हम्दु पूरी पढ़ें कोई सूरे मिला कर या कुछ आयात पढ़ कर अब तीन तक्बीरें कहें फिर अल्लाहु अकबर कह कर रूकुअ़ में जाएं फिर बाक़ी नमाज़ पूरी करें।

प्रश्नः एक शख़्स ईद की नमाज़ में ऐसे वक़्त शरीक हुआ कि इमाम किराअ़त कर रहा था तो वह किस तरह नमाज़ में शरीक हो।

उत्तरः वह ईद की नमाज़ की नीयत करके अल्लाहु अकबर कहे, फिर तीन तक्बीरें कहके इमाम की इक़्तिदा करे।

प्रश्नः क्या ईद की नमाज की नीयत में ईमाम के पीछे की नीयत ज़रूरी है और क्या ६ ज़ाइद तक्बीरात की नीयत भी ज़रूरी है?

उत्तरः हर जमाअ़त की नमाज़ की नयीत में इमाम के पीछे की नीयत ज़रूरी है, ईद की नमाज़, में भी, मगर याद रहे नीयत के अल्फ़ाज़ ज़बान से कहना ज़रूरी नहीं दिल में इरादा कर लेना काफ़ी है। ६ ज़ाईद तक्बीरात की नीयत भी कर लेना चाहिए।

प्रश्नः क्या बाज़ इमामों के यहां/ ईद की नमाज़ में ६ से/ज़ियादा तक्बीरें है?

उत्तरः अहनाफ़ का अमल ६ ही ज़ाइद तक्बीरों पर है बाज़ इमामों के यहां, जैसे इमाम अहमद बिन हंबल के यहां १२ ज़ाइद तक्बीरें है, ७ पहली एकअ़त में और पांच दूसरी एकअ़त में।

प्रश्नः हमारें यहां ईद की नमाज़ में इमाम दूसरी एकअ़त में क़िराअत के बाद रूकूअ़ में चला गया, सज्द–ए–सह्व भी न किया, लोगों ने शोर मचाया नमाज़ नहीं हुई चुनांचि इमाम साहिब ने नमाज़ दुहराई। ऐसी सूरत में रहीह हुक्म क्या है?

उत्तरः इमाम साहिब ने नमाज़ दुहरा ली सारा झगड़ा ख़त्म हुआ। ऐसी सूरत का हुक्म यह है कि अगर नमाज़ी बहुत ज़ियादा हैं, सज्द–ए–सह्व में ख़तरा है, कि कोई समझेगा कोई नहीं समझेगा, कोई सज्दा करेगा कोई नहीं कर पायेगा ऐसी सूरत में सज्द–ए–सह्ब मुआफ़ है बिना सज्द–ए–सह्व किये नमाज़ हो जाएगी। लेकिन अगर कम नमाज़ी हैं और तक्बीरात छूट गई हैं तो सज्द–ए–सह्व के बिना नमाज़ न होगी अगर नहीं किया है तो नमाज़ दुहराना चाहिये।

प्रश्नः— अगर कोई ईद की नमाज़ की दूसरी रकअ़त के रूकूअ़ में शरीक हुआ तो वह अब अपनी नमाज़ किस तरह पूरी करे?

उत्तरः नीयत करके अल्लाहु अक्बर कह लिया और रूकूअ़ में इमाम को पा लिया तो अब रूकुअ़ में वह सुब्हान रब्बियल अ़ज़ीम के बजाए तीन बार अल्लाहु अक्बर कहे हाथ न उठाए, अगर इमाम तीन तक्बीरें पूरी करने से पहले क़ौमे के लिये खड़ा हो जाए तो यह भी खड़ा हो जाए जो तक्बीरें रह गईं वह मुआफ़ हैं फिर इमाम के सलाम फेरने पर खड़ा हो और अपनी नमाज़ पिछले बयान के मुताबिक़ पूरी करे।

प्रश्नः क्या फ़ित्रा अपनी बालिग़ औलाद की तरफ़ से भी है?

उत्तरः फ़ित्रा साहिबे निसाब पर अपनी तरफ़ से है और अपनी नाबालिग़ औलाद की तरफ़ से है। बालिग़ औलाद जो कमाती खाती है, अपना फ़ित्रा अदा कर सकती है उस का फ़ित्रा बाप पर नहीं लेकिन अगर बालिग़ औलाद ग़रीब है, या जो कुछ कमाती है सब बाप के हवाले करती है फिर बाप का दिया हुआ ही पाती है या ऐसी बालिग़ औलाद जो बाप के साथ रहती है उसकी कोई आमदनी नहीं बाप ही की आमदनी से उसका ख़र्च चलता है ऐसी बालिग़ औलाद का फ़ित्रा मालदार बाप पर वाजिब है।

प्रश्न : एक आदमी की तरफ़ से कितना फ़ित्रा दिया जाएगा?

उत्तर : एक आदमी का फ़ित्रा एक किलो छः सौ ग्राम गेहूं या उसकी कीमत है, जौ दें तो तीन किलो दो सौ ग्राम दें। फ़ित्रा न देना वाजिब छोड़ना भी है और ग़रीबों का हक़ मारना भी है।

मालदार को अल्लाह तौफ़ीक़ दे तो वह फ़ित्रे में फी कस तीन किलो दो सौ ग्राम मुनक़्क़ा या छुहारा या उनमें से किसी एक की क़ीमत अदा कर सकता है।

इस्लाम के विषय में वार्तालाप

मुअज़्ज़म हुसैन

(नोटः सम्पादक का लेखक से सहमत होना आवश्यक नहीं है)

अब पांचों मूल आदेशों को एक एक करके समझने की कोशिश करिए, इस्लाम धर्म– इस्लाम का अर्थ चिरन्तन सत्य अथवा 'सनातन' है। वह इस प्रकार कि धर्ती पर पहले मानव आदम (अ०) ने जो धर्म अपनाया वह इस्लाम था जिसे कुर्आन ने यूं बताया है: अल्लाह ने तुम को मुस्लिम नाम दिया कुर्आन उतरने से पहले भी और इस कुर्आन में भी।

पं० विष्णुदासः कृपया इस्लाम का शाब्दिक अर्थ बताएं और शब्द अल्लाह की व्याख्या करें।

पं० हरदयालः इस्लाम का शाब्दिक अर्थ है " आत्मसमर्पण "अर्थात अपने को ईश्वर को समर्पित कर देना।

इस्लाम धर्म के अनुसार समग्र सृष्टि के एक मात्र मालिक (ईश्वर/परब्रह्म) का नाम विख्यात पण्डित गिरिश चन्द्र विद्यारत्न ने प्रायः १०० से भी अधिक वर्ष पूर्व अपने अभिधान में 'अल्ला' शब्द का व्युत्पत्ति (बनाने का सूत्र) एवं अर्थ दिया है। संस्कृत में 'अल्ल' और अरबी भाषा में अल्लाह है, जिसका अर्थ विद्यारत्न जी ने आदि देव दिया है, अरबी में इस का अर्थ कुछ इस प्रकार है: "दोष रहित समस्त उत्तम गुणों वाला वैसे" अल्लाह इस्लाम में ईश्वर की व्यक्तिवाचक संज्ञा है। मेरे अनुसंधान के अनुसार एक दो शब्दों का प्रयोग अरबी एवं संस्कृत में एक ही प्रकार है, जैसे– ईलाः शब्द वेद मन्त्र में प्रयोग किया गया है। इसका अर्थ 'उपासना' तथा 'उपास्य' है। (ऋक वेद १/१/१, १/१४/१५, १/११२/१, १/१४२/४, २/३/३, ५/५/३ एवं ६/५/३ आदि ऋक मन्त्र में और अरबी जिसका अर्थ, 'उपास्य है, संस्कृत एवं अरबी दोनो भाषा में ही 'मा' शब्द निषेधा या नहीं के लिए प्रयोग है। अतः इन दोनों भाषाओं में संबंध होना सम्भव है।

पं. विष्णुदासः– यह सम्बंध मेरी समझ में नहीं आया।

पं. हरदायालः– पण्डित जी आप यह तो मानते हैं, कि महजलप्लावन के समय वैवस्वत् मनु जी की नाव में जो भी चढ़ पाया था केवल वही बचा था। फिर प्लावन हट जाने के पश्चात ही बस्ती की वृद्धि हुई और आज धरती पर जितने मनुष्य हैं, यह सब के सब, वही मनु जी के नाव में चढ़ने वालों की सन्तान हैं, वह लोग जब एक साथ रहते थे, तब भाषा भी एक थी, बाद में जब पृथक स्थान में बसना आरम्भ किया तो कुछ भाषा का प्रभाव रह गया है,

पं. विष्णुदासः– पण्डित जी आज समझ में आया कि विश्व में देश पृथक, भाषा पृथक होते हुए भी कुछ शब्दों का प्रयोग एक ही अर्थ में क्यों होता है।

पं हरदयालः– तो ठीक है, चलिये धर्म के मूल सिद्धान्तों पर विचार करें। सर्वप्रथम आप यह बताइए कि सृष्टिकर्ता (ईश्वर) पर आस्था (विश्वास) न हो तो उसका धर्म क्या कहा जाये?

पं विष्णुदासः– सृष्टिकर्ता (ईश्वर) पर आस्था यदि नहीं है तो उसका कोई 'धर्म' ही नहीं है, वह नास्तिक है।

पं. हरदयाल– अर्थात किसी भी धर्म का मूल एव प्रथम आधार यह है कि सृष्टिकर्ता (ईश्वर) पर आस्था हो। 'इस्लाम धर्म' में इसी का नाम अल्लाह पर 'ईमान' है। 'ईमान' अरबी शब्द है अर्थात् सृष्टिकर्ता एक एवं अद्वितीय है, इस पर आस्था रखना और उसके समस्त आदेशों को स्वीकार करना। द्वितीय आधार एक अद्वितीय सृष्टिकर्ता पर आस्था प्रकाश करने के लिए उसकी उपासना करना अत्यंत प्रयोजन है। तृतीय– केवल मात्र उसी अद्वितीय, सृष्टिकर्ता (परब्रह्) की प्रसन्नता के लिये उपवास रखना, धनवान हो तो धनदान एवं तीर्थयात्रा का ओदश है, इसमें कौन सा नियम म्लेच्छ जैसा है आप ही बताइये? वैदिक सत्य सनातन हिन्दू धर्म का विरोध किस बात पर है?

पं विष्णुदास– नहीं पण्डित जी एक अद्वितीय मालिक (ईश्वर) पर आस्था तथा उसकी प्रसन्नता के लिये उपासना एवं उपवास करना, धनदान एवं तीर्थयात्रा करने में जो आदेश तथा धर्म मूल है, इससे वैदिक सनातन धर्म का विरोध नहीं होता है। लेकिन आचार आचरण में विरोध है।

पं. हरदयाल– ठीक है, विरोध निकालने के लिये खोज करो। जैसे– 'अल्लाह एवं 'ईला': संस्कृत शब्द है 'अल्ला' अर्थ –आदि देवता (ईश्वर) ईला का अर्थ उपास्य/ उपासना, विरोध

ा क्या है? आदि देवता अल्लाह (ईश्वर) की उपासना में क्या विरोध देखा जाता है?

पं.विष्णुदासः– यह दोनों जबकि संस्कृत शब्द हैं तो इसमें क्या विरोध हो सकता है?

पं. हरदयालः– ते क्या यह विरोध ा एक अद्वितीय आदि देव (अल्लाह) पर आस्था रखने वालों की उपासना पद्धति में है? यह उपसना तो वैदिक शुद्ध उपसना 'योग–उपासना' का संशोधित रूप है, जिसका एक अंश आज भी हिन्दू समाज में वर्तमान है, और इसे 'सष्टांग–प्रणाम' कहा जाता है। इसी को इस्लामिक नाम में सजदा कहा गया है, 'नमाज' नाम में जो उपासना इस्लाम में मौजूद है, उसे यदि विचार की दृष्टि से देखा जाये तो इसमें कुछ 'योग (योग–आसन) भी युक्त समझे जाते हैं: योग–उपासना' नमस्कार (प्रणाम–आसन) द्वारा उपासना वैदिक नियम है। (ऋक् वेद १/३६/७/१/१८/७ ऋक् मन्त्र) मैं जहां तक समझता हूं कि नमाज उपासना में जिस प्रकार शारीरिक अवस्था होती है, वह सब की सब सम्मान ज्ञापक। सम्मान प्रदर्शन मूलक श्रेष्ठ अवस्था है, यह उपासना दण्डव्रत से आरंभ एवं प्रणाम में शेष होती है, मध्य में भी विभिन्न अवस्थायें हैं यह सभी आसन है, जिनका वर्णन 'गीता के छठे अध्याय में थोड़ा सा किया गया है। एवं श्वेताश्वतर उपनिषद के दूसरे अध्याय में ८ से १०वें मन्त्र तक कुछ वर्णन मिलता है, अब बताइए इसमें क्या विरोध ा है?

पं. विष्णुदासः– वेद मंत्रार्थ के अनुसार इस कथन में तो अब विरोध करने का अवसर ही नहीं है?

पं. हरदयालः– तो क्या 'रोजा (उपवास) रखने में जिससे ईश्वर प्रीति प्राप्त होती है, इसमें विरोध है? यह नियम तो मनु से चला आ रहा है। मनुमृति के ११वें अध्याय के २१६ से २२१ वे श्लोक तक में एकाधिक 'चन्द्रायण व्रत' का उल्लेख है, इस्लाम में जो आसान है। सभी के लिये इसी 'चन्द्रायण व्रत' का आदेश किया गया है। (मनु स्मृति ११/२१६ श्लोक) मनुस्मृति ११/२२१ शलोकानुसार समग्र ऋषिगण तथा देवगणों ने भी इसी चन्द्रायण व्रत का पालन किया था। तो इस चन्द्र–अयण (चान्द्रमाह भर उपवास) व्रत के विषय में, आपका क्या विरोध है? या फिर धनदान के सम्बन्ध में आपका विरोध है। जिसके संबंध में ऋक संहिता के १०/११७ सूक्त में सम्पूर्ण 'दान' विषयक वर्णन है, तैत्तिरीय उपनिषद के १/११/३ मन्त्र में सामर्थ्य के अनुसार सरल मन में दान करने का आदेश है।

पं. विष्णुदासः– दान तीर्थयात्रा में भी विरोध नहीं हैं।

पं. हरदयालः– इसका अर्थ आप धर्म के पांचों मूल को मानते हैं, इस पर आपका कुछ विरोध नहीं?

पं. विष्णुदासः– नहीं, क्योंकि प्रत्येक धर्म का मूल यह पांच होना ही चाहिए अन्यथा धर्म सम्पूर्ण नहीं है।

पं. हरदयालः– अब आप बताइए! मैं ने वैदिक सनातम धर्म को कहां और कैसे छोड़ दिया? प्रचलित धर्मानुशासन एवं वैदिक धर्मानुशासन में अन्तर हो जाने के कारण ही वैदिक सनातन धर्म का धर्मानुशासन नया लगता है।

पं. विष्णुदासः– लेकिन आचरण में दोनो सम्प्रदास में प्रभेद तो है, जैसे पहला प्रभेद संस्कार नहीं है।

पं. हरदयालः– संस्कार? अवश्य है, लेकिन संस्कार में जो जटिलता है वह नहीं है।

पं. विष्णुदासः– आप हमें इस्लामिक संस्कार समझा दीजिए!

पं. हरदयालः– प्रत्येक मनुष्य के लिये कुछ संस्कार आवश्यक होते है, चाहे वह मनुष्य कोई भी धर्म–समाज का हो, जैसे–ज्ञानार्जन (उपनयन संस्कार,) विवाह संस्कार, एवं अन्तिम संस्कार। जन्म संस्कार तो स्वाभाविक है, अन्य संस्कार जो कि धर्मसूत्रादि ग्रन्थों में पाये जाते हैं वह तो गौन है। आप समझने की कोशिश करें कि सन्तान के जन्म होने के बाद का संस्कार (शुद्ध करना) प्रत्येक समाज में प्रचलित है। ८–१० साल की उम्र में मुसलमान मनुष्य 'ईश्वाणी' (वेद) पढ़ने के लिये मदर्सा (आश्रम) में भेज देते हैं। जहां पर ईशज्ञान (ब्रहमज्ञान) प्राप्त होता है।

और फिर ज्ञान लाभ करके घर वापस लौट कर शादी करके अपने कर्तव्यों का पालन करते हैं, मृत्यु के पश्चात सम्मान के साथ मुहल्ला के लोग मिलकर अंतिम संस्कार करते हैं। जन्म, मृत्यु, विवाह, ज्ञानार्जन यह ही मूल संस्कार है। जो कि प्रत्येक मनुष्य के लिये प्रयोजन है। अन्तर इतना है कि हिन्दू समाज में तो उपनयन संस्कार किया गया मनुष्य ब्रह्मज्ञानी होता नहीं है लेकिन फिरभी बाहमण (ब्रहमज्ञानी) कहा जाता है, मगर इस्लाम में केवल 'ईश' (ब्रहम) ज्ञान अर्जनकारी ही को यह सम्मान दिया जाता है, यही नियम वैदिक काल में भी था।

पं. विष्णुदासः– यह किस प्रकार

नियम वैदिक काल में था?

पं. हरदयालः– वैदिक काल में मात्र ब्रहम ज्ञानी को ही ब्राहमण माना जाता था उस समय यदि कोई अनार्य–शुद्र भी ब्रहमज्ञानी होता था तो उसको ब्राहमण ही माना जाता था। ना कि मात्र उपनयन संस्कार वाले को।

पं. विष्णुदासः– यह बात तो मेरी समझ में नहीं आयी। कृपा करके आप व्याख्या स्वरूप समझा दीजिए।

पं. हरदयालः– अच्छा मैं आप को बृद्धगौतम संहिता से दो श्लोक बताता हूं समझने की कोशिश करिए।

''क्षान्तं दान्तं जितकोधं जितात्मानं जितेन्द्रियम्।

तमेव ब्राहमणं मन्ये शेषाः शुद्रा इति स्मृताः।।''

एवं, ''न जातिः पूज्यते राजन गुण कल्याण कारका।

चण्डालमपि वित्वरथं देवा ब्राहमणं विदुः।।''

द्वापर युग के विख्यात ग्रन्थ 'महाभारत' में तो एकाधिक स्थान में इसका उल्लेख पाया जाता है जैसे (महाभारत वनपर्व मर्कण्डेय समस्या पर्वाध्याय में २१५ अध्याय, एवं महाभारत वनपर्व अजगर पर्वाध्याय में १८० अध्याय देखिए)

पं. विष्णुदासः– इस कथन का कोई उदाहरण है?

पं. हरदयालः– वैदिक उदाहरण जैसे– एकाधिक ऐसे ऋषियों के नाम 'वेद' में उल्लिखित हैं। जोकि राजा (क्षत्रिय) थे। ऋक वेद १०/६८ सूक्त में देवार्पि, १०/६५ सूक्त में पुरूरबा ऋक वेद १/१३१ तथा दिवोदास पुत्र पुरूच्छेप ऋषि, इसी प्रकार पुरूकुत्स्य, त्रसदस्यु आदि के नाम हैं 'राजर्षि' उपाधि युक्त एकाधिक राजा का उल्लेख है। 'वेद' मन्त्र में एक ऐसे ऋषि का नाम पाया जाता है जोकि अनार्य –शुद्र थे। वह 'एलुष' पुत्र 'कवष ऋषि' हैं। जो कि ऋक वेद १०/३०–३४ सूक्त के ऋषि है। 'महीदास' ऐतरेय उपनिषद् एवं ब्राह्मण के रचियता, ऋषि पुत्र या ब्राह्मण पुत्र नहीं थे। अपने गुणों के द्वारा ऋषि होकर उपनिषद आदि रचना किया था। तथा जाबाला– सत्यकाम का तो पितृ परिचय ही नही था। यह भी अपने गुण द्वारा आचार्य हुए थे। इस प्रकार के उदाहरण और भी हैं।

पं. विष्णुदास– पण्डित जी आपने सत्य कहा, यह सभी लोग अपने द्वारा ही ब्राह्मण हुए थे एवं समाज का कल्याण भी ज्ञान द्वारा किया है।

प. हरदयालः– इस्लाम में जाति विभाग नहीं है। गुण कार्य द्वारा कर्म विभाग है। धार्मिक ज्ञान अर्जन करने के लिए सबको समान अधिकार है। इसके बाद ज्ञान दान, देश–समाज रक्षा, या स्वाधीन कारोबार (व्यापार) अथवा सहायक रूप में अपनी अजीविका स्वयं ही निर्णय कर सकते हैं, यह कर्म विभाग प्राचीन वैदिक समाज में भी पहले थे। बाद में आजीविका वंशगत हो गया हैं। (ऋक वेद ६/११४ सूक्त देखें) स्मृति के जमाने से गड़बड़ हो गया है।

पं. विष्णुदासः– ठीक है, हम मानते हैं, कि जाति भेद प्रथा वैदिक काल में नहीं थी गुणानुसार कर्म भेद था। अपनी इच्छानुसार गुण–कार्य द्वारा प्रत्येक मनुष्य अपनी आजीविका निर्णय करता था। अतः जाति के अनुसार संस्कार का प्रयोजन भी नहीं हुआ। लेकिन 'मृतक का अग्नि' संस्कार तो 'इस्लाम' में नहीं है। वैदिक धर्मानुसार वेद–उपनिषद में 'मृतक' का अग्नि संस्कार मान्य है। आपने तो स्वयं ही जन्म–मृत्यु–विवाह एवं ज्ञानार्जन इन चारों को मूल संस्कार कहा है। इस विरोध के विषय में आप क्या कहते हैं शुक्ल यजुर्वेद ४० अध्याय १५ मन्त्र एवं 'ईश' उपनिषद १७ मन्त्र इन दोनों स्थानों पर स्पष्ट रूप में अग्नि संस्कार कहा गया है।

पं. हरदयालः मृतक के शरीर को जलाने की प्रथा आदि वैदिक धर्मानुसार नहीं है। क्योंकि वेदमंत्र में ही समाधि देने का उल्लेख पाया जाता है। ऋक वेद १०/१८/१०–१३ ऋक मंत्र तक वर्णन पाया जाता है। 'अग्निदाह' प्रथा जब प्रचलित हुआ तब दोनों प्रकार के अंतिम संस्कार चालू थे। इसका प्रमाण यह है। ऋक वेद १०/१५/१४ ऋक मंत्र ''ये अग्नि दग्धा ये अनग्निदग्धा..... कल्पयस्व''। इन दोनों प्रकार की आत्मा को 'स्वर्ग' में रहने वाला कहा है। मनुस्मृतिमें मृतक शरीर को समाधि देने का उल्लेख तो नहीं है। लेकिन मृतक शरीर को छोड़ जाने का उल्लेख पाया जाता है।

मृतं शरीरमृतसृज्य काष्ठ लोष्ठसमं क्षितौ।

विमुखा बान्धवा यान्ति धर्मस्तमनुगच्छति।।

(मनुस्मृति ४ अध्याय २४१ श्लोक)

'यज्ञ' प्रथा ने जब समाज में बछुल प्रभाव विस्तार कर लिया। तब मनुष्य जीवन को १० संस्कार में रखने लिये अंतिम संस्कार को भी 'यज्ञ' रूप दिया गया है। यह आदि वैदिक अंतिम संस्कार प्रथा नहीं है, बल्कि बाद में

प्रचलित हुई है 'पितृपेघ यज्ञ' ही अंतिम संस्कार है। ऋक वेद १०/१६ सूक्त में विस्तार वर्णन है। मृतक शरीर को समाधि ा देने का उल्लेख अथर्व वेद संहिता १८/२/५/१० एवं १८/२/६/२ मंत्र में भी है।

तथा विधवानारी (आबिरा) के पुनः विवाह का उल्लेख भी वैदिक मंत्र में पाया जाता है। (ऋक वेद १०/१८/८, १०/४०/२ एंव अथर्व सं० – १८/३/६/७ मंत्र मनुस्मृति के अनुसार कन्या पुनः दान निषेद है। (मनु : ६/७१ श्लोक देखें) लेकिन 'नियोग –प्रथा का मनु स्मृति के ६/५९–६४ श्लोक में तो समर्थन किया है। मगर फिर मनु स्मृति ६/६५ श्लोक में नियोग एवं पुनः विवाह दोनों ही को मना कर दिया है। फिर भी 'पौनर्भव' (विधवा नारी के पुनः विवाह से उत्पन्न पुत्र) शब्द का प्रयोग एवं दाय और धन विभाग का भी वर्णन पाया जाता है। मनु स्मृति ३/१५५ एवं ६/१६० आदि श्लोकों में उपरोक्त वर्णन से समझा जाता है कि मनु स्मृति के जमाने में भी पुनः विवाह था।

त्याग प्रथा (तलाक) भी मनुस्मृति में देखा जाता है। प्रथम त्याग–आभूषण आदि लेकर (जो कि पति ने दिया था) पृथक शयन व्यवस्था। यह व्यवस्था मनुः अनुसार एक साल तक अवधि है, (मनुस्मृति ६/७७) तथा द्वितीय त्याग का उल्लेख तीन माह के लिये, आभूषण अच्छे कपड़े आदि वापस लेकर पृथक शयन व्यवस्था है। मनुस्मृति ६/७८ में और एक अन्य त्याग का उल्लेख भी पाया जाता है, जिसमें पिता आदि के सामने कन्या को त्याग करने का नियम है, मनुस्मृतिम ६/१७६ श्लोक में और भी एक बात है कि त्याग की गई स्त्री के पुनः विवाह करने का विधान मनुस्मृति ६/१७६ श्लोक में है। जो कि इस्लामिक विधान के समान है। इस समग्र कथन में पण्डित जी आपका क्या कहना है?

पं. विष्णुदासः पण्डित जी आप बड़े और ज्ञानी भी है, मैंने आप से विवाद करने के लिये चर्चा नहीं की है। मैं तो समझने तथा जानकारी हेतु पूंछा हूं।

पं. हरदयालः– देखिए पण्डित जी मनुः में यह भी उल्लेख है, कि विवाह काल में कन्या को सम्मानिक ध ान देने की बात कही है। जिसे इस्लाम में महर कहा जाता है। इस विषय में तो हम लोगों ने सोचा ही नहीं (मनुस्मृति ३/५४) स्त्रियों को शरीर ढाक कर रखने का हुक्म वेद मंत्र में पाया जाता है तथा स्त्रियों को आंखें नीची करके रखना एवं धीरे चलना चाहिए। (ऋक वेद ८/३३/१६ ऋक मंत्र) और एक बात कहना बाकी है। वह यह है कि कुरबानी (बलिदान) वेद मन्त्रानुसार सभी यज्ञ अनुष्ठान में पशुवध (बलिदान) होता था। 'यज्ञानुसार पशु की संख्या में कम–बेश था,' 'ऋकवेद १/१६२ सूक्त एवं शुक्ल यजुर्वेद के २०/७८, २१/४०–४६, ६०,२४/१–४०, २५ वे अध्याय में अश्व मेध यज्ञ, एवं ३०/५७–६० मंत्र आदि में उल्लेख है, मनुस्मृति में ५ अध्याय ३५–४४ श्लोक तक के वर्णन में पशुवध, मांसाहार, पशुयज्ञादि का उल्लेख हैं। ऐतरेय ब्रहाण में 'पशुयज्ञ' का विस्तार वर्णन है। देखिए पण्डिज जी आदि वैदिक जीवन कैसा था। इस बिगाड़ को इतने दिनों के बाद समझाना कुछ कठिन है और अब समझने के लिए तो कोशिश की जा सकती है। इसलिये प्राचीन १२ उपनिषदों में से 'तैत्रिरीय' उपनिषद का १ अध्याय–११ अनुवाक १–४ मंत्र पर विचार–विमर्श किया जा सकता है, केवल इतना ही नहीं है। वेद मन्त्रानुसार कुछ आदेश इस्लाम के विधान के समान है। मनुस्मृति के तो अधिक से अधिक विधान इस्लाम के विधान के बराबर है। मनुस्मृति के अनुसार भी 'देवमूर्ति परिचर्या कारी' पतित है। (देखें मनुस्मृति ३/१५२, १८० श्लोक) अमर कोष–२ काण्ड शुद्रवर्ग ३५ श्लोक के अनुसार देवल का अर्थ पूजा करने वाला (मूर्तिपूजक) है। अब आप ही बताइये पण्डित विष्णुदास जी हमने.क्या छोड़ा और क्या पकड़ा। मेरे विचार में तो आदि वैदिक सनातन धर्म ही संशोधित हो कर ईश–दूत–द्वारा बार–बार स्थापन हुआ है।

स्वयंभू मनु (आदि मानव/पिता मनु) जिस 'सनातम धर्म' को धरती पर लाए थे वैवस्वत मनु (जल प्लावन–मनु) ने उसी धर्म को संशोधित रूप में स्थापन किया था। (ऋक वेद ८/३०/३)।

बाद में विष्णु भागवत नाम में वही धर्म भक्त प्रहलाद ने संशोधित रूप में पुनः स्थापन किया। हिन्दुस्तान में फिर श्री कृष्ण जी ने 'भागवत–धर्म' नाम में वही सनातन धर्म ही को स्थापन किया था।

अंतिम संशोधन करके विश्व में परब्रहम (ईशदूत) द्वारा स्थापन करने के बाद धार्मिक संशोधन एवं ईश–दूत आगमन दोनों विषयों पर ही प्रतिबंध लगा दिया है।

चाहे तुम मानो या न मानों 'कुरआन शरीफ' अंतिम ईशवाणी है। अगर तुम एक आस्तिक हो। एक अद्वितीय सर्वशक्तिमान सृष्टिकर्ता

(ईश्वर) को मानते हो तो उनका अंतिम आदेश मानना पड़ेगा। ऐसा न करने पर विश्वास में (आस्तिकता में) कमी पड़ जाती है कारण यह है, कि सृष्टिकर्ता के द्वारा भेजा हुआ समग्र ईशवाणी एवं ईशदूतों पर आस्था रखना है। तथा जिस ईशदूत का आप अनुगमण करें वह आपके जमाने का होना चाहिए। अतः सम्पूर्ण अस्तिकता (पूर्ण–विश्वास) के लिए, 'समग्र ईशदूत' एवं 'समग्र ईशवाणी' पर आस्था (विश्वास) रखना है।

पं. विष्णुदासः– आपसे बहुत कुछ ज्ञान पा गया हूं। मगर मेरे और कुछ सवाल है, जिनका जवाब वैदिक ध र्म एवं इस्लाम धर्म दोनों ही को जानने वाला ही दे सकता है। वह सवाल यह है कि पहले आप शोचाशोच विषय में कुछ बताइए।

पं. हरदयालः– शोचाशोच के संबंध में इस्लाम में मनुस्मृति के समान ही आदेश किया गया है। केवल थोड़ा सा संशोधन करके और भी आसान कर दिया है। जैसे मल–मूत्रादि के बाद मिट्टी एवं पानी द्वारा ही शोच करना है। (मनु स्मृति ५/१३४ श्लोक एवं ५/१३६ श्लोक) मल–मूत्र त्याग करके आचमन द्वारा शुद्ध होता है। (मनु स्मृति ५/१३८ श्लोक) मैथुन कर्म (स्त्री सम्भोग) के बाद स्नान करने की व्यवस्था का उल्लेख भी मनु स्मृति ५/१४४ श्लोक में है।

आचमन विधि (मनुस्मृति २/८० श्लोक अल्प संशोधन होकर इस्लाम में विधान दिया है कि पानी द्वारा आचमन करने के लिये शुद्ध पानी की आवश्यकता है। पानी शुद्ध होने की शर्त) (मनुस्मृति ५/१२८ में है।)

कुछ साधारण विषय जो कि इस्लाम धर्म का विधान है जो कि मनुस्मृति में पाये जाते है जैसे अशास्त्रिय गाना बाजाना, तेज आवाज एवं ताली बजाना मना है। (मनुस्मृति ४/६४ श्लोक) नहाने (स्नान) के समय नंगा होना एवं खड़े होकर पेशाब करना मना है। (मनुस्मृति ४/४७) पेशाब पायखाना करते वक्त बात न करना एवं सिर ढक के रखना है (मनुस्मृति ४/४६ श्लोक)।

नंगा होकर नींद जाना मना है। (मनुस्मृति ४/७५) पूर्व–पश्चिम की ओर बैठ कर पेशाब पाखाना करना मना है। उत्तर–दक्षिण में करें, मनुस्मृति ४/५० श्लोक। इस प्रकार अधिक से अधिक मनुस्मृति का विधान इस्लाम में अल्प संशोधन होकर पाये जाते है। मैं तो ज्यादा जानता भी नहीं हूं आपका और कोई सवाल है?

पं. विष्णुदासः सवाल तो हजारों हैं, लेकिन अभी कुछ समझ में नहीं आता है, कि क्या पूंछू।

पं. हरदयालः– लेकिन मेरा सवाल है, आप विचार करके जवाब देने का कष्ट स्वीकार करें, तो मैं वह सवाल आप से पूंछ सकता हूं।

पं. विष्णुदासः– पूछिये ! अगर मेरे ज्ञान में होगा तो अवश्य जवाब दूंगा।

पं. हरदयालः– सृष्टिकर्ता ने समग्र विश्व–जगत को बनाया। इन्सान वही सृष्टिकर्ता को बनाता है। क्या यह सही और धर्म है? जो अरूप–सर्वव्यापी एवं अद्वितीय सर्वशक्तिमान है। उसी की एकाधिक मूर्तियां बनाकर पूजा करना धर्म है? जो ब्रह्म (सृष्टिकर्ता/ईश्वर) पीने के लिये पानी, खाने के लिये नाना प्रकार के अनाज, फल, मूल आदि दान किया है। क्या वही दान की हुई वस्तुओं में से थोड़ा सादाता ही को दान करना उपासना है? जिस दाता ने समग्र सृष्टि जगत के खाने पीने का आयोजन किया है। क्या आपको दिये गये उपहार की उनके पास कमी है?

आप ने ईश्वर का आदेश–निषेध कुछ नहीं माना, केवल देव–देवी जागरण अनुष्ठान बड़ी धूमधाम को पहुंचा हुआ है। क्या यह आचरण में ईश्वर आप पर तुष्ट है क्या यह आचरण ईश्वर तक पहुंच पाता है?

वर्तमान समय वैदिक धर्माचरण जिस अवस्था में पहुंचा हुआ है। क्या यह आचरण ईश्वर तक पहुंच पाता है?

ध्यान–धारणा, जपादि उपासना जिस प्रकार अवस्था में है। क्या इस प्रकार उपासना आपको स्वर्ग दान करा सकता है?

पं. विष्णुदासः– क्या बतायें, पण्डित जी! आपसे बात करके यह तो जरूर मालूम हुआ कि हम सब वैदिक ध र्म को बहुत दूर छोड़ करके गलत रास्ते में चल पड़े है।

पं. हरदयालः– शादी के विषय में सतीदाह एवं विधवा होना, यह कौन सा वैदिक धर्म है? वर्तमान काल में सतीदाह प्रायः बंद हो गया है। लेकिन पहले की बात सोचिए एक जीवंत नारी को आग में जला कर कौन सा धर्म कार्य किया? आप इसको धर्म कहते हैं?

नारी विधवा होकर तो इतना पापी नहीं हो गयी कि जिंदगी की तमाम खुशियां ही छीन ली जायें? किसी को सारी जिंदगी की तमाम खुशिया छीन लेना धर्म है?

मृतक शरीर को जलाने में शरीर सम्पूर्ण नंगा हो जाता है। उसे तो

लकड़ी द्वारा मारने के साथ खोंचा भी लगाया जाता है। क्या यह ही मृतक शरीर का सम्मान करना है?

युवती कन्या या वधू को भी मृतक के जलाने के समय नंगा हो जाना या नंगा कर देना मृतक का सम्मान है?

पं. विष्णुदासः– पण्डित जी बस करें, मुझे तो रोना आ जाता है। धर्म के नाम पर यह कितना अधर्म हो गया है और हो रहा है।

पं. हरदयालः– अब आप ही बताइए मैंने कौन से वैदिक सनातन धर्म को छोड़ दिया?

पं.विष्णुदासः– पण्डित जी! मैं समझ गया आपने क्या छोड़ा और क्या पकड़ा है। हमें भी थोड़ा सोचने के लिये समय दीजिए। मैं भी शीघ्र ही निर्णय करूंगा। अब जाने की अनुमति दीजिये।

पं. हरदयालः– सृष्टिकर्ता करूणामय तुमको सद्बुद्धि दान करें।

पण्डित विष्णुदास जी तो पण्डित हरदयाल जी से विदाई लेकर चल दिये, मगर कुछ ब्राहमण लोग जो कि एकत्र होकर सोच–विचार कर रहे थे, कि दोनों पण्डितों में विवाद का क्या फल हो सकता है? पण्डित विष्णुदास जी को देखकर सभी लोग दौड़ कर आये और पूछा कि, पण्डित जी क्या है? आपको बड़ा चिन्तायुक्त अनमना देखा जाता है। क्या पण्डित हरदयाल जी ने अपने को गलत स्वीकार किया या नहीं?

लेकिन पण्डित विष्णुदास जी ने केवल इतना ही कहा कि 'पण्डित हरदयाल जी गलत नहीं है'। इतनी बात कह कर विष्णुदास जी चल दिये। मगर लोग आश्यर्चचकित होकर रह गये।

इसके बाद १/२ दिन तक विष्णुद ास जी घर से निकले भी नहीं, किसी से मुलाकात भी नहीं किया। तीसरे दिन पण्डित विष्णुदास जी अपनी स्त्री के साथ हरदयाल जी के पास जाकर कहा–

पं. विष्णुदासः– हरदयाल जी आप हमें इस्लाम में दीक्षा दीजिए (इस्लाम में दाखला कर लीजिए) मैंने बहुत सोच–विचार किया। बाद में यह निर्णय लिया कि जिन्दगी भर सोचते हैं, कि मैंने तो वैदिक आचरण करके महापुण्य जमा किया है, जब कि मरने के बाद समझा जायेगा, यह कोई भी आचरण शुद्ध वैदिक नहीं है, तब क्या होगा? कहां से पुण्य प्राप्त होगा?

पं. हरदयालः– सृष्टिकर्ता की लाखों प्रशंसा है जिसने आपको सत्य समझने के लिये ज्ञान प्रदान किया। इसके बाद पण्डित विष्णुदास जी ने अपनी पत्नी के साथ इस्लाम धर्म स्वीकार कर लिया और बाद में जो घटना घटी है, वह तो बड़ी लम्बी बात है, जिसके विषय मशें फिर कभी विस्तारपूर्वक प्रस्तुत किया जाएगा।

अअ़माल की कसौटी

हममें का हर शख़्स कल्मे में कहता है कि मैं गवाही देता हूं कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और गवाही देता हूं कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम अल्लाह के बन्दे और उसके रसूल हैं। हर नमाज़ में अत्तहीयात में इसका पढ़ना ज़रूरी है क़ुरआन मजीद में हुक्म दिया गया कि "रसूल तुमको जिस काम की आज्ञा दें वह करो और जिससे रोक दें उससे रुक जाओ।" अतः दीन का काम वही है जिसे अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने बताया और सहाब–ए–किराम ने उसे अपनाया और अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने जो कुछ बताया वह क़ुरआन मजीद में है या हदीस शरीफ़ में है या सहाबा के अ़मल में हैं या इमामों की व्याख्या में है या मुअ़तबर सूफ़ियाए किराम के कथनों में है तब ही मुसलमान क़ुरआने मजीद, हदीस शरीफ़ और फिक़्ह की किताबें नहीं समझ सकता। अतः ऐसे शख़्स को किसी मुअ़तबर आ़लिम का कहना मानना पड़ेगा, अलबत्ता जब दो आ़लिम दो तरह की बात बताएं तो आप उन से हवाला पूछें कि यह बात क़ुरआन, हदीस, अअ़माले सहाबा या २०० वर्ष पहले फ़िक़्ह की किताब में या सय्यिदुना अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी, शिहाबुद्दीन सुहरवर्दी, ख़्वाजा बहाउद्दीन नक़्शबन्दी, ख़्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती की किसी किताब में हो तो उसका हवाला दें। अगर हवाला दे दें तो बात मान लें वरना उससे बचें। याद रखें कल्मा, नमाज़, रोज़ा, ज़कात, हज्ज, ईमान मुफ़स्सल व मुजमल, तरीक़–ए–निकाह और हलाल व हराम जीविकाओं में कोई मतभेद नहीं है बस इनको मज़बूती से पकड़ें मतभेद वाले कामों का अगर पता लगा सकें कि वह हमारे हुज़ूर (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) के बताए हुए हैं तो अपनाएं वरना उनसे दूर रहें।

अल्लाह तआ़ला हम सबको अपनी ज़ात व सिफ़ात पर ईमान और अपनी महब्बत अ़ता फ़रमाए और अपने प्रिय नबी हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर पक्का ईमान उनसे सच्चा प्रेम और उनकी पैरवी की तौफ़ीक़ दें। आमीन।

(पृष्ठ १६ का शेष)

को शरमिन्दगी होगी और वह भी खाने से हाथ रोक लेंगे। हो सकता है कि उन्हें खाने की जरूरत हो।"

खुद सरवरे काइनात (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के बारे में हजरत जअ़फर बिन मुहम्मद (रजि०) का बयान है, हुजूर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) जब दूसरों के साथ खाना खाते तो सब के बाद खाने से हाथ रोकते (मिश्कात शरीफ)

इन हदीसों से निम्नलिखित उसूल (सिद्धान्त) हमारे सामने आते हैं–

१. जब दस्तर खुवान बिछ जाए तो खाना छोड़ कर दस्तर खुवान से न उठो।

२. जब तक सब खाने से फारिग न हो जाएं, खाने से हाथ न रोको हो सकता है दूसरों की भूक अभी बाकी हो और तुम्हारे रूक जाने से वह भी हाथ रोक लें और भूके रह जाएं।

३. अगर आप को कोई मजबूरी है तो उज़्र पेश करें।

एक जगह खाने की बरकतें

हज़रात सहाबा से अल्लाह राजी हो, फरमाया करते थे, खाने पर इकट्ठा होना मकारिमे अख़लाक़ (सद्व्यवहार) में से है, हज़रत वहशी बिन हरब रज़ि० की रवायत है कि हुजूर रसूल करीम (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के असहाब ने अर्ज़ किया "या रसूलुल्लाह! हम खाते हैं और सैर (आसूदा) नहीं होते।" आपने इरशाद फरमाया "शायद तुम अलग अलग खाते हो? उन्होंने अर्ज़ किया, जी हां।" इस पर हुजूर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया : तुम एक जगह खाना खाया करो, इससे तुम्हारे लिये बरकत होगी।" इस खैर बरकत का मुज़ाहरा (प्रदर्शन) और अमली सुबूत यह है कि हमेशा दो आदमियों का खाना तीन को और तीन का खाना चार को पूरा हो जाता है और कोई भी भूखा नहीं रहता, इसके विपरीत अगर यह लोग वही खाना अलग, अलग खाएं तो किसी का पेट भर जाएगा (बल्कि हो सकता है कि दो चार लुकमे बच भी जाएं जो किसी के काम न आएंगे) और कोई भूका रह जाएगा, क्योंकि हर एक की खुराक और रफतार बराबर नही होती यह खैर व बरकत की माद्दी तौजीह (भौतिक ब्याख्या) है, रूहानी फाइदों की कोई गिनती नही।

हजरत रसूले करीम (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) फरमाते हैं – "बेहतरीन खाना वह है जिसमें जियादह हाथ शरीक हों।"

औंधे मुंह लेट कर न खाओ

हज़रत सालिम जुहरी रजीअल्लाहु अन्हु इस हदीस के रावी हैं –

"हुजूर रसूले खुदा (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने इससे मना फरमाया है – " कि कोई शख्स औंधे मुंह लेट कर खाना न खाए।"

बज़ाहिर इस इरशाद नबवी का तअल्लुक न दीन के अक़ाएद से है न अरकाने इस्लाम और अजज़ाए दीन (दीन का अंश) से – यह खालिस तिब्बी मसअला है और उस पर अमल करना शारीरिक स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से जरूरी, औंधे मुंह लेट कर खाना, पीना न सिर्फ तहजीब के खिलाफ है और जानवरों की सी हरकत है बल्कि हाज़िमे और निज़ामे हज्म (पाचन व्यवस्था) के लिए भी बहुत नुकसानदह है हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसललम की तालीम रूह और जिस्म दोनों के लिए थी, चुनांचि तिब्बी मसाइल भी आपकी तालीम का हिस्सा हैं।

इस्लाम सिर्फ चन्द अक़ाइद का नाम नही है। और इस्लामी तालीमात का तअल्लुक सिर्फ मज़हबी इबादत और ज़ाहिरी रसूम से नहीं है, बल्कि इस्लाम की तालीम पूरी जिन्दगी पर शामिल है। खत्मुल मुरसलीन (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने ज़िन्दगी के हर मआ़मले में रहनुमाई फरमाई है आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) दुनिया की एक बहुत ही असभ्य पिछड़ी और शिक्षा से वंचित कौम में अल्लाह की तरफ से भेजे गए, आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) खुद उम्मी (अनपढ़) थे, लेकिन वही इलाही के ज़रिये इल्म व हिकमत के वह ख़जाने अता फरमाए जो बड़े बड़े विद्वानों और विज्ञानों की दस्तरस (पहुंच) से बाहर थे, अल्लाह हमें हुजूर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के नक्शे कदम (पद चिन्हों) पर चलने की

(पृष्ठ ४० का शेष)

टिब्बे सहारा के मरूस्थल की तरह के नहीं बल्कि अंटार्कटिका में पाये जाने वाले टिब्बों जैसे हो सकते हैं।

हर पांचवा अंग्रेज गरीबी रेखा के नीचे

ब्रिटेन की आबादी का पांचवां भाग यानी ऐसे युवा गरीबी रेखा के नीचे जीवन व्यतीत कर रहे हैं जिनमें अधिकतर की उम्र काम करने की है। गरीब लोगों की मदद के लिए कार्यरत संस्था एलिजाबेथे फिनकेअर की मुख्य कार्यकारी अधिकारी जोनाथन वेल्फेयर ने बताया कि दुनिया की सबसे बड़ी चौड़ी अर्थव्यवस्था की खुशहाली के बीच उसकी आबादी का २० प्रतिशत भाग यानी सवा करोड़ लोग अभी भी गरीबी रेखा के नीचे जीवन यापन कर रहे हैं। इनमें भी ८८ लाख वयस्क हैं। तकरीबन ३६ लाख लोग ऐसे हैं जिनकी काम करने की उम्र है लेकिन वे गरीबी रेखा से नीचे गुजर बसर कर रहे हैं। इनमें से तीन लाख लोग ऐसे हैं जो १९९६–९७ से गरीबी रेखा के नीचे जीवन बिता रहे हैं और उन पर कोई बच्चे आश्रित नहीं हैं। वेल्फेयर ने कहा कि बच्चों और पेंशन पाने वालों पर सरकार ने काफी ध्यान दिया है।

अन्तर्राष्ट्रीय समाचार

हबीबुल्लाह आज़मी

सऊदी महिलाओं को मतदान करने का अधिकार-

मुस्लिम राजशाही व्यवस्था वाले सऊदी अरब मे महिलाओं को इस वर्ष नवम्बर में पहली बार व्यापारी प्रतिनिधि बनने और चुनने के लिए मतदान में हिस्सा लेने की अनुमति दी गयी है।

जेद्दा ट्रेड एंड इंडस्ट्री चेम्बर के अध्यक्ष घासन अल सुलेमान ने कहा कि सऊदी शासन ने जेद्दा की महिला व्यापारियों को नवम्बर में बोर्ड के १८ सदस्यों के चुनाव में हिस्सा लेने की अनुमति दी है। उन्होंने कहा कि शासन ने महिलाओं को पहली बार इस साल चैंबर के सदस्यों के चुनाव में शामिल होने और मतदान में हिस्सा लेने का अधिकार दिया है। सुलेमान ने कहा कि सऊदी अरब के व्यवसायिक शहर जेद्दा में हालांकि चैंबर के ४० हजार सदस्यों में सिर्फ दस फीसदी महिला सदस्य हैं लेकिन व्यापारी प्रतिनिधियों के चुनाव में उन्हें शामिल किये जाने की अनुमति दिये जाने से वह बहुत खुश है। उन्होंने कहा कि यदि सभी सीटों पर महिला प्रतिनिधि चुनाव लड़ती हैं तो उन्हें इस पर कोई एतराज नहीं होगा।

केवल सोचने ही से काम करने लगा कम्प्यूटर

वह दिन दूर नहीं जब रोजमर्रा के काम आने वाली मशीनों को चलाने के लिए कोई मशक्कत नहीं करनी पड़ेगी यानी आप बिना उंगुलियाँ चलाये कम्प्यूटर पर टाइप कर सकेंगे। आने वाले समय में ऐसी चतुर मशीनें बन जायेंगी जो आपके सोचने भर से चलने लगेंगी।

नासा स्थिति आमेस रिसर्च सेंटर के डा. चक्र जार्गेसन औरं उनके सहयोगी नयूरा इलेक्ट्रिक कम्प्यूटिंग उपकरणों पर काम कर रहे हैं। कुछ ही समय में उन्होंने त्वचा में लगाये गये संवेदकों की मदद से चलने वाले ऐसे उपकरण तैयार कर लिये है जो आपकी सोच को समझने और उसके अनुसार काम करने की काबलियत रखते हैं। मजे की बात यह है कि इन उपकरणों को शुरूआती कामयाबी भी मिल चुकी है।

नासा वैज्ञानिकों ने इन उपकरणों की मदद से उंगुलियां चलाये बिना कम्प्यूटर पर टाइप करने और हाथ लगाये बिना केवल अपने हाथों को हवा में घुमाकर ही विमान को जमीन पर उतारने जैसे जटिल कामों में सफलता हासिल की है। दरअसल वैज्ञानिकों की सोचने मात्र से ही काम करने में काबिल मशीनों की जरूरत इसलिये पड़ी क्योंकि दिन ब दिन तकनीकी उपकरणों का आकार घटता जा रहा है। न्यूरो इलेक्ट्रिक का अर्थ मस्तिष्क से आने वाले उन संकेतों को पकड़ना है जो उस समय पैदा होते है जब आप कुछ करने के बारे में सोचते हैं।

शनि के छल्लों में बदलाव से वैज्ञानिक अचम्भे में

अन्तर्राष्ट्रीय अंतरिक्ष यान कैसिनी ने शनि के छल्लों में बदलाव की सूचना दी है जिससे खगोलशास्त्री हैरत में पड़ गये हैं। गैलीलियो के समय से पिछले २५ सालों में यह एक नाटकीय बदलाव है।

सबसे चौकाने वाली बात यह है कि सन १९८१ में अंतरिक्ष यान वोएजर द्वारा दी गई जानकारी के मुकाबले शनि के सबसे अन्दरूनी छल्ले डी रिंग में कुछ बढ़ोतरी हुई है और यह अपने पहले स्थान से शनि के अन्दरूनी हिस्से की ओर २०० किलोमीटर तक खिसक गया है। वैज्ञानिक यह देख कर हैरान हैं कि इतने कम समय अन्तराल में शनि डी रिंग में परिवर्तन आखिर किस वजा से आ गया। उलझन के साथ यह उम्मीद भी जताई जा रही है कि यह परिवर्तन शनि ग्रह की उम्र के बारे में भी थोड़ा बहुत संकेत दे सकता है। वैज्ञानिकों में शनि और इसके छल्लों को लेकर गहरी दिलचस्पी है क्योंकि वे सूर्य के शुरूआती ढांचे की तरह ही गैस और धूल के चक्र की सूरत जैसी है। जिनका अध्ययन कर इस बात के महत्वपूर्ण संकेत मिल सकते हैं कि किस तरह साढ़े चार अरब वर्ष पूर्व ग्रहों का निर्माण हुआ था। यह पाया गया कि शनि के मुख्य छल्लों एबीसी का निर्माण करने वाले बर्फ के कण उम्मीद के विपरीत काफी धीमी गति से घूम रहे थे।

मंगल पर पानी के आसार

अमेरिका की एक वैज्ञानिक का मानना है कि आने वाले समय में मंगल ग्रह पर अंतरिक्ष यात्रियों को काफी पानी मिल सकेगा क्योंकि यह रेत के टिब्बों (टीलों) में ठोस बर्फ के रूप में मौजूद हैं। अमेरिका में एक खगोल विज्ञान संस्थान की वैज्ञानिक मैरी बुक ने कहा कि मैंने मंगल ग्रह पर रेत के टिब्बों में बर्फ के प्रमाण खोजे हैं जिससे ईधन का उत्पादन किया जा सकता है। उन्होंने कहा वहां पानी की मौजूदगी के अवशेष हैं और ऐसे कुछ नये क्षेत्र हैं जिनके बारे में पहले कोई पता ही नहीं लगा। ये